

**THE BOOK WAS
DRENCHED**

**TEXT FLY WITHIN
THE BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182392

UNIVERSAL
LIBRARY

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर सीरीज

अधूरा उपन्यास

(सामाजिक उपन्यास)

लेखक—

जनार्दन मुक्तिदूत

सर्वोदय साहित्य मन्दिर
दुर्गोबायण रोड, हैदराबाद (दक्षिण).

प्रकाशक—

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई

प्रकाशक—

नाथूराम प्रेमी,
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई ४

पहली बार

सितम्बर, १९५१

मूल्य दो रुपया

मुद्रक—

रघुनाथ दिपाजी देसाई,
न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस,
६, केलेवाड़ी, गिरगाँव, बम्बई नं.

अट्टारहसे चौबीस वर्षके उन युवकोंको जिन्होंने मेरे
जीवनमें आकर उपन्यासकी जालियाँ बुनीं
और जिन्हें मैंने सदा मूर्ख समझा

और

इक्कीस-वर्षीया उस युवतीको जो इस उपन्यास-
कारको भी वज्रमूर्ख समझती है ।

भूमि

‘अधूरा उपन्यास’ नाम भर ही है, वास्तवमें है यह पूरा उपन्यास ।
एक बार पूरा पढ़ जानेसे नामकी सार्थकता प्रकट हो जायगी ।

यह प्रेम-कहानी नहीं है । चाहता भी तो मैं प्रेम कहानी न लिख सकता । वहानियाँ मैंने बहुत लिखी हैं, परन्तु प्रेमकी नहीं । इसके कारण मेरे कई मित्र मुझे नितान्त शुष्क नीरस समझते हैं । उनसे क्या कहूँ ? प्रेमको मैं भी एक स्वर्गीय वस्तु मानता हूँ । वह एक ऐसा अपूर्व मनोभाव है, जो जीवनमें एक मधुर स्वप्नकी तरह कुछ ही समयके लिए आता है और जिस तरह अचानक उदित होता है उसी तरह अस्त भी हो जाता है । मेरी समझमें वह जीवन-भरका रोग नहीं है । उसके लिए सारा जीवन बरबाद कर देना विशुद्ध पागलपन-द्वारा ही संभव हो सकता है । कोई भी नहीं दिमाग़का आदमी ऐसा कार्य नहीं कर सकता । प्रेमके दृटनेपर हृदयमें न दर्द होता है और न दिल ही दृटता है । ये सब कवियोंके चोचले हैं । हृदय रक्त-मांसका बना हुआ वह पिण्ड है जो मनुष्य-शरीरमें प्रवाहित रक्तको स्वच्छ रखता है । निराशा, दुःख-दर्द, सन्ताप आदि हृदयकी नहीं, मनकी विकृतियाँ हैं । मानसिक अवस्थाका शरीरपर बहुत प्रभाव पड़ता है । यदि मानसिक विकृतिमें कोई आत्मघात कर ले, तो उससे प्रेमकी महत्ता कैसे सिद्ध हो जायगी ? लोग जुएमें भी सब कुछ हारकर आत्मघात कर लेते हैं । प्रेमका स्थान बहुत ऊँचा है । क्यों कि वह स्वप्नकी तरह क्षणिक है । जब तक मानव-समाज जीवित है तब तक प्रेमका मूल्य नहीं घटेगा । जैसे मानवको भूख-प्यास लगती है, नींद आती है,

आरामकी चाह होती है, वैसे ही प्रेम भी एक प्राकृतिक आवश्यकता है। इससे उसे सामाजिक उत्तरदायित्वसे मुक्ति नहीं मिल सकती। उसे निरन्तर विकासोन्मुखी मानव-सभ्यताके साथ आगे ही बढ़ते रहना होगा।

पात्रोंके जीवन-विकासमें अन्य स्वाभाविक घटनाओंकी तरह यदि प्रेमके दर्शन भी हो जायें, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। वह समय भी अवश्य आयेगा जब कि सम्पूर्ण विश्वसे जीवनकी विषमतायें दूर हो जायँगी और तबका साहित्यकार निश्चय ही प्रेम-कहानियाँ लिखकर महान् कहलायेगा। फिर कालिदास और शेक्सपियर पैदा होंगे।

इस उपन्यासकी कहानी एक ऐसे नायकको लेकर आगे बढ़ती है जो यौवनमें पदार्पण करते ही अपने भविष्य जीवनका चित्र अपने इच्छा-नुसार बनाना चाहता है। अन्य लाखों युवकोंकी तरह उसकी भी महत्त्वाकांक्षायें हैं, किन्तु उसके आस-पासका वातावरण पूँजीवादसे घिरा हुआ है और समाज उसे मूर्ख समझता है। मानों उसके क्लर्क बन जानेमें ही उसके सफल जीवनकी कुंजी छुपी है और यही शायद जीवनके विकासकी आखिरी मंजिल है। अठारहसे चौबीस वर्षतकके युवकोंको हम मूर्ख समझनेके आदी हैं। यद्यपि इस उम्रमें विचार परिपक्व नहीं होते, परन्तु भावी नागरिकके संस्कार इसी समय पड़ते हैं। इसी उम्रमें एक लेखक या कलाकार ढलता है और अकर्मण्य आदमी भी।

पद्मकान्तका उपन्यासकार शिक्षा और क्लर्की सबसे विद्रोह करता है। उसकी अपनी मजबूरियाँ हैं, दुर्बलतायें हैं, उलझने हैं। वह लोह-मनुष्य नहीं हो सकता। वह कई बार अपने संघर्षमय जीवनसे—समाजसे समझौता करनेकी चेष्टा करता है, पर अन्तमें एक स्वतंत्र मजदूर बनकर ही अपने भरण-पोषणकी समस्याको हल कर लेता है।

वह दर्जी बन जाता है परन्तु जिस वर्गमें वह पैदा हुआ है, उसमें निम्नवर्ग—मजदूर वर्गसे घृणा करनेके संस्कार पड़ गये हैं, और उच्चवर्गमें शामिल होनेकी महत्त्वाकांक्षा प्रबल है। वह एक ओर मजदूरी

करके अपने लिए रोटियाँ पैदा करता है और दूसरी ओर महत्वाकांक्षा-के स्वप्नकी सीढ़ियाँ तय करता है। उसमें वर्ग-चेतना नहीं है परन्तु वह एक वर्गसे घृणा अवश्य करता है। क्यों करता है, यह नहीं जानता। युगकी माँगसे वह भुँह भी नहीं मोड़ सकता और आखिर वह एक भयानक स्वप्नसे जागता है। उसके संघर्षोंके बीच हास्य, रोदन, प्रेम, रोमान्स सब कुल आ जाता है। अन्तमें वह ठोस धरतीपर खड़ा होकर कह सकता है कि मैंने स्वप्नलोकमें विचरनेवाले जीवनके सत्य और सुन्दर पक्षीको पकड़ लिया है।

भाषाके सम्बन्धमें मुझे इतना ही निवेदन करना है कि वह सर्व साधारणके बोलचालमें आनेवाली लोकभाषा है, जिसमें घरू मुहाविरों और कहावतोंका भी उपयोग किया गया है। इसमें प्रयत्नसाध्य सजावट या बनावट नहीं आने पाई है। अपनी अन्य कहानियाँ और नाटक भी मैंने सरल भाषामें ही लिखे हैं।

५ राधोजी रोड, कम्बाला हिल }
बम्बई, २६

—जनार्दन मुक्तिदूत

अधूरा उपन्यास

१

अगर पद्मकान्तने दिलसे नौकरी खोजनेकी कोशिश की होती तो उसे भली या बुरी कोई न कोई तो नौकरी ज़रूर ही मिल जाती। अपने दूसरे साथियोंकी तरह वह भी आगरा या ग्वालियर जा सकता था। पिछले साल उसने तीसरी श्रेणीमें ही सही, मैट्रिक पास कर लिया था। चाहे मैट्रिककी सनदसे उसमें कोई दूसरा काम स्वतन्त्र रूपसे करनेकी योग्यता न भी आई हो पर वह क्लर्क तो आसानीसे हो सकता था। इसी क्लर्कीपर तो उसके हितचिन्तकोंकी आशाये केन्द्रित थीं। लेकिन पद्मकान्तको क्लर्की कतई पसन्द नहीं थी। उसके अपने विचारसे क्लर्क-जीवन आदमीके लिये एक निहायत तंग दायरा है जिसमें ज़िन्दगी कुएँमें बन्द पानीकी तरह ठहर जाती है। एक क्लर्कको अपनी दैनिक जीवनकी आवश्यकताओंको, अपनी महत्वाकांक्षाओंको, संकुचित करना होता है। इसे ज़िन्दगीकी तेज़ रफ़्तार न कहकर जीनेकी 'घिसटन' पुकारना ज़्यादा अच्छा है। वह घिसटना नहीं, जीना चाहता था। इसीलिये तो वह एक सालसे घर बैठा था। उसे अवकाश ही अवकाश था। अपना फ़ालतू समय काटनेके लिये वह अच्छे या घटिया जो भी उपन्यास मिलते पढ़ा करता। वह उपन्यासोंमें डूब कर अपने जीवनका खुरदरापन भूल जाता। लोग उसे कुछ न करते देख मूर्ख कहते और अन्तमें किसीने कुछ कहना ही छोड़ दिया। अब तो वह था और उसके उपन्यास थे। वह दिनभर उपन्यासोंमें डूबा रहता। धीरे धीरे उसके अपने मौलिक विचार सैकड़ों उपन्यासोंके नीचे दबकर लोप हो गये और अब सोचनेके नामपर जो भी उसके पास बचा था वह शुद्ध औपन्यासिक था।

वह स्वयं भी अपनेको उपन्यासके नायकोंकी तरह काल्पनिक घटनाओंकी जालियोंमें बुना करता और उन्हींकी तरह उदास होकर रो पड़ता या हँसने लगता । वह प्रायः सोचा करता कि हर उपन्यासमें एक विशेषता होती है । वह यह कि उसमें एक कहानी होती है चाहे वह दुःखान्त हो या सुखान्त, आखिर होती है । परन्तु उसके अपने जीवनमें कोई कहानी नहीं । वह इस अभावको बढ़ाकर सोचा करता । यह भी कोई कहानी हुई कि पद्मकान्त नामका एक व्यक्ति पैदा हुआ । उसके मा-बाप छोटा छोड़कर मर गये तो मामी-मामाने पाल-पोसकर बड़ा कर दिया । वह पढ़ा लिखा । क्लर्क बना । शादी हुई । बच्चे पैदा किये । बूढ़ा हुआ और मर गया । इसमें जीवनका नाटक नहीं है । काश उसका अपना जीवन भी एक कहानीका रूप धारण कर सकता ! ऐसी कहानी जिसमें जीवनका नाटक हो । वह उपन्यासके कैन्वैसकी तरह अपने जीवनको ज़रा फैलाकर देखनेकी कोशिश करता तो पाता कि उसके जीवनके अन्दर और बाहर दूर दूर तक घोर मरुस्थल ही मरुस्थल है । हर उपन्यासका नायक तो उपन्यासकी धरतीपर उत्पन्न होनेसे पहले ही किसी जानी अनजानी नायिकाका ढेर-सा अनुराग अपने भाग्यमें लिखा लाता है । पद्मकान्तका युवा मन गहरी उदासीमें डूब डूब उठता ।

एक दिन घंटों इसी तरह सोचते रहनेके बाद उसने निश्चय किया कि वह भी एक उपन्यास लिखेगा । शुरू शुरूमें यह भी एक समस्या थी कि उपन्यास आरम्भ कहाँसे हो । बादको उसे महसूस हुआ कि उसका अपना जीवन भी तो एक उपन्यास बन सकता है • अगर वह ज़रा-सी कोशिश करे । उसमें कहानी और फिर नाटक तो अपने आप पैदा हो जायगा । उसने तय किया कि वह अपने जीवनकी दैनिक घटनाओंको ही कलमबद्ध करता जायगा । उसने एक मोटी-सी कापी अपने स्कूलके नोट्सकी कापियोंके खाली बच गये सफ़ोंकी बनाई और उसके पहले सफ़पर खूब सुन्दर लिखनेकी कोशिश करते हुए लिखा—“ पद्मकान्तकी कहानी । ” इस सफ़को उसने फूल और पत्तियाँ बनाकर अपनी समझसे काफ़ी सुन्दर और आकर्षक बनानेमें कोई कसर न रक्खी । इस तरह उसके उपन्यासकी नींव पड़ गई ।

पद्मकान्तके लिये मामी-मामा ही मा-बापके स्थान पर थे । मामीने उसे ठीक

अपने गर्भके बच्चेकी तरह पाला और मामाने ठीक एक बापकी तरह उसे पढ़ा लिखाकर आदमी बनानेमें कोई कसर न छोड़ी थी। पञ्चकान्त भी जानता था कि अब उसके मामाको पेंशन मिलनेमें ज्यादा दिन नहीं हैं। समय तो कभीका पूरा हो चुका है। रियासतकी पोलमें एक आधा वर्ष और धक जाये, यह दूसरी बात है। पञ्चकान्तके लिए पेंशनकी विभीषिका सचमुच भयानक थी। इसका अर्थ होगा आधी तनख्वाह और ऊपरी आमदनीका एक दम बन्द हो जाना। फिर तो घरकी स्थिति और भी अधिक बिगड़ जायगी। इन दिनों भी स्थिति अच्छी न थी। खींचातानीसे ही गुज़र होती थी। अगर ऐसा न होता तो पञ्चकान्तने ऊँचे दर्जेकी क्लर्कीके लिये कोई डिग्री ज़रूर ले ली होती। पढ़ाईके नामपर मैट्रिकके बाद ही फुल-स्टाप क्यों लगता ?

पञ्चकान्तकी एक वर्षकी निष्क्रियताने उसके मामाको यह सोचनेपर मजबूर कर दिया कि उससे सहारा पानेकी आशा करना एकदम निराधार है। उन्हें सन्तोष था तो यही सोचकर कि अगर उनका अपना बेटा ही नालायक निकल जाता तो क्या करते ! उन्होंने भी अब चुप्पी साध ली थी। पर इस चुप्पीका अर्थ यह नहीं कि उनके दिलमें पञ्चकान्तके लिये जगह न रही हो। वह उसे अब भी पहले ही जैसा चाहते थे।

यों भी इस छोटी रियासत धौलपुरमें पञ्चकान्तकी कहानीके अनुसार बेकारोंकी संख्या कम न थी, फिर ज्यों ज्यों हाईस्कूलकी फैक्टरी हर वर्ष ढेर सारे क्लर्क ढालकर तैयार करती जाती, यह संख्या और भी बढ़ती जाती। रियासतके संकुचित क्षेत्रमें सभी पढ़े लिखे युवकोंको काम मिल जाना कठिन था। इसी लिये पञ्चकान्तका बेकार रहना कोई महत्त्वका विषय न होते हुए भी उसके लिये तो महत्त्वपूर्ण ही था। क्यों कि इस बेकारीने ही उसे उपन्यास लिखने जैसी खुराफ़ातमें डाला। पञ्चकान्त हर बार क्लर्कसे जान-बूझकर इसलिये और कतरा जाता कि उसे क्लर्कसे ज्यादा उपन्यासके नायक जैसा महत्त्वपूर्ण आदमी बननेकी लालसा थी। यही तो असली कशमकश थी।

और दूसरी छोटी देशी रियासतोंकी तरह धौलपुरमें भी उद्योग-धन्धोंकी कमी इसलिये और भी थी कि रियासतको प्रजाके लिये उद्योग-धन्धे खोलकर खुद अपने पाँवपर कुल्हाड़ी नहीं मारनी थी। जहाँ उद्योग-धन्धे

होते हैं वहाँकी प्रजामें जागृति फैलती है और वह राजाको श्रीमन्त या अपना स्वामी माननेको कभी तैयार नहीं होती। और न रियासतको ही दस रुपयेमें ढ़क और पाँच रुपयेमें सिपाही मिलता है। फिर शहरका बेकार चाहे भूखा ही क्यों न मरे खेती-पाती करनेकी बात कभी न सोचेगा, चाहे वह शहर बड़ा हो या छोटा। शहर दरअसल कहते ही उसे हैं जहाँ खेतोंके स्थानपर बाज़ार और फैक्टरी बनती हैं और हर अदमी मज़दूर या बावू बनना पसन्द करता है।

जिस समय पद्मकान्तने अपनी कहानी लिखी उस समय वहाँके निवासियोंका मुख्य उद्यम रियासतकी नौकरी था, जिसका औसत चार रुपये मासिकसे अधिक न था। फिर भी गुज़र हो जाती थी। जो कसर रह जाती थी वह ऊपरी आमदनीसे—उसे रिश्वत तो कोई कहता ही न था—पूरी हो जाती थी। गो दूसरा महायुद्ध आरम्भ हो गया था और मँहगाई दिन ब दिन बढ़ती जा रही थी फिर भी वेतनमें कोई वृद्धि नहीं की गई थी। रियासतकी नौकरीमें किस किसको खपाया जा सकता था इसलिये ज्यादातर युवकोंको निराश होना पड़ता और आगरा या ग्वालियर भागना पड़ता था। जो लोग थोड़े बहुत दिन भी बेकारीसे सवर्ण करते उन्हें ढ़कीं न मिलकर उसीके जोड़की दूसरी नौकरी अवश्य मिल जाती थी। लेकिन असली अर्थोंमें थी वह भी ढ़कीं ही। कुछ लोग अस्पतालमें कम्पाउन्डर, छोटी लाइन (स्टेट रेल्वे) में एग्जेंटिस, बिजली-घरमें मिस्त्री या पटवारी हो जाते। बाकी युवक जिनकी महत्वाकाँक्षाएँ रियासतकी नौकरीसे ऊपर उड़ाने भरतीं वे जी० आई० पी० रेल्वेकी उम्मीदवारीके लिये भटकते फिरते। रेल्वे ही ऐसा महकमा है जहाँ चन्द एग्ज्यूक्यूटिव ओहदोंको छोड़कर सब जगह मैट्रिक पास आदमी कामका समझा जाता है।

गर्मियोंकी लुट्टी अभी एक महीनेकी और शेष थी। इसलिये पद्मकान्तको कुछ पुराने सहपाठी मिल जाते और पद्मकान्तका जो समय उपन्यास लिखने या पढ़नेसे बचता उसका अगर सदुपयोग न हो पाता तो क्या हुआ हत्या तो इन अठारह या इसके आसपासकी उम्रवाले लड़कों द्वारा सम्भव थी।

ये लोग अक्सर सुबह ही खा पीकर चम्बल नदीपर चले जाते। दिनभर

मछलीके शिकारकी आशमें नावोंमें बैठे रहते। सभी मल्लाहोंसे पहचान तो थी ही, साथ ही ये लोग अकसर उनके लिये शहरसे बीड़ी या खानेकी तम्बाकू ले जाते। इस वजहसे अकसर मल्लाह भी जब उन्हें कोई काम न होता इस दलको मछली मिलनेकी अच्छी जगहोंपर ले जाते।

दिन-भरकी पकड़ी मछलियोंको ये लोग आपसमें बाँट लेते और सूरज डूबते डूबते घर पहुँच जाया करते। शहर तीन मील दूर था। मुहल्लेके लोग इस दलको सिवाय आवारा समझनेके और कुछ न समझते किन्तु इसकी किसीको पारवाह न थी।

पद्मकान्त रास्ता चलते अपने उपन्यासमें खोया-सा चलता। काश दुनियाका हर आदमी उसके साथियोंकी तरह जरूरतकी जिनसका इसी तरह बटवारा करे तो तो एक आदमी महलमें क्यों रहे और दूसरा सड़कपर बैठा भीख क्यों माँगे? घर आकर जब वह मछलियाँ मामीको देता तब उसकी बूढ़ी मामी उसकी बलैयाँ जरूर उतारती।

पद्मकान्तके मामाका पूरा नाम था मुन्शी रमाचरण। रियासतमें महकमा आबकारीमें बीस रुपयेके अहलमद थे। आदतें केवल अहलमद होनेपर भी निहायत रईसानी थीं। उम्र तर्करीबन पचपन होगी। रोज़ देशी शराब (ठर्रा) का कमसे कम एक अब्दा हज़म कर जाते और फिर पड़ौसके बाबू रामलालके साथ गप्पें हाँका करते। अकसर रातका खाना दोनों साथ ही खाते। बीच-बीचमें वह पद्मकान्तकी तारीफ़ भी करते जाते। खास तौर पर जब थालीमें भुनी हुई गर्म गर्म बाम रोहू या सौर मछली होती। पुरानी रईसीके चिट्ठे खुलते। वह भी दफ़्तरसे लौटते वक्त कलारीसे दो चार चुस्की लगाते हुए ही आते थे। दोनों पुराने और घनिष्ठ मित्र थे। रामलाल बाबू कस्टममें मुन्शी थे। कुछ ऊपरी आमदनी हो जाती, वही शराब या मर्दाने शौककी भेंट कर दिया करते।

शराबी आदमी शराब पीनेके बाद जरूरतसे ज्यादा बातें करता है या कहिए झूठ बोलता है या गप्पें हाँकता है। रामलाल बाबू कहा करते कि उनके पिताने शराब और यारवाशीमें चौदह गाँव जो कुल मिलकियतके रूपमें थे बेच

दिये थे । यह बातें जो सैकड़ों दफा शराबके नशेमें कही जाती थीं कभी पुरानी न पड़तीं । रामलाल बाबूकी दलील थी कि जिसके पास होगा नहीं वह स्वर्न क्या खाक करेगा !

उसी अन्दाजमें मुन्शी रमाचरण अपनी तारीफ़ करनेको व्याकुल हो जाते और कहते—“ वह दिन भी याद है जब दरवाजेपर हाथी शूमते थे । कहिये, विधाता ही वाम हो गया कि हमारे घरमें सात बुआओंका जन्म हुआ । उनकी शादियोंमें बावाने एक एक गाँव और दस दस हजार रुपया दहेजमें दिया । क्या शान थी ! आखिर राजा थे बिना छत्रके । कोई दरवाजेसे लौटकर नहीं गया । जिसने जो माँगा वह पाया । मुसाहिबोंको बड़े बड़े इनाम दिये जाते थे । रोज़ ही महफ़िलें जमी रहतीं । एकसे एक मशहूर तवायफ़का मुजरा होता । बढ़ियासे बढ़िया शराबें खींची जातीं । लबे लड़ानेका तो उन्हें बेहद शौक था । एक एक बाजी हजार हजार रुपयेसे कम नहीं होती थी । ”

बीचहीमें टोकनेकी आदत रामलालकी पुरानी थी । इसलिये वह बोल उठते, अजी रायसाहब वह ज़माने गये जब खलील खाँ फ़ाक्ताएँ उड़ाया करते थे । अब तो यह सोचनेकी बात है कि पदमके लिये क्या कर रहे हो ?

आज न तो पद्मकान्त वाम रोहू या सौर मछली ही लाया था और न किसी दूसरी किस्मकी मछली ही थालीमें थी । इस लिये न तो पद्मकान्तकी मामी द्वारा बलैयाँ ही ली गई थीं और न इन दोनों बूढ़े शराबियोंकी मजलिस-ए-खासमें उसकी तारीफ़के पुल ही बाँधे गये थे । रमाचरणका नशा भी कुछ किरकिरा-सा हो रहा था । वह कुछ न कह सके । उन्होंने ज़रा गौरसे बाबू रामलालकी तरफ़ देखा । “ तो फिर पद्मके लिये क्या सोचा है ? ” बाबू रामलाल दुबारा प्रश्नके उत्तरकी आशामें मुँह ताकने लगे । मज़बूरन उन्हें जवाब देना ही पड़ा । वह तो पहलेसे ही टूटी थालीमें धरी उर्दकी दाल और तोरईकी भाजीको कोस रहे थे । कहने लगे ” नालायक है, क्या काम कर सकेगा वह ! ” बाबू रामलाल बोले “ वाह ! यह भी खूब कहा । कहो तो कस्टममें या अपने यहाँ आबकारीमें ही चिपकवा दो । अलबत्ता अभी ९ या १० रुपयेसे ज्यादा तो क्या मिलेंगे । हाँ, आमदनीकी जगह तो दोनों ही हैं । ” रमाचरणने कुछ और गंभीर होकर कहा “ लेकिन उसे जब

नौकरी करनी हो। अजी एक दिन मुझे उसकी कापी नज़र पड़ गई। उसने अपनी कहानी लिखने शुरू की है।” बाबू रामलालको पञ्चकान्तमें कुछ दिलचस्पी पैदा हुई। यह दिलचस्पी ऐसी ही थी जैसी कि आमतौरपर बुजुर्ग कच्ची उम्रके लड़कोंकी हरकतपर जाहिर करते हैं। “क्या लिखा है उस कहानीमें?” बाबू रामलाल पूछने लगे। “लिखेगा क्या” चटनी चाटते हुए मुन्शी रमाचरण बोले—“लिखा है कि मेरा पालन-पोषण ऐसे परिवारमें हुआ है जिसमें ज़िन्दगीका अर्थ कुछ भी नहीं, सिर्फ़ मर जाना है। मेरे शराबी...” इसपर बाबू रामलाल चौंके “क्या लिखा है आप शराबी—यानी—मैं भी शराबी। वाकई नालायक है। हाँ, और—?” मुन्शी रमाचरण एक साँसमें कह गये “मेरे शराबी मामाको रिश्ततके आगे सोचनेकी फुर्सत ही नहीं है कि दुनिया तेज़ीसे कहाँ बढ़ी जा रही है।”

यह सच है कि यह दोनों बूढ़े शराबी मुहल्लेमें काफी बदनाम हैं। पर कोई मुँहपर चूँ नहीं कर सकता। शायद बुजुर्गीका लिहाज़ हो या उनके पदोंकी मर्यादा। कस्टम और आवश्यकताओंसे लोग बिगाड़ना ज़रा कम पसन्द करते हैं। बाबू रामलालने अपने ऊपरके आरोपोंको भूलकर कहा—“अजी, जो भूखा मरे वह उपन्यास लिखे। हम तो उसे आदमी बनायेंगे।” दूसरे शब्दोंमें पञ्चकान्तको बाबू बना देना उसे आदमी बना देना था। दोनोंने हामी भरी और फिर वे इसी धुनमें मातृ-पितृ-हीन पञ्चकान्तका भाग्यविधान बनाने बैठे। आखिरकार यह तय हुआ कि अगर वह चाहे तो बम्बई ही चला जाये। क्योंकि रामलाल बाबूके एक दूरके बहनोई जहाज़-कम्पनीमें बाबू हैं, इसलिये पञ्चकान्तको उनसे बहुत मदद मिल जायगी। यह जहाज़वाले बहनोई काफी अच्छी हैसियतके आदमी समझे जाते थे। पूरे दो सौ तनखाह मिलती थी और भत्ते अलग। रियासतमें प्राईवेट सेक्रेटरीको भी इतनी तनखाह मुश्किलसे मिलती थी।

दूसरे दिन सन्ध्या समय पञ्चकान्त दरवाज़ेके नीमके नीचे चारपाई डाले पड़ा था। वह जानता था कि मामीको सन्ध्या समय लेटना बहुत ही नापसन्द है। इधर कई दिनोंसे वह मछली मारने भी नहीं जाता। उसके उपन्यासके ताने-बाने अब कोई शक्ल अख्तियार करनेवाले थे। सूरजके डूबनेकी बेलामें

नीमके फूलोंके गुच्छे हवाके झोकोसे उसपर रह रह कर गिरते थे जिनकी भीनी खुशबू उसे अजीब-सा सन्तोष दे रही थी। उसने सोचा, बम्बई या और दूसरे शहरमें यह सुख असम्भव है। और वह उपन्यासकी भूमिकाकी तरह सोचता गया। यह दूर दूर तक बिखरे रेतके मैदान, यह टूटा-फूटा ही सही अपना कहा जानेवाला घर, यह बूढ़ी स्नेहमयी माकी तरह मामी, यह बूढ़े शराबी पर प्यार करनेवाले मामा—लंगोटिया कन्हैया, मंगल, वीरेन्द्र, यह सब क्या शहरमें मिलेंगे ? सबसे अधिक तो प्यारी हैं उसे रामलाल बाबूकी दो वर्षीया लड़की छटंकी, वह तुतला कर 'पम' कहती है। शायद अपनी समझमें वह ठीक कह रही हो पर मुननेवालोंको 'पम' 'पम' के सिवा और कुछ मुननेको न मिलेगा। सोचते सोचते पद्मकान्तको लगा कि वह उपन्यासकी थीमसे बहुत दूर जा रहा है। इसलिये वह अपने विचारके पूर्व केन्द्रपर लौट आया—वह मातृभूमि छोड़कर न जायगा।

पद्मकान्तने सिरहाने रखा हुआ तौलिया उठाया और कुएँकी तरफ नहानेके लिये चल दिया। 'शामको नहाना जेठकी सड़ी गर्मियोंमें किस कदर आवश्यक है' यह सोचता हुआ वह कुएँकी तरफ चला जा रहा था। अब पद्मकान्तकी हर विचारधारामें कारणकी खोज रहने लगी। पद्मकान्त जब रामलाल बाबूके दरवाजेके पाससे गुज़रा तो रास्तेमें छटंकी उसे धूलमें खेलती हुई मिल गई। पद्मकान्तने छटंकीको गोदमें उठा लिया और कुएँपर चला गया। खुद नहाया और छटंकीको नहलाया।

जब कि वह छटंकीको लेकर चला तो उसे ऐसा लगा कि उसमें पितृत्व उमड़ रहा है और वह फिर सोचने लगा 'कभी वह भी एक लड़कीका बाप होगा। वह लड़की छटंकी जैसी ही होगी।' उसने पितृत्वकी गहरी और व्याकुल भावनासे छटंकीको जी भर प्यार किया। रास्तेमें हलवाईकी दूकान पड़ती थी। वहाँ वह रुका, जलेबी लीं और छटंकीके हाथमें पकड़ा दीं। छटंकी खाने लगी और अधसूखे जलेबीके शीरेसे उसका कुर्त्ता भी सानती गई।

जब पद्मकान्त रामलाल बाबूके यहाँ पहुँचा तब सन्ध्या काफ़ी घनी हो गई थी। पासके मन्दिरोंसे घंटियों और मृदंगोंकी आवाज़ आ रही थी। पद्मकान्तने छटंकीको उसकी माकी गोदमें देते हुए बड़ी सरलतासे कहा

“मामी, तुम्हारी छटंकी मुझे बहुत प्यारी लगती है।” छटंकीकी माने सरपर खोती सरकाते हुए कहा—“तो तुम्हीं लें लो न इसे पदम। पालना और ब्याह कर देना। हम लोग भी शादीके खर्चसे बच जायेंगे।” पद्मकान्त छटंकीकी मासे ननसालके रिश्तेसे मामी ही कहता था। यह रामलालकी चौथी पत्नी थीं। रामलाल बाबूने क्रमसे तीन ब्याह किये पर दुर्भाग्यसे कोई ज्यादा दिन तक न रही। रामलाल बाबूकी सन्तान-कामना अधूरी रह गई। ज्योतिषीके कहे अनुसार वह आज भी अपनेको ‘मंगला’ माननेको तैयार न थे। पंडितोंका कहना था कि अगर वह मंगलको शान्त कर सकें तो सम्भव है कि दाम्पत्य सुख प्राप्त हो सके। पर मंगलको शान्त करनेमें चार पाँच सौका खर्च था। शराबके आदी रामलाल बाबूने शराबके लिये हजारों फूँके पर मंगल शान्त करनेको उनके पास एक तो पैसे न थे और अगर थे भी तो उतने ही जितनेमें रोज़ शराब का खर्च पूरा हो सके। उन्होंने पंडितोंकी बातोंको ढकोसला कहकर टाल दिया। इन्हें वह वदायूँसे ब्याह लाये थे। छटंकीकी माकी उम्र २४ के लगभग थी जब कि रामलाल बाबू ४५ वाँ पार कर रहे थे। गरीबकी बेटी और उसपर पितृहीन, उसका भला चाहनेवाली मा तकने गरीबी और समाजसे डरकर ४५ सालके बूढ़ेको अपना दामाद बना लिया। पद्मकान्तने हँसते हुए कहा—“सो तो ठीक है मामी, पर अभी मैं कमाता कहाँ हूँ ?” छटंकीकी मा बोली—“तो नौकर भी हाँ जाओगे। इतवारको लश्कर जा रहे हो न ? मिलमें कहते हैं नौकरी मिल जाती है ?” पद्मकान्तने उदासीसे कहा “हाँ मामी, सोचता तो हूँ पर जी नहीं करता तुम लोगोंको छोड़कर जानेको। मुझसे मिल सिलमें काम नहीं होगा।” छटंकीकी माने सहानुभूतिसे कहा “तुम क्या लड़की हो पदम ? फिर लश्कर है कितनी दूर। एक घण्टेमें सुनते हैं गाड़ी आ जाती है ?”

पद्मकान्त खिन्न-सा चला आया। पद्मकान्त अपना भविष्य सोचने लगा। उसका उपन्यासकार उसके पास आकर पड़्यन्त्र करने लगा। वह सोचता रहा—‘यह मेरी मातृभूमि है। न यहाँ मिले हैं और न दूसरे उद्योग धन्धे। क्यों नहीं यहाँ मिलें, बड़ी बड़ी फैक्टरियाँ, खुलती ? क्या रियासतकी सरकार अपनी प्रजाके लिये यह सब नहीं करना चाहती ? या सरकारकी खजानेमें इतना

धन नहीं है ? लाखों रुपये वायसरायके एक मुआयनेमें खर्च हो जाते हैं वहाँ जनताको दो चार कारखाने खोल कर रोटी देनेमें हिचकिचाहट क्यों है ? या सरकारी अफसर यह नहीं जानते कि उनकी इस नीतिसे धीरे धीरे रियासत उजाड़ हो रही है । नौजवान दूसरी बड़ी रियासतों या शहरोंमें बसते जा रहे हैं । अगर यही क्रम रहा तो सिवाय गिने चुने काश्तकार और नौकरीपेशा लोगोंके अतिरिक्त यहाँ कोई न रह जायगा । विद्रोहकी भावना धीरे धीरे सपनोंमें विंध गई । वह सो गया । हाँ सचमुच । रामलाल और रमाचरण बड़ी रात गये तक मुरादाबादी फ़र्शी हुक्केके क़शोंके सहारे महफ़िल जमाये बैठे रहे ।

दो चार दिन बाद पद्मकान्तको अपना पूर्व निश्चय बदल ही डालना पड़ा । उसने महसूस किया कि यहाँकी साधन-हीनताके कारण उसे बाहर जाना ही पड़ेगा और वह एक तरह तैयार भी हो गया ।

पद्मकान्तने इन घटनाओंको अपनी कहानीमें दर्ज कर दिया । इस तरह उपन्यासका पहला परिच्छेद पूरा हुआ ।

२

जीवाजीराव सिन्धिया कॉटन मिल्समें कुछ क्लर्कोंकी जगह खाली हुई थीं । पद्मकान्तके चचेरे भाई सुन्दर बाबूने बहुत जोर देकर रमाचरणसे कहा कि अगर वह पद्मकान्तको ग्वालियर भेज दें तो उम्मीद है मिलमें जगह मिल जाये । पद्मकान्तसे वह दफ़्तर जाते जाते कहते गये कि राजो अपने ताऊजीके पास ग्वालियर जा रही है, वह उसीके साथ चला जाय । राजोके लिये उसके दिलमें कोई स्थान न था । यों उसके नज़दीक न तो राजो कोई ग़ैर थी और न कोई ख़ास बुराई ही उसमें दिखती थी । फिर भी राजोके नाज़ उठानेकी ताक़त उसमें न थी । राजो आकाशबेलकी तरह बढ़ती जा रही थी । अब तो राजो एक छोटी औरत मालूम देती थी । पद्मकान्तने ज़रा और दूरतक सोचा—‘ वह क्यों राजोसे खिंचता है ’ । इतनी बड़ी हो गई पर जब बोलती है तो गाते-से स्वरमें—इठला इठला कर । ... प ... ऽ .. द ऽ म ऽ जी ऽ ऽ ... आ ऽ ऽ ग ऽ ये ऽ ऽ ! पद्मको यह इठलाना अच्छा नहीं लगता । इसीलिए

जब भी कभी उसे राजोके यहाँ जाना होता, ऐसा वक्त निकालता कि राजोसे मुलाकात न हो ।

राजो सुन्दर बाबूकी पत्नी ऐंटेवालीकी दूरकी बहन लगती थी । सुन्दरबाबू स्थानीय पी. डब्लू. डी. में ड्राफ्ट्समैन थे और राजोके पिता कन्हैयालाल सिविल जज । राजोकी जिन्दगी एक विलासभरी कामना थी । फिटनमें स्कूल जाती । रहनेको बड़ी कोठी । घरमें चार पाँच नौकर । क्या न था । सब कुछ था । पद्मकान्तके सम्मुख राजो इसी रूपमें आई । और पद्मकान्तका जीवन एक संघर्ष था, जिसे प्रतिपल अपने अस्तित्वके लिये सतर्क रहना पड़ता । मामाके बाद पद्मकान्तको अपने पैरों पर ही खड़ा होना था । पद्मकान्त यह जानता था कि मामा एक आध वर्षसे आगे न चलेंगे । मामाने इतना कुछ पढ़ा दिया है वह ही बहुत काफी है । पद्मकान्तकी पढ़ाई वैसे भी काफी खींचा-तानीसे हुई थी । स्कूल-फीस कभी भारी पड़ी तो कभी पाठ्य-पुस्तकें । मुश्किलसे दो जोड़े कपड़े साल-भरमें बनते, उसीमें पद्मकान्तको गुज़र कर लेनी पड़ती ।

पद्मकान्तको अपनी गरीबीसे न तो घृणा थी और न राजोके विलासपूर्ण जीवनसे ईर्ष्या । वह जानता था कि यह गरीबी भी एक बड़ी नैमत है जिसमें झूठी मान मर्यादा आदिके पीछे इन्सानका दिमाग खराब नहीं होता । हर कोई गरीब आदमी अपना है । पर अमीरोंके मित्र तो अमीर भी नहीं होते, सदा एक दूसरेसे जलन और डाह रखते हैं ।

राजो सुन्दर है, यह पद्मकान्त अस्वीकार कभी नहीं कर सकता और अगर वह मुक्त कण्ठसे उसकी नख-शिखसे प्रशंसा करे तो राजो बहुत सुन्दर थी । कन्हैयालालकी इकलौती बेटी राजो अगर कुछ मानिनी है तो इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं । पद्मकान्तके विचारसे उसका मान उसके घरके दायरेके बाहर तो नहीं है या सारे संसारपर उसका मान लाद दिया जायेगा ?—राजो कभी भी पद्मकान्तके लिये गम्भीर प्रश्न न थी ।

मुहल्लेके पुराने शिवालयका प्रांगण पद्मकान्त और उसके साथियोंके इकट्ठे होने और सलाह करनेकी जगह थी । वहाँ था भी आराम, गूलर, नीम और पीपलकी छायाके कारण वहाँ दिन-भर खूब ठण्ड रहती । पानी पीनेके लिये

शिवालयमें कोरे घड़े थे। आज भी पद्मकान्तकी अपने साथियोंके साथ एक बैठक शिवालयके प्रांगणमें हुई। कन्हैया धीरेन्द्र और वीरेन्द्र यह लोग पद्मके कुछ ऐसे खास दोस्त थे जिनसे पद्म करीब करीब सभी ऐसे मामलोंपर सलाह ले लेता था जिनपर उसकी अपनी बुद्धि काम न करती। इसका यह मतलब नहीं कि पद्मकान्तके सारे भेद ये लोग जानते थे। अपने मनकी बहुत-सी बातें वह एकान्त रूपसे गुप्त रखता। उन गुप्त बातोंको अगर कोई व्यक्ति जानता था तो वह थी अनुराधा। पद्मकान्त अपनी सभी योजनाएँ अनुराधाको जरूर बताता। अनुराधामें एक खूबी थी। वह यह कि चाहे वह योजनाओंकी प्रशंसा न भी करे पर बुराई तो भूलकर भी न करती। बल्कि पद्मकान्तके साथ हवामें किले बाँधनेमें उसे उतना ही आनन्द आता जितना कि बड़े बृद्धोंसे रातको कहानी सुनते वक्त। सच बात तो यह थी कि अनुराधा पद्मकान्तकी बहुत-सी बातें समझ ही न पाती।

मन्दिरके प्रांगणसे जब पद्मके साथी विदा हुए उस समय चार बजे थे। लूका चलना अभी तक बन्द नहीं हुआ था। पद्मकान्तकी कोई खास इच्छा न थी कि वह मन्दिरको छोड़ बाहर अंगारे-सी तपती धूलपर हाकर लूके तमाचे खाता हुआ घर वापस जाय। इस वक्त उसे अनुराधासे भी मिलनेकी इच्छा न थी। आम तौर पर अनुराधा दोपहरमें कुछ सहेलियोंके साथ 'पचगुट्टे' खेला करती। पद्मकान्तका यह रोज़का नियम था कि जब भी उसे मित्रोंसे अवकाश मिलता वह शिवलिंगके सामने खड़े होकर जो भी प्रार्थना उसे याद होती उसे गुनगुनाता और फिर श्रद्धासे जलेरीमेंसे गिरे हुए पानीको जो शिवलिंगके ऊपरसे टपकता बहता हुआ नीचे इकट्ठा हो जाता आँखोंसे लगाता। फिर एक बार परिक्रमा कर शिवलिंगके ऊपर लटकनेवाले भारी पीतलके घण्टेको जोरसे हिलाता और बाहर चला जाता। आज भी उसने ऐसा ही कुछ किया। पर आज उसका विचार कहीं भी जानेका न था। इसलिये वह शिवलिंगके सामने पलथी मारकर बैठ गया और आँखें मीचकर अपनेको स्तुतिमें लगानेका प्रयत्न करने लगा। ऐसी लूमें कहीं जानेसे तो यह अच्छा था कि शिवजीकी पूजा की जाये—। पद्मकान्तके लिये समय असमयकी मर्यादाका कभी प्रश्न नहीं उठा। हाँ, उसके ढहते हुए विश्वासका

थोड़ा-सा अंश अब भी इस बातको न भूल पाता कि शिवकी पूजासे तुरन्त फल प्राप्त होता है। पद्मकान्त कभी कभी आँखें खोलकर शिवलिंगको देख लेता। शिवलिंग जगह जगहसे खण्डित हो गया था। पता नहीं, मन्दिर कितना पुराना था। उसे ख्याल आया कि खण्डित मूर्तियोंको मन्दिरमें नहीं रखा जाता, उन्हें किसी तालाब आदिमें सिरा दिया जाता है। फिर उसका अपना विचार यह भी था कि अगर देवता हैं, तो वह अपने नाम-का जाप टूटी या साबित किसी भी मूर्तिके आगे करनेसे अवश्य सुन लेते होंगे। कुछ देर बाद उसे ख्याल आया अपने उपन्यासका। अनुराधासे पूछेगा आगे क्या लिखना ठीक होगा। पद्मकान्त जब बहुत कोशिश करनेके बाद भी शिवकी स्तुतिमें अपनेको न लगा सका तो उठ बैठा। अनुराधा बड़ी देरसे दरवाज़ेसे झाँककर देख रही थी कि पद्मकान्त बहुत अशान्त है। वह किसी प्रकार अपने चित्तको स्थिर नहीं कर पा रहा है। पास आकर बोली—पदम, तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई—वर माँगो। पद्मकान्तने अनुराधाको सामने खड़ा पाया तो हँसकर जवाब दिया आज क्या तुम्हारा जी पचगुट्टे खेलनेमें नहीं लग रहा? अनुराधाकी आदत बिना बात हँस देनेकी थी, इसलिये हँसती हुई बोली—“तुम्हारी तरह दिनभर मुझे खेल ही तो नहीं और भी धन्धे हैं।” पद्मकान्तने पूछा “और क्या धन्धे तुम्हें करने होते हैं?” अनुराधाने कहा—“बाबाकी सेवा—घरकी रोटी—मन्दिरकी झाड़ बुहार—तुम तो आकर यहाँ खूब लिपे-पुतेमें पंचायत करके गन्दा कर जाते हो। मैं सफाई न करूँ तो यह आँगन ऐसा ही शीशेकी तरफ चमकता रहे?”

पद्मकान्तने बहसको बन्द कर देना चाहा—“हाँ अनु, एक बात तो तुम्हें बताना भूल ही गया।” अनुराधाने पद्मकान्तका हाथ पकड़कर कहा “उधर चलो, उस कोठरीमें वहाँ बैठकर बातें करना। यहाँ तो गर्मी बहुत है।” चलते चलते अनुराधाने पद्मकान्तको छेड़ा “और तुम्हारी बातें एक दो मिनटमें तो कभी खत्म होती नहीं।” पद्मकान्तको कुछ बुरा-सा लगा, बोला, “जब स्कूल जाता था तो कहती थीं कि मैं दिन-भर स्कूल में रहता हूँ, कभी बात करनेकी फुर्सत नहीं होती और अब छुट्टियोंमें फुर्सत है तो तुम्हें फुर्सत नहीं। जा पचगुट्टे खेल। मैं चला।” पद्मकान्त सचमुच चलनेको मुड़ा कि अनुराधाने भाव समझ कर कहा “मैं हँसी कर रही थी पदम।”

पद्मकान्तने ग्वालियर जाने, मिलमें जगह मिल जाने, आदि विषयोंपर काफी देर बात की। बहुत-से हवाई किले बाँधे। फिर यह होगा फिर वह होगा। अनुराधाको पद्मकान्तकी बातोंमें कुछ खास रस न मिला। बोली—“पहलेसे सब बातें हर किसीसे कह देते हो, ऐसे काम बनता भी हो तो नहीं बनता।” पद्मकान्तने कहा “यह सब तो कह देनेकी बातें हैं। असली बात मैं किसीसे नहीं कहता सिवाय तुम्हारे।” पद्मने बड़े उत्साहसे कहा “मैं एक उपन्यास लिख रहा हूँ अनु।”

“उपन्यास!” अनुराधा खिलखिलाकर हँस पड़ी। पद्मकान्तने उसकी हँसीका पुरा न माना। यह अनुराधाकी पुरानी आदत है कि हँसेगी अधिक, बात करेगी कम। “तो तुम उपन्यास लिख रहे हो पदम? भला क्या होगा उसका?” अनुराधाने धीमे और दिलचस्प लहजेमें पूछा। पद्मकान्तको जैसे पहली बार किसीको अपनेको समझानेका मौका मिला। बोला “तुम नहीं जानती अनु। उपन्यास लिखनेवालोंकी बहुत इज्जत होती है। उनका नाम सारी दुनिया श्रद्धासे लेती है। “लेकिन पदम, उस उपन्याससे तुम्हें क्या मिलेगा?” अनुराधाने पूछा। पद्मकान्तने कहा “मिलेगा क्या, यश मिलेगा और इस यशसे धन, मनचाही पत्नी।” “अच्छाजी!” अनुराधाने व्यंग किया “तो सिर्फ एक अच्छी पत्नीके लिये यह उपन्यासका भूत सवार हुआ है तुम्हारे सिरपर!” पद्मकान्तने सफाई दी “नहीं, सो बात नहीं। मेरा मतलब है अगर आदमीके पास यश है तो कुछ भी उसके लिये कठिन नहीं रहता।” अनुराधाको पद्मकान्तकी बातें किसी शेखचिल्ली जैसी लगीं। फिर भी वह प्रकटमें कुछ न बोली—“हाँ, तो सुनाओ क्या लिखा है उसमें?” पहले तो पद्मकान्त बहुत सकुचाया पर अनुराधाके अनुरोधने उसे सुनानेपर मजबूर कर दिया।

जितना लिखा था उसे सुन लेनेके बाद भी अनुराधाको यह भास न हुआ कि उसके उपन्यासके पहले परिच्छेदका सिर पैर कहाँ है। बोली—“तो फिर इस तरह उपन्यास लिखना बहुत आसान है? ऐसा उपन्यास तो मैं भी लिख दूँगी। बोलो लिखू?” पद्मकान्तने कहा “अभी क्या सुना है तुमने? अभी तो नायक-नायिकाका मिलन होगा।” अनुराधाने पूछा “मिलन कैसे होगा?”

पद्मकान्तने सचमुच अभी तक यह न सोचा था कि मिलन कैसे कराया जायगा । बोला “ नायक नदी किनारे साँझके सुनहरे बादलोंको देखकर धीरे धीरे तन्मय होकर कुछ गा रहा होगा और नायिका उधर वायु-सेवनको आई होगी । वह नायकका स्वर सुनकर करीब आयेगी । स्वर उसे इतना मधुर लगेगा कि वह उसमें खो जायेगी । नायक गाना खत्म करके इधर उधर देखेगा तो पायेगा कोई उसके गानेपर मुग्ध हो गया है । बस, प्रथम मिलन ऐसे ही होगा । ” अनुराधाको पद्मकान्तके इस विचारपर हँसी आ गई । किस कदर पुरानी तरकीब है नायक-नायिकाके मिलनकी ! सभी उपन्यासोंमें ऐसा ही कुछ तो होता है । अनुराधाको हँसते देख पद्मकान्त कुछ झेंप गया । बोला “ क्या तुम्हें तरीका अच्छा नहीं लगा अनु ? ” अनुराधाने पद्मकान्तको विश्वास दिलाया कि उसे इस तरहके मिलनमें कोई खास आपत्ति नहीं है । अनुराधाने सोचा, अगर अभी वह कुछ कहेगी तो पद्मकान्त आगे कुछ न बतायेगा । इसलिये और भी दिलचस्पी दिखाती हुई बोली—“ और जहाँ नायक खड़ा होगा, वह स्थान कैसा होगा ? क्या वह खड़ा खड़ा गाता होगा या किसी आमकी ज़मीन तक आई हुई झुलेके आकारकी डालीपर बैठा होगा ? उसके आसपास बन-फूलोंकी झाड़ियोंका झुमट होगा ? ” पद्मकान्तने अभी तक नाटकीय दृश्योंकी तरह उपन्यासकी बात सोची ही न थी । बोला—“ मेरे ग़यालसे उसको बैठा हुआ बताना ज़्यादा अच्छा होगा । ” अबकी गंभीरतासे अनुराधा बोली, “ यह कोई जरूरी तो नहीं कि नायक-नायिकाका मिलन नदी-किनारेके किसी बन-फूलोंकी झाड़ियोंके झुमटमें हो । वह किसी रिश्तेदारके घरमें भी मिल सकते हैं । रेलगाड़ीमें भी तो मिलन हो सकता है । ” पद्मकान्तने इस सलाहको गंभीरतासे सोचा । वह उपन्यासकी प्राथमिक उलझनोंमें डूब गया । कुछ नया चाहिये उसे, वरना अनुराधा हँसी उड़ायेगी । तभी अनुराधाने प्रश्न किया—“ तुम्हारा नायक नायिकाको अधिक चाहता है या नायिका नायकको ? पद्मकान्तके उपन्यासमें अभी तक नायकका ही जन्म हुआ था इसलिये वह सोचने लगा कि कौन-सा उत्तर अनुराधाको सन्तुष्ट कर सकेगा । पद्मकान्तने आखिर अपनेको चतुर साबित करनेकी नीयतसे कहा, “ नायिका । ” अनुराधा फिर हँसी । पद्मकान्त उपन्यासकी बातको वहीं खत्म कर बोला “ अब चढ़ेगा अनु, मामा घर आ गये होंगे । ” अनुराधाको

पद्मकान्तका इतनी जल्दी चले जाना अच्छा नहीं लगा, फिर भी उसने इस बातको प्रकट नहीं किया। कुछ देर और उलझाये रखनेकी नीयतसे बोली—“किन्तु यह तो बताओ कि तुम्हारे उपन्यासमें पहले कौन किसे चाहता है ?” पद्मकान्तके लिये यह प्रश्न निस्संदेह बहुत जटिल था। कहने लगा—“अगर नायिकाकी ओरसे ही ऐसा कुछ हो तो तुम्हें कोई आपत्ति है क्या ?” अनुराधाने इस प्रश्नको सुनकर कहा “खैर जो कुछ भी हो, मुझे बताना न भूलना।” अनुराधाकी बात सुन कर जैसे पद्मकान्तको महसूस हुआ कि उसका महत्त्व धीरे धीरे एक उपन्यास-लेखक जैसा होता जा रहा है।

पद्मकान्त जब शिवालयके बाहर जाने लगा तो अनुराधा दरवाज़े तक पहुँचाने आई। उसने पूछा “फिर कब आओगे ?” पद्मकान्तने कहा—“कमी भी आजाऊँगा !” अनुराधा थोड़ी देर पद्मकान्तकी लोप होती हुई मूर्तिको धूमिल सौँकमें देखती रही। उसे पद्मकान्तका उपन्यास तो क़तई पसन्द नहीं आया और न वह क़तई दिलचस्प ही था। फिर भी पद्मकान्तका उपन्यास जब पद्मकान्तकी ही कहानी है तो उसे उसमें दिलचस्पी पैदा करनी ही होगी। उसे पद्मकान्तकी जीवनसम्बन्धी अधूरी जानकारी पर रह रहकर तरस आता था। तभी तो उसका उपन्यास कुछ अच्छा नहीं लगा और पद्मकान्त यह कमी स्वीकार नहीं करेगा कि वह अपनी जीवनी लिख रहा है। जीवनीमें भला क्या रोचकता हो सकती है ?

पद्मकान्तने अभीतक गंभीरतासे नहीं सोचा था कि उपन्यासके अन्तमें किसी नायिकाका अनुराग होगा या नहीं। अगर न भी हो तो अभीसे उसे चिन्ता नहीं थी। पद्मकान्त धौलपुर छोड़कर बहुत कम बाहर गया था इसलिये बाहरी दुनियाका ज्ञान नहींके बराबर था। उसने सोचा अगर कुछ दिन वह बाहर घूम आवे तो सम्भव है उसके उपन्यासका एक आध परिच्छेद और लिखा जा सके।

उस रात पद्मकान्त उसारेमें लालटेनके मद्धिम प्रकाशमें एकदम झुका हुआ कुछ लिखनेमें तल्लीन था। मुन्शी रमाचरण और बाबू रामलाल रोज़ ही की तरह खा पी रहे थे। गप्पें लड़ा रहे थे, ऐसी बात नहीं थी कि पद्मकान्त

अब उन लोगोंकी खयाली तस्वीरके बाहर चला गया हो। वह था किन्तु एक कोनेपर। पद्मकान्त अब मछलियाँ तो लाता नहीं। इसलिये यह बूढ़े शराबी उसके मछली पकड़नेके हुनरकी तारीफ़ तो भूलकर भी न करते। हाँ, इन दिनों जो वह कुछ काम धामकी फिक्रमें लग गया है यह भी काफी प्रसन्नताकी बात है। वह एक दो ट्यूशन कर लेता है। रामलालने पूछा—“पदम क्या पढ़ रहा है? उसे दुबारा तो इम्तहान देना नहीं है।” रमाचरण बोले—“अपनी कहानी लिख रहा है।” यह अपनी कहानी क्या अभी तक चले ही जाती है? खैर, किसी अच्छे धन्धेमें पढ़ जायगा तो सब कहानी भूल जायगा। फिलहाल बेचारेके पास और कोई काम भी तो नहीं है।”

रमाचरण बोले—“यूँ तो बेचारा एक दो ट्यूशन कर ही लेता है” रामलाल बाबू तो निरन्तर कुछ बोलते ही रहना चाहते थे। कहने लगे “बस मुन्शीजी अगर पेशा है तो लड़के पढ़ानेका? जब औरंगजेबने जेलमे कैद अपने बाप शाहजहाँसे पूछा कि पिताजी, एक पेशा और एक अन्न चुन लीजिए। वही आपको दिया जायगा। तो मालूम है मुन्शीजी शाहजहाँने क्या माँगा?” रमाचरण बोले—“अरे भाई, क्या यह न याद रहनेकी बात है? पेशा लड़के पढ़ाना और खानेको चना।” रामलाल बोले—“औरंगजेबने ठीक कहा था कि पिताजी आपके दिमागसे अभी तक बादशाहतकी बू नहीं गई? मुन्शीजी लड़के पढ़ानेका पेशा सचमुच बादशाहत है। ऐसी इज्जत किसी पेशेमें नहीं। बस, आमदनी जरूर इस पेशेमें नहीं होती। पर पद्मकान्तका कुछ लिखते पढ़ते रहना बुरा भी तो नहीं है मुन्शीजी। पढ़ते लिखते रहनेसे पिछले पढ़े-हुएकी मक्क ही होती रहती है।” मुन्शी रामचरणने हँसते हुए कहा, “बनिया कुछ न करे तो सेर बाँट भी न तोले!”

बहुत उलझनेके बाद भी पद्मकान्तने अपने उपन्यासका किसी तरह दूसरा परिच्छेद समाप्त कर ही लिया। उसकी बहुत इच्छा हुई कि कुछ वह अनुराधाके विषयमें भी लिखे, पर उसे ऐसा महसूस हुआ कि अनुराधाकी कहानी तो वह लिख नहीं रहा है जो उसका जिक्र करना जरूरी हो और न अनुराधा उपन्यासकी नायिका है। अनुराधा जैसी मामूली साँवली लड़कियाँ भले ही

उससे अधिक बुद्धिमती हों पर वह उपन्यासकी नायिकाएँ तो हो नहीं सकतीं । नायिकाका सुन्दर होना पद्मकान्तके दृष्टिकोणसे परमावश्यक था ।

दुलारसे सरपर हाथ फेरती हुई मामी बोली “ अब भी क्या तुझे इम्तहान गस करना है मेरे लाल । कुछ खा पी तो ले । ” पद्मकान्तने उपन्यासकारकी तरह कहा—“ मामी, जीवनभर इम्तहान ही इम्तहान हैं । स्कूलका इम्तहान तो शायद पुस्तकें रटकर पास भी किया जा सकता है किन्तु जिन्दगीमें जो मोड़ मोड़पर छोटे छोटे इम्तहान आते हैं उन्हें पास कर लेना ज़रा कठिन है । ” मामी बोली “ देख रे पदम ! यह किताबोंकी-सी बातें मत किया कर । अब तू काफी समझदार है । ” पद्मकान्त सचमुच कुछ और कहना चाहता था पर मामीकी मीठी फटकारने उसे चुप कर दिया । वह खाना खाकर जल्दी ही सो गया । सबेरे ही उसे खालियर जाना है । उसके उपन्यासके अंश उसके तपनोंमें तैरते दिखाई दिये । अब भी उसमें कोई सम्पूर्ण कहानी न थी । वह कहानीके टुकड़े थे । काँचके रंगीन टुकड़ोंकी तरह चमकदार दिलचस्प और दिलकश ।

३

गाड़ी तेज़ीसे भागी जा रही थी । धौलपुरके चिर-परिचित दृश्य जैसे भूल भुलैयाँमें खोते जा रहे थे । पद्मकान्तको ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कि यह गाड़ी उसे किसी नई दुनियाकी ओर तेज़ीसे लिये जा रही है । उस नई दुनियामें जहाँ उसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व होगा । और वह सोचता चला जा रहा था । चम्बल नदीपर जब गाड़ी पुलपरसे गुज़री तो उसके विचारोंकी कड़ियाँ पुलकी आवाज़से बिखर गईं । पुलकी ऊँचाई और नदीकी गहराईको देखकर वह सोचने लगा । हमें जीते रहनेके लिये पुलोंकी कितनी ज़रूरत होती है । हर जगह गड्डे हैं । हर जगह उन गड्डोंपरसे हमें गुजरना होता है । इन गड्डोंके ऊपर पुल बनाते बनाते हमारी सारी जिन्दगी खत्म हो जाती है । यह गड्डे फिर भी नहीं पट पाते । और मंजिल जिसे हम कह सकते हैं उस तक बहुत कम लोग पहुँच पाते हैं । पैतृक पूँजी पहलेसे ही बना हुआ पुल

हैं जिसपरसे होते हुए धनी पिताओंकी सन्तानें आसानीसे मंज़िलें तय कर लेती हैं।

पद्मकान्त पता नहीं किस विद्रोहकी तरफ़ बढ़ा जा रहा था कि राजोने अपनी आदतके मुताबिक़ गाते से स्वरमें कहा “प-उ द ऽ म ऽ जी ऽऽ, कुछ बातें उ-उ करो, ऽ ना ऽऽ”। पद्मकान्तको जैसे किसीने झिझोड़ दिया, बोला— “बातें, हाँ हाँ”। बात सच यह थी कि उसके पास राजोसे करनेके लिये कोई बात न थी। राजो इतने करीब होते हुए भी उससे दूर है और दूर ही रही है। वह क्या बातें करना चाहती है। राजोको प्रश्नभरी दृष्टिसे देखते हुए पद्मकान्तने सोचा—‘राजो कितनी अच्छी लगती है। राजोकी चोटी खिड़कीसे आनेवाली हवाके झोकोसे बार बार हिल उठती है। और उसके कानके इयरिंग जिनका आकार मकड़ीके जालेकी तरहका है...वह भी तो रह रहकर हिल रहे हैं। राजो पास बैठी है। वह काफी नज़दीकसे उसे देख रहा है। राजोकी गोरी बाँहोंमें गुलाबी ब्लाउज़ कितना अच्छा लग रहा है...और यह उसी रंगकी साड़ी.....राजो बहुत मोहक लग रही है।’ पद्मकान्तने राजोके चेहरेकी ओर देखा...। राजोकी आँखें...कितनी सुन्दर हो उठी हैं। पद्मकान्तने नज़र नीची कर ली। राजो पद्मको इस तरह अपनी तरफ़ देखनेपर बोली “क्या देख रहे थे?” पद्मकान्त झेंप गया। “कुछ तो नहीं।” राजो स्वभावसे ज़िद्दी है। बोली—“नहीं, कुछ तो ज़रूर देख रहे थे?” पद्मकान्तके मुँहसे निकल गया—“तुम्हें देख रहा था।” राजो किंचित् सुस्क्राई “क्या पहले कभी तुमने मुझे नहीं देखा?” “नहीं, नहीं, सो बात नहीं!” पद्मकान्तने सफ़ाई दी। “तो फिर क्या नई बात है मुझमें? या मैं इन कपड़ोंमें अच्छी नहीं लग रही हूँ?” इस प्रश्नका क्या सही उत्तर हो सकता है बिना यह सोचे ही पद्मकान्तने कहा “बुरी तो तुम कभी भी न थीं, आज तो तुम और अच्छी लग रही हो राजो।” पद्मकान्तकी बात राजोको बहुत भली लगी। राजोको अपनी प्रशंसा सुननेकी आदत है। पद्मकान्त आज न जाने कैसे राजोसे इस क़दर खुल गया। यह राजो और पद्मकान्तके बीच सहाय्यकी भी भावना हो सकती है और उसके उपन्यासकारका षड्यन्त्र भी हो सकता है। पद्मकान्तके बहुतसे विचार औपन्यासिक

अधिक और मौलिक कम थे। पता नहीं, इन वाक्योंमें जो उसके मुँहसे निकले उनमें कितने अपने और कितने उसके पढ़े हुए उपन्यासोंके थे। कुछ भी हो, ऐसे अवसरपर उपन्यासका सहारा बहुत कारगर साबित हुआ।

पद्मकान्त और राजो रास्तेभर बातें करते आये। इन बातोंकी दाईलाइट दो वाक्योंमें आ जाती है। राजोने इस वर्ष हाईस्कूल पास किया है। अब वह प्राइवेट उम्मीदवारकी हैसियतसे इण्टरमीडियेटमें बैठेगी और पद्मकान्त कोई न कोई काम ज़रूर खोज लेगा। और जो भी बातें हुई हों वह इस लायक न थीं कि उनका उल्लेख पद्मकान्त अपने उपन्यासमें करता।

पद्मकान्तसे गो राजोने आग्रह तो किया कि वह भी उसके ताऊजीके यहाँ ही ठहर जाये पर संकोचवश वह वहाँ न ठहर सका। इसीलिये वह अपनी मुँहबोली बहन रामेश्वरीके यहाँ ठहर गया। मिलमें इण्टरव्यू हुई पर वह सफल न हुआ। इसका एक मात्र कारण यह था कि पद्मकान्तकी कोई सिफारिश न थी। वैसे उससे कहा तो यही गया कि अगर वह फर्स्ट डिवीज़नमें हाईस्कूल पास होता तो ज़रूर रख लिया जाता। मिलमें काम करनेवालोंके सम्बन्धी भी इण्टरव्यूके लिये आये थे। पद्मकान्तको पता लगा कि वह रख लिये गये हैं। उनमेंसे कई एक तो आठवें दर्जे तक ही पढ़े थे।

रामेश्वरीने पद्मकान्तको समझाया “अगर मिलमें नौकरी न मिली तो न सही। करनेके लिये हज़ार धन्धे हैं।” उसके पतिकी बाड़ेमें दर्जीकी दूकान थी। महीनेके अन्तमें काफ़ी बच जाता। वह आरामसे गावतकियेके सहारे बैठा रहता, कारीगर और सीखनेवाले लड़के काम किया करते। चार चार मशीनें चला करतीं। पद्मकान्तने स्वयं यह सब देखा। रियासतकी १० रुपयेकी नौकरी उसे स्वयं पसन्द न थी। फिर जिसमें रामेश्वरीके पतिने भी उसे समझाया कि इस पेशेमें खर्च तो कुछ है नहीं। कैची और सुई सलामत चाहिये। जिस भी तख़्तेपर बैठ जाओ तीन रुपये लेकर उठो। पद्मकान्तने कुछ जानकारी हासिल करनी चाही, “कितने दिनमें दर्जीका काम आसकता है? क्या मुझे अधिक परिश्रम करना पड़ेगा?” रामेश्वरीका पति एक चालाक व्यापारीकी तरह बोला “यूँ तो भाई हरेक हुनर अथाह सागर है। वैसे कामचलाऊ और पेटभराऊ काम डेढ़ सालमें ज़रूर आसकता है और

भाई, यह तो तुम्हारी मेहनतपर है। पढ़े लिखे लड़के हो। एक ही महीनेमें ले भागोगे।”

रामेश्वरीका पति विशेष पढ़ा लिखा नहीं था। उसने सोचा, पञ्चकान्त विल वगैरह भी बना दिया करेगा और हिसाब किताब भी सँभाल लेगा। फिर खायेगा भी घरहीमें। आपसकी बात है, कुछ काम सीखने पर देना भी नहीं पड़ेगा। रामेश्वरी भी रातको अकेली न रहेगी और वह आज़ादीसे दूसरे दर्जियोंमें तीन पच्चे खेलने जा सकेगा।

राजोसे आते वक्त मिला तो पञ्चकान्तने अपना इरादा जाहिर किया कि वह दर्जीका काम सीखनेका विचार कर रहा है। इसपर राजोने सरसे पैर तक पञ्चकान्तको देखा और अपने सीनेपर लटकती चोटीसे खेलते हुए कहा, “हाँ, काम तो कोई भी बुरा नहीं होता। यूँ तुम्हारी जो इच्छा हो।” पञ्चकान्तने फिर पूछा “फिर तो तुम्हारे कपड़े भी मैं सीँ दिया करूँगा?” राजो हँसी। बोली, “हाँ हाँ क्यों नहीं, अगर आपको मज़दूरीके पैसे न भी दिये जायेंगे तो भी कोई हर्ज तो होगा नहीं।” पञ्चकान्त वापस लौट आया। राजो वहीं रह गई।

पञ्चकान्तके दिलमें अपने भविष्य जीवनकी बाबत बड़ी बड़ी उमंगें थीं। वह धन चाहता था—मान चाहता था। वह चाहता था, वह ऐसा व्यक्ति हो जिसे बहुतसे लोग जानें। एक आध बार नहीं, कई बार उसके मनमें यह चीज़ आई कि अगर वह उपन्यासकार बन सके तो इससे बढ़कर कोई अच्छा इज्जतका पेशा नहीं। पञ्चकान्तको यह मालूम न था कि जो राह वह चुनना चाहता था वह मोहक ज़रूर है पर है बहुत ही कठिन। संसारके श्रेष्ठ उपन्यासकारोंके दिन भूख और दरिद्रताके बीच कटे हैं, यह उसने कहीं पढ़ा तो ज़रूर था। इस उदाहरणको गंभीरतासे न सोचा था। इस समय पञ्चकान्तके सामने सबसे मुख्य रोटीका प्रश्न था। बूढ़े मामा मामीका बुढ़ापा लाठी टेके सामने खड़ा था। उनके बुढ़ापेको सहारा चाहिये। माता पिताकी शक्ल सूरत तक उसे याद नहीं। अब तो यही माता पिता थे। अगले वर्ष ही मामाको पेंशन मिलनेवाली थी। यह बात भी पञ्चकान्तको मालूम थी। पञ्चकान्तको अपनी आनेवाली जिन्दगी इन अड़चनोंके बाद भी सुनहरी मालूम हो रही थी। उसके विचारनिर्मित छोटेसे घरमें एक सुन्दर पत्नी घूम

हुआ। घरमें भी वह क्या करे? पन्नकान्तने चप्पलें पैरमें डाल लीं और घरमें ताला लगा अनिश्चित भावसे चल पड़ा।

जहनमें फिर राजो छा उठी। राजो नायिकाके रूपमें उसे वास्तवमें बहुत भली लगी। तभी तो किसी अज्ञात प्रेरणासे उसके पाँव वकील साहबके घरकी तरफ उठे जा रहे थे। पन्नकान्तकी उलझनें कुछ और विस्तार पा गईं। यह सब हुआ कैसे? राजो क्यों इस क़दर गंभीर प्रश्न बनकर सामने आ गई है? वही राजो तो यह है जिसे वह पसन्द नहीं करता था। अब उसे हुआ क्या है? राजो कुछ भी हो, अच्छी लड़की है, इसी निष्कर्ष तक वह पहुँचना चाहता था। उसकी विचारधारा टूट गई। हकीम उलफ़त हुसैनने उसे जाते देख पुकारा—
“पदम! ए पदम!!” पन्नकान्त रुक गया। हकीम उलफ़त हुसैनको वह ननसालके रिश्तेसे मामा कहता था। बोला “क्या है हकीम मामा?” हकीम साहब बोले “अरे तुम तो ऐसी उजलतमें चले जा रहे हो जैसे डिण्टीकी नहीं तुम्हारी ही शादी है!” पन्नकान्तको अपनी शादीकी बात बहुत ही भली लगी और उसकी सहज कल्पनामें लजाती हुई एक वधू आ खड़ी हुई। वह और कोई नहीं राजो थी। मशीनकी तरह वह बैठकमें जा पहुँचा। वहाँ हँसी-कहकहेकी गूँजमें राजो खो गई। पन्नकान्तने देखा, चौपड़ ज़ोरकी जमी है। सारे मोदीपाड़ेके लोग जमा थे। पन्नकान्त जिस मुहल्लेमें रहता था उसका नाम मोदीपाड़ा था। मोदीपाड़ेमें ज़्यादातर ऐसे ही लोगोंकी बस्ती है जो बहुत ही साधारण आयवाले हैं। हकीम साहब भी इसी श्रेणीके आदमी थे। आसपासके लोग ही उनके पास इलाजको आते थे। आमदनीके आँकड़े भी उतने ही थे जितनेमें उनका काम खींचातानी करके चल जाता था। हकीम साहबकी उम्र ४० से ज़्यादा न थी। उनके अलावा उनके कुन्बेमें एक आदमी और था, वह था अब्दुल्ला। अब्दुल्लाकी आयु ५० के लगभग रही होगी। अब्दुल्ला हकीम साहबका कम्पाउण्डर भी था रसोइया भी था। यानी पीर बाबर्ची भिश्ती सब कुछ। इसीलिये हकीम साहबके साथ उसकी गुज़र अच्छी तरह हो जाती थी।

चौपड़पर बाजियाँ लग रही थीं। खिलाड़ी तो चार ही थे पर लगगी लगाने-वाले कमसे कम चौगुने थे। हरेक खिलाड़ीकी बाजीपर लगगी लगानेवालोंकी

बड़ीसे बड़ी रकम जो दस आनेसे ज्यादा न थी लगी थी। हकीम साहबको प्रत्येक जीतनेवालेसे एक आना फी रुपया 'नाल' मिलती थी। इसे चौपड़का किराया समझ लीजिये या घरमें बिठाने और वक्त बर्बाद करनेका मेहनताना समझ लीजिये। यह 'नाल' सिर्फ बाज़ी खेलनेवाले खिलाड़ीसे ही बसूल की जाती थी। लग्गीवाले इस आय-करसे मुक्त थे। पद्मकान्त चाहे उपन्यास लिखे या उपन्यासकी नायिकासे उलझे पर चौपड़का खेल अभी तक उसके लिये बहुत दिलचस्प था, इसलिये उसका मन स्थिर हो गया।

पद्मकान्तके पास शायद ही कभी इतने पैसे रहे हों कि वह स्वतन्त्र रूपसे बतौर जुएके चौपड़ खेल सका हो। पर इसमें सन्देह नहीं कि वह खेलता अच्छा था। इसलिये वह दो चार आने कमीशनके लेकर दूसरेके लिये ज़रूर खेल दिया करता था। आमतौरपर वह जीतता भी था। जैसे ही पद्मकान्तने अपनी धूलभरी देशी चप्पल दरवाज़ेपर उतारी वैसे ही हकीम साहबने अहमद हुसैनसे कहा—“आगया मेरा शेर! अब क्या है, ज़रा देखो इसके भी हाथ। अरे मियाँ अहमद हुसैन, अब न कहना मेरे अरमान निकाले न गये।” अहमद हुसैन पुलिसमें हैडकान्सटेबिल थे और फिर हाथ भी गहरा मारनेमें नहीं चूकते थे इसलिये इन खिलाड़ियोंमें काफी अच्छी हैसियतके आदमी समझे जाते थे। बोले—“अजी शहज़ादे, मानता हूँ अँग्रेज़ी पढ़ गये हो। अच्छा खेल भी लेते हो, पर आज ज़रा मैं भी सँभलकर आया हूँ। यह न समझना कि मैं अफीम खाता हूँ सो तुम्हारी चालें न समझूँ। कसम खुदाकी, आजकल मेरे खेलकी तारीफ़ सारा थाना करता है। आ जाओ बेटे, मामूसे दो हाथ हो जायँ।” पद्मकान्तके लिये इस मजलिसमें सभी बुजुर्ग थे और सबकी इज्जत वह दिलसे करता था। अहमद हुसैनको भी वह मामा कहता था। अबसर छोटी रियासतोंमें बोलनेके लिये इसी तरहके रिश्ते होते हैं। घरकी मेहतरानी तकको वह मौसी कहता था। इस तरहके रिश्तेमें जाति और पेशेकी कोई बाधा न थी। यह इन लोगोंका अपना आदर्श समाज था, जहाँ न राजनीतिक दलबन्दी थी और न स्वार्थकी दीवारें। इनकी दुनिया छोटी ही सही पर उदार थी।

हकीम साहब बोले—“बेटा पदम, ज़रा अहमद हुसैनको ऐसे हाथ

दिखाओ कि याद रखें। मेरा नाम न डुबा देना।” पद्मकान्तने कौड़ियाँ बजाते हुए कहा—” हकीम मामा, ऐसा कैसे हो सकता है, आखिर शार्गिद तो आपहीका हूँ। ”

पद्मकान्तने हकीम साहबको आसमानपर चढ़ा दिया। “मैं तो भाई, लाल गोठियाँ ही लूँगा” अहमद हुसैन बोले “क्योंकि कहनाबत है:—

हरी हरावै, लाल जितावै।

काली पीली, ले घर आवै।”

पद्मकान्तने हरी गोठियाँ लेते हुए कहा—“मामा यह तो खिलाड़ीपर है।” अहमद हुसैन भड़के—“अबे छोकरे, मामाको ही सिखाता है। चल फैंक कौड़ियाँ।” पद्मकान्तने सीधे तीस ही फैंके। अहमद हुसैनका रँग उतर गया। बोले—“अंग्रेजी पढ़नेसे तू बहुत बातूनी हो गया है। कुछ लिहाज भी है बुजुर्गोंका?” हकीम साहब बड़ी देरसे कुछ बोलनेके लिये व्याकुल हो रहे थे। अब उन्हें मौका मिल गया। “देखो भाई मियाँ पदमको धमकाओ मत।” हकीमसाहब और किसीका पक्ष कैसे लेते? आखिर वह खेल तो उन्हींके पैसेसे रहा था। फिर हकीम साहबकी आदत थी कि किसी अपने आदमीका या जो उनको नालके कुछ ज्यादा पैसे देता उसका खूब दिल बड़ाया करते थे। “शाबाश” “खूब” आदि शब्द उन्हें तोतेकी तरह रटे हुए थे जिनका प्रयोग वह मौके बेमौके भी कर डालते थे। इसीलिये अगर उनका आदमी ग़लत ही क्यों न खेले या भद्दीसे भद्दी भूल ही क्यों न करे, उनके शब्दोंमें अंतर कभी न आता। “भाई कमाल किया है। खूब! ऐसे ही खेलना चाहिये। (चाहे गोठ पर गोठ पिट रही हो) “अरे वाह, क्या कहने है बावली गोठके (चाहे एक भी गोठ बावली न हो), शाबाश खेले जाओ।” झूमते रहते। अक्सर बिना बाजी देखे ही दिल बड़ाया करते। खेल पूरे ज़ोरमें था। अहमद हुसैन जीतने लगे। पद्मकान्त हिम्मत हारने लगा। तभी हकीम साहबकी तोतारटन्त फिर शुरू हो गई—“वाह भाई पदम, क्या जालमें फँसा रहे हो। शाबाश मेरे शेर! अरे बाहरे दिलेर! अरे बड़े जाओ। अब क्या है पलकोंकी सुइयाँ हैं।” इस बड़ावेसे पद्मकान्त सचमुच ही जीतने लगा। अहमद हुसैन हार गये।

अब्दुल्ला मिट्टीका पठानी हुक्का भरकर सामने रख गया था, सो हकीम साहब पीते जाते थे और नालके पैसोंको कई बार गिननेके बाद भी बार बार गिन लेनेका लालच नहीं त्याग पाते थे। रातको आठ नौ बजे तक दीवारगिरीके धीमे प्रकाशमें खेल जमा रहा। खेलनेवाले आरामसे बैठे थे कि समय पर सब ही वकील उमाशंकरकी दावतमें जायेंगे। मुहल्ले पड़ौसकी बात, सभी खेलनेवाले निमन्त्रित थे। हकीम साहबको दावतोंमें रायता और मिठाई बहुत ही पसन्द थी। इसलिये उन्होंने पञ्चकान्तसे यह दोनों चीजें अधिक परोसनेका वचन ले लिया। हकीम साहबको मालूम था कि पञ्चकान्त हमेशा परोसनेका काम पसन्द करता है। दावतमें जानेका वक्त हो गया था।

हकीम साहबने अपनी १५ बरस पहले बनवाई हुई शेरबानी पहनी। कंधेमें ज़रा-सा तेल लगाकर मूँछोंको काढ़ा। पुरानी रुह गुलाबकी शीशीमेंसे एक फुरेरी बनाकर कानमें खोसी और पहाड़ी छड़ी जो कभी उन्हें किसी मरीज़ने दी थी लेकर घरके सब लोगोंके साथ रवाना हुए। वकील साहबका घर बहुत दूर नहीं था।

वकील साहबके अहातेमें बड़ा शामयाना तना था। शहरकी प्रसिद्ध गानेवाली अख्तरी बाईका नाच हो रहा था। हकीम साहबको देखते ही लोगोंने इशारेसे बुलाकर खास मेहमानोंमें बैठा लिया। फिर क्या था, लगाये हकीम साहबने वाहवाहीके नारे। इरशाद...मरहवा...खूब! क्या कहने हैं बेगम...जियो...। हाथ भी उठते थे और उसी अनुपातमें तबलेके तालपर गर्दन भी हिलती थी। महफ़िलमें जान पड़ गई।

पञ्चकान्तके लिये कहीं पर्दा न था। पञ्चकान्त यहीं पैदा हुआ और बढ़ा हुआ था। पहले तो उसे वकीलन मौसी (वकील साहबकी पत्नी) ने औरतोंमें परसनेके लिये कहा, फिर जब वकील साहबने बाहर मर्दोंमें काम करनेको कहा, तो भी वह मना न कर सका। बाहर था भी आराम, थोड़ी बहुत देर बैठनेको भी मिल जाता है। औरतोंमें तो खड़े खड़े कमर दुख जाती है। औरतें होतीं अजीब प्रकृतिकी हैं। कोई दुबारा तिवारा मिठाई माँगेगी तो कोई सालभर तकके बच्चेकी पत्तल धरवाना न भूलेगी। कोई होने

पर भी सोंठ और रायता जरूर माँगेगी। कुछ नहीं तो पानी तो उन्हें बार बार चाहिये ही। शायद उन्हें परसनेवाले लड़कोंका खड़ा होना अखरता है। औरतोंकी यह आदत पद्मकान्तको कतई पसन्द नहीं थी। न जाने औरतें कितना खाती हैं और जितना खाती नहीं उससे कहीं अधिक पानी पीती हैं। उसने निश्चय किया, कुछ देर इधर कुछ देर इधर परसमें शरीक होगा।

पद्मकान्त जब औरतोंकी पंगतमें गया तो उसे वही पुराने अनुभव हुए। हर चीज़को चार बारसे कम किसीने न माँगा। मिठाई तो दूध पीते बच्चे तककी भी रखा लेना न भूलीं। इनमें कुछ औरतें ऐसी भी थीं जो इशारेसे एक आध चीज़ माँग लेती थीं। यह या तो पढ़ी लिखी कुमारियाँ या पढ़ी लिखी बहुएँ थीं। फिर कुछ औरतें इतनी शर्मीली थीं कि उनकी वकालत पास ही बैठी दूसरी औरतोंको करनी पड़ती थी। इनकी संख्या बहुत कम थी। इस कम संख्यामें अधिकांश नई आई बहुएँ ही थीं। शायद इस शर्मका कारण पास ही बैठी उनकी सासोंकी लोहमूर्ति हो। पहले कुछ दिन तो बहुएँ सासोंसे डरती ही हैं। ऐसी औरतोंमें पद्मकान्तको ज़बरदस्ती परसनेमें बड़ा मज़ा आ रहा था।

ले दे के कहीं १२ बजे बाहर मर्दाने और अन्दर ज़नानखानेकी दावतें खत्म हुई ही थीं कि घरकी मालकिन वकीलन मौसी पद्मकान्तसे बोलें—“पदम बेटे, ज़रा एक पत्तल तो लगा लाओ। अभी अभी पता लगा कि राजोने कुछ भी नहीं खाया है। वह कल रातको जागी है, सो दस बजेसे ही सो गई है। राजोका नाम सुनते ही पद्मकान्तके थके शरीरमें जैसे स्फूर्ति आ गई। राजोसे बातें करनेके लिये ही तो वह औरतोंमें काम करने चला आया था। उत्साहसे बोला—“मौसी, इसमें कौन-सी मुश्किल है। भण्डार तो आज रात-भर खुला ही रहेगा। इससे मी अगर देर हो जाती तो भी मैं ला देता हूँ, पूरियाँ ठण्डी ज़रूर हो गई होंगी।” वकीलन मौसीने अपनी मोटी कमर-पर हाथ रखकर ज़रा झुककर पद्मकान्तसे कहा “बेटा, राजोको तो ताज़ा ही पूरियाँ चाहिये—वैर ताजा तो ठण्डी भी हैं—गर्म ही चाहिये। उसे तो आज रातभर फिर रतजगा करना है। और नाचना गाना बिना उसके तू तो जानता ही है फीका ही रहता है। कहीं उसकी आवाज़ बैठ गई तो अब रातको, सो भी १२ बजे, कुलंजन (पानकी जड़) तो मिलनेसे रहा।” पद्मकान्त

सीढ़ियाँ उतरते हुए बोला—(औरतोंकी दावत छतपर हो रही थी।)
“अगर हलवाई न भी हुए तो मैं खुद ही सेक लाऊँगा।”

वकीलन मौसी मुस्कुरा कर बोलीं “—तू मेरा बेटा जो है।” काम लेना वकीलन मौसी खूब जानती हैं।

वह नीचे गया तो उसने पाया कि परसनेवाली टोली खाने पर जमी हुई है। मुन्शी रामलाल ऐसे मौकोंपर भी थोड़ी डाल लेना इसलिए पसन्द करते थे कि सररमें ज़रा अच्छा खा लिया जाता है। इसीलिये कुछ ज़यादा बातें कर रहे थे। पद्मकान्त भट्टीपर बैठा पूरियाँ गर्म कर रहा था। रामलाल बाबू बोले

“परसा परसी परसराम।

इस मायाके तीन नाम ॥

ला भाई पदम, तू ही एक पापड़ दे जा।” पद्मकान्तने अभीतक कुछ खाया नहीं था इसलिये मन ही मन झुँझला रहा था। फिर दावतके शोरोगुलमें उसकी बात पूछनेवाला था भी कौन ? पद्मकान्त ने ज़रा चिढ़कर कहा—“रामलाल मामा, पापड़ ही पापड़ खाओगे तो कैसे पेट भरेगा ? फिर आपको वकील साहबके अन्नके साथ पूरा न्याय भी तो करना चाहिये।” पाश्चात्य समाजमें यह वाक्य अच्छा मज़ाक गिना जाता है, पर यहाँ यह वाक्य सुनते ही कुछ लोग तो सोंठ हो गये। कुछ चनोंकी तरह खिल गये। जो यह जानते थे कि मुन्शीजी शीरेके तार खींच रहे हैं; मन ही मन प्रसन्न भी हुए कि बुढ़ेने बड़ी देरसे रंगमें भंग कर रखा था। केवल रमाचरणको यह बात बहुत बुरी लगी क्योंकि कि वह खुद भी खुराक पूरा हो जानेके बाद चटपटी चीज़ोंके शौकीन थे। तमककर बोले—“मैं सब समझता हूँ। तुम पढ़ना लिखना छोड़नेके बाद काफी बदतमीज़ होते जा रहे हो।”

पद्मकान्त सिटपिटा गया। पद्मकान्त कुछ जवाब सोचे कि सुन्दर बाबूने कहा—“मामाजी, पदम आखिर बच्चा ही है।” फिर पद्मकान्तकी तरफ़ रुख़ करके बोले—“तुम भी करीब करीब शेख़ चिल्ली ही हो। मेरे भाई, सोच समझकर बातें किया करो।” बात आई गई हो गई।

पद्मकान्तने पत्तल अच्छी तरह भरी या यूँ समझ लीजिए उसने अपने लिये भी रियायत रखी। अब भूख उसे बर्दाश्त नहीं हो रही थी। फिर ज्यादा खाना खानेका एक और कारण यह भी था कि औरतोंका दरबार है, एक आध और राजो भी पैदा हो सकती है और कई एक सोये बालक भी जाग सकते हैं।

जब पद्मकान्त औरतोंके कमरेमें घुसा उस वक्त औरतें बड़ी लम्बी चौड़ी हाँक रही थीं। फलानेकी शादीमें तो कोई गानेवाली ही नहीं थी और जो गा रहीं थीं गा क्या रहीं थीं रो रहीं थीं। तभी वकीलन मौसीने अपनी बुजुर्गीका इज़हार देते हुए कहा “ओ छटंकीकी मा ! कहीं नाइन बारिनोंको ढोलकपर बिठा देनेसे ही रतजगा हुआ है। हमारी राजोको देखो अकेली ही...।” पद्मकान्तको देख वकीलन मौसी बोलीं—“क्यों जी, तुम क्या छुपे छुपे ओरतोंकी बातें सुन रहे हो ?” पद्मकान्तको बड़ा अजीब-सा लगा, बोला—“आपने राजोके लिये खाना मँगवाया था न ?” वकीलन मौसी पद्मकान्तका सिर थपथपाकर बोलीं—“शाबाश बेटे, भई यह लड़का बहुत लायक है जिठानीजी।” पद्मकान्तकी मामीको वकीलन मौसी जिठानी कहती थीं मामी फूल उठीं। वकीलन मौसी अपनी बातचीतका मनोरंजक सिलसिला जो पहले चल रहा था तोड़ना नहीं चाहती थीं, बोलीं—“भाई, कैसे लड़के हो। पासवाले कमरेमें ही तो राजो है। जाओ, खिला आओ।” पद्मकान्तको बहुत मला लगा। छटंकी अपनी माकी गोदमें सो गई थी और छटंकीकी मा बैठे बैठे अलसा रहीं थीं, बोलीं—“भइया, फिर अपनी छटंकीको भी ज़रा उधर ही सुला देना।”

पद्मकान्तने दूसरे कमरेमें जाकर देखा कि राजो तो फिर सो गई है। पद्मकान्तने पत्तल स्टूलपर रख दी। वह राजोको जगानेके ख्यालसे राजोके क़रीब आया। बड़ी देर तक वह सोचता रहा। कैसे जाऊँ। और यह राजो बेख़बर सोई पड़ी है। पद्मकान्तको राजो आज और भी अच्छी लगी। पद्मकान्तके उपन्यासकारने एक स्वप्नकी-सी-दुनिया पद्मकान्तकी आँखोंमें बख़ेर दी। राजो कैसी सुन्दर नायिका है! पद्मकान्त एकटक राजोके निखरते हुए रूपको देखता रहा। उस समय न पद्मकान्त आपेमें था और न उसका उपन्यासकार

जब राजो खाने बैठो तो बोली—“अरे इतना सारा खाना !” पद्मकान्तने कहा—“ठहरिये मैं एक पत्तल ले आऊँ। अभीतक मैंने भी कहाँ खाया है।” राजोने कहा—“अब छोड़ो पत्तल, इसीमें खा लोगे तो कोई हर्ज है क्या।” पद्मकान्तको अभिमानीनी राजोका यह व्यवहार बहुत अजीब लगा। पद्मकान्तने इधर उधर देखा। कोई भी आता न दिखाई दिया। कमरेमें सुन्दर बाबूकी पत्नी और तीन दर्जन बच्चे लावारिसी तरीकेसे फर्श-पर पड़े थे। कमरा काफी लम्बा था। पद्मकान्तने कहा—“नहीं, मैं पत्तल लिये आता हूँ और सचमुच वह पत्तल ले आया। पद्मकान्त धीरे धीरे राजोके सन्मुख खुल रहा था।

राजोने पूछा “ तो मिलमें आपको कोई काम नहीं मिला ? ” पद्मकान्त अपने कामकी बाबत बातचीत करनेमें कोई खास दिलचस्पी महसूस न कर सका । बोला “ काम ही तो करना है । यहाँ, वहाँ, कोई खास अन्तर तो है नहीं, यहाँ ही कुछ देखूँगा । ” राजोने बहुतसे सवाल पद्मकान्तके भविष्यके बारेमें किये । फिर अन्तमें पूछने लगी—“ मामीको तुम्हारे विवाहकी कृतई फ़िक्र नहीं है क्या ? ” पद्मकान्त चुप हो रहा । सुन्दर बाबूकी पत्नी यानी ऐटेवाली अभी ही उठी थीं । उन्होंने राजोका अन्तिम वाक्य सुन लिया । बोलीं—“ पद्मकान्त तो तुमसे ब्याह करेगा राजो । ” और राजोके चेहरेपर गहरी लाली दौड़ गई । “ क्या जीजी, अब तुम भी मज़ाक करने लगीं मुझसे ? ” यह कहती हुई राजो बाहर चली गई । पद्मकान्त ऐटेवालीकी तरफ़ देखता ही रह गया । ऐटेवाली बोलीं—“ क्यों पदम लल्ला, राजो पसन्द है तुम्हें ? ” पद्मकान्तने बनावटी चिढ़ दिखाते हुए कहा, “ भाभियोंके पास देवरोंकी जोड़ियाँ मिलानेके अलावा और कोई काम नहीं रहता क्या ? ”

ऐटेवाली अपने छोटे बच्चेको सँभालने लगीं । पद्मकान्तने सोचा, अगर सचमुच भाभी चाहें तो यह मज़ाक सच भी हो सकता है । सुन्दर भइयासे कह देने भरकी देर है । वह भाभीका कहना बहुत मानते हैं ।

सुन्दर बाबूको अनेकानेक उपाधियाँ मिली हुई थीं—जोरूके गुलाम, ज़न-मुरीद—पत्नीव्रता । घरवालोंकी नज़रोंमें सुन्दर कुछ भी क्यों न हों पर वह एक ही सिद्धान्तपर अटल थे । वह यह कि घरकी शान्ति पति-पत्नी दोनोंके अटूट प्रेमसे सम्भव है । वह कभी ऐटेवालीको डाँटते न थे, कभी लोगोंने इन दोनोंको लड़ते भी नहीं देखा । इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि दोनोंमें समझौता बहुत जल्दी हो जाता था । एकको क्रोध आया तो दूसरा चुप । लो झगड़ा ख़त्म । सुन्दर बाबू थे भी समझदार आदमी । हर सुआमलेमें पत्नीकी राय ले लेना ज़रूरी समझते थे । ऐटेवाली भी सन्तुष्ट थीं और वह ज़रूरतसे ज्यादा सेवा भी करती थीं । उदाहरणके लिये रातको बिना पैर दबाये सुन्दर बाबूको नींद मुद्रिकलसे आती थी ।

आमतौर पर पतियोंमें पत्नियोंपर अधिकार जतानेकी प्रवृत्ति होती है । वह समझते हैं पत्नी हीन है और उनके इशारेपर जीनेके लिये ही रची गई

है। अगर वह रुठ जायें तो पत्नीका कर्त्तव्य है कि वह उन्हें मना ले, अगर पत्नी रुठ जाये तो गँवारोंमें पीट देना परम कर्त्तव्य है और सभ्योंमें बोलना छोड़ देना या मायके भेज देना उचित है।

मर्दकी है भी हर तरह सुसीबत। कोई अपनी पत्नीसे दुर्व्यवहार करता है तो लोग कहते हैं ऐसा आदमी दुष्ट है, और जो कोई अपनी पत्नीकी कद्र करता है तो लोग कहते हैं ऐसा आदमी जोरूका गुलाम है। यदि अपनी पत्नीकी कद्र करनेवालेको लोग जोरूका गुलाम कहते हैं तो जोरूका गुलाम बने रहना अच्छा है। अक्सर पद्मकान्तको सुन्दर बाबू समझाया करते।

राजो जब दूसरे कमरेमें पहुँची तब उसने पाया कि वहाँ उसका बड़ी देरसे इन्तज़ार हो रहा है। वकीलन मौसी फूल उठीं, बोलीं—“आ गई मेरी रानी बेटी। मेरी रानी।”

पद्मकान्त खाना खा कर कुछ देरको बच्चोंवाले कमरेमें ही सो गया था। वह एक सपना देख रहा था। एक स्त्री खड़ी है, उसके कपड़े नये हैं। वह सुन्दर है, बहुत सुन्दर। वह पद्मकान्तको चाबीका गुच्छा देती हुई कह रही है। मैं रतजगेमें जा रही हूँ। दफ्तरसे लौटते वक्त वहीं चले आना। पद्मकान्तने अर्ध-निद्रित अवस्थामें जैसे उस स्त्रीको पहचान लिया। यह राजो है। पद्मकान्त मुश्किलसे दो घण्टे सो पाया होगा कि उसे किसीने उठा दिया। पद्मकान्त उठा तो उसे सुनाई दिया कि राजो बन्ना गा रही है—

बन्ना जावे आधीरात लानेको दुन्हनियाँ।

जिसके लम्बे लम्बे केश सलौनी अँखियाँ ॥

डिण्टीकी बारात चली गई पर वकील साहबके ज़नानखानेकी चहल पहलमें कोई खास अन्तर नहीं पड़ा। दिन भर सब औरतें सोतीं, रात भर ‘खोरिया’ करतीं। खोरिया एक तरहसे प्रहसनका ही ठेठ रूप है। इसमें औरतें भौंति भौतिके मर्दाने भेस बनाती हैं। कोई मुन्दी, कोई जज, कोई कैदी, और न जाने क्या क्या बनती हैं। पद्मकान्तको रात खोरियेमें उपस्थित होनेकी आज्ञा न थी। इससे औरतोंकी आज़ादीमें बाधा पड़ती है। क्योंकि जब वह मर्द बनती हैं तो मर्दानी गालियाँ भी उन्हें देना ही चाहिये। मर्दाने मज़ाक

भी उन्हें करने ही चाहिए। ऐसे आज़ादीके अवसर कब कब हाथ आते हैं जब कि घरमें नौकरोके अतिरिक्त सभी मर्द बाहर गये हुए होते हैं।

मामी तो बारात लौटने तकके लिये वहाँ गई थीं, इसलिये लौटी नहीं। रमाचरण भी बारातमें गये थे इसलिये पद्मकान्त फिर घरमें अकेला था। दिनमें पद्मकान्त कारण अकारण वहाँ घूम ही आता। राजोसे कभी मुलाकात होती, कभी न होती। जिस दिन मुलाकात हो जाती उस दिन पद्मकान्त अपने आपमें कम होता, उपन्यासमें अधिक।

पद्मकान्त यह तो स्वयं भी नहीं जानता कि आखिर राजोके प्रति उसमें इतना आकर्षण क्यों उत्पन्न हो गया है। पद्मकान्तकी भावुकता आजकल कुछ और ज्यादा बढ़ गई है। वह अपनेको राजोकी तुलनामें रखता। फिर सोचता वह उसकी जीवन-सहचरीके रूपमें अवश्य आयगी। कभी उसका तर्क उसे परेशान करता। बीचमें जो इतनी बड़ी खाई है उसे क्यों कर पाटा जा सकता है। उसके मामाकी स्थिति अच्छी नहीं है। वह स्वयं भी कुछ खास कमाई कर नहीं पाता। पर राजो इस क़दर निकट आ गई है। राजोको पाकर वह मज़दूरी भी करेगा, तो भी राजोको कष्ट न होने देगा। पर राजोके पिता जज साहबसे कहे कौन ? एटेवाली भाभीकी वह बहन लगती है। शायद भाभी यह काम करा सकें। एटेवालीके इशारे पर पद्मकान्त आजकल कुछ भी काम करनेको तैयार रहता है। एटेवालीको प्रसन्न करनेमें पद्मकान्तको काफी समय बरबाद करना पड़ता है।

डिप्टीकी बारात लौट आई थी, इसलिये मामी भी घर आगई थीं। सुन्शी रामलाल और रमाचरण फिर पहलेहीकी तरह रात जम कर बैठते। आजकल फिर पद्मकान्त मछलियाँ ले आता, इसलिये मामा मामी अक्सर उसकी तारीफ़ करते। बाबू रामलाल भी सदा हाँमें हाँ मिलते।

उस सौझ सुन्दर बाबूने मामीसे आकर कहा कि वह दौरेपर जा रहे हैं। पद्मकान्तको घर सोनेके लिये भेज दें। पद्मकान्तको यह अच्छा मौका मिल गया। वह शायद भाभीको तैयार कर सके। एटेवाली गो वह चार बच्चोंकी माँ हैं पर अकेले आजतक घरमें डरती हैं।

पद्मकान्त सुन्दर बाबूके यहाँ सई सौझ ही जा पहुँचा था। खाते पीते दस बजनेको हो गये। पद्मकान्तकी आँखोंमें नींद झुकने लगी। वह किसी भी तरह राजोका प्रसंग न छेड़ सका। एटेवालीने देखा कि पद्मकान्त सोया जा रहा है तो उसे उठानेकी गरजसे कहा—“पदम लल्ला, ज़रा कमरेसे दूध तो उठा लाओ, वरना बिल्ली पी जायगी।” पद्मकान्तने आँखें मीचे मीचे कहा, “तुम भाभी, इतना डरती हो! मैं जाग रहा हूँ, जाओ उठा भी लाओ।” एटेवालीको अभी घरके और भी काम काम करनेको पड़े हैं। पर अब उन्हें भी आलस आरहा था, इसलिये छोटे बच्चेवाली चारपाईपर आकर पड़ रहीं। अब भी उन्हें डर मालूम हो रहा था। एटेवाली चाहती थीं, पद्मकान्त जागता रहे। उन्होंने पद्मकान्तका हाथ झिझोड़ कर कहा, “अरे, अभीसे सोये जा रहे हो, कोई कहानी कहो।”

पद्मकान्तने आँखें मीचे मीचे ही करवट बदल कर कहा—“मुझे कहानी कोई याद नहीं है। तुम्हें याद हो तो कहो, सुनूँगा।” एटेवालीने अन्तिम अन्न फेंका—“और जब राजो रानी आजायेंगी और वह कहेंगी कि ज़रा एक कहानी तो सुनाओ, तो तुम्हें ज़माने-भरकी कहानियाँ याद हो आयेंगी।”

पद्मकान्तकी नींद हिरन हो गई। बोला—“तो फिर भाभी, यह भी तुम्हारे ही हाथमें है। तुम चाहोगी तो इन बच्चोंकी चाची और तुम्हारी देवरानी आ जायगी और न चाहोगी तो कुँआरे हत्यारे तो हैं ही।” ऐसे ही बातें करते करते एटेवाली सो गई और पद्मकान्तको बहुत रात गये भी नींद नहीं आई।

सवेरे पद्मकान्त घर वापस आ रहा था कि रास्तेमें गायको मुहल्लेके बाहरकी तरफ़ ले जाती हुई अनुराधा मिल गई। पद्मकान्त रुक गया। अनुराधासे वह कई रोज़से नहीं मिला था। अनुराधाने पद्मकान्तको रुकते देखा तो गायको हाँकती हुई बोली—“मालूम होता है आजकल उपन्यासमें खूब जी लग रहा है?” पद्मकान्तने अनुराधाको रोका नहीं। वह आगे बढ़ गई।

पद्मकान्तके उपन्यासमें तक़रीबन थोड़ा बहुत ज़िक्र उन सभी लोगोंका आ गया था जो उसके निकट थे या उसके उपन्यासके पात्रोंसे ज़रा-सा भी

सम्बन्ध रखते थे। अनुराधाका परिचय लिखना वह भूला नहीं था, पर चाहकर भी वह दे न सका। अनुराधाको यद्यपि पद्मकान्त बहुत मानता था और उपन्यासके हर परिच्छेदके बाद उसकी राय बिना वह कुछ भी न लिखता, पर अनुराधाका परिचय वह दे कैसे ? वह उपन्यासके पात्रोंसे कोई सम्बन्ध नहीं रखती। उसका जो कुछ भी सम्बन्ध है वह उपन्यासकारसे है। वह अनुराधाके बारेमें जो कुछ जानता है उसे उपन्यासमें लिख देनेमें उसमें एक कमजोरी भी आसकती है। वह यह कि अनुराधा ऐसी बुद्धिमती लड़की है जो उसके ऊँटपटौंग उपन्यासको ठीक करती रही है, तो फिर उसका अपना बुद्धिकौशल क्या हुआ ? फ़िलहाल पद्मकान्तने अनुराधाका परिचय उपन्याससे अलग रखना ही ज़्यादा भला समझा। वह परिचय इस तरह था। अनुराधा उससे उम्रमें तीन चार वर्ष छोटी है और उसके पड़ौसी—शिवालयमें रहनेवाले दामोदर—की रिश्तेदार है। दामोदर और कोई नहीं, अनुराधाके बाबा हैं या अनुराधा जिन्हें बाबा कहती है !

और यह दामोदर कौन हैं ? यह स्वयं पद्मकान्त भी नहीं जानता। वह इतना ही जानता है कि काफी अर्सा हुआ तब यह दामोदर बीमारीकी हालतमें धौलपुर आये और रहनेके लिये शिवालयकी मरम्मत कराके कुछ रहने योग्य कोठरी बनवा लीं। सुना है हर छः महीने बाद पोस्ट आफिससे उन्हें पेन्शन मिलती है। यह पद्मकान्त भी नहीं जानता कि यह पेन्शन उन्हें पोस्ट-आफिसकी लम्बी मुलाज़मतके बाद मिलती है या वह फ़ौजमें नौकरी करते थे। अनुराधाको वह, यहाँ आनेके चार वर्ष बाद, देशसे लाये थे। उनका घर या देश कहीं पूर्वमें है और जब कभी दो एक वाक्य वह पद्मकान्तसे बोले हैं तो उसमें पुरबियापन मालूम हुआ है। यूँ आमतौरपर वह किसीसे ज़्यादा घुलते मिलते नहीं। मुहल्लेवाले भी दामोदरकी ज़्यादा चिन्ता नहीं करते। दामोदर न किसीके लेनेमें न किसीके देनेमें। पद्मकान्तने उन्हें अक्सर नाकपर मोटा चश्मा पहने गीता या महाभारत पढ़ते देखा है या उन्हें 'वायु' का रोग ज़्यादा बढ़ जानेके बाद अनुराधासे धार्मिक पुस्तकें सुनते।

लोग उन्हें शिवालयका पुजारी ही कहते हैं और पद्मकान्त भी। पर पद्मकान्तने उन्हें कभी घण्टा घड़ियाल बजाते नहीं देखा। कभी किसीके यहाँ

कथा बाँचते नहीं देखा। किसीके यहाँ 'सीधा' माँगते नहीं देखा। किसीके यहाँ श्राद्धमें जीमते भी नहीं देखा। लोगोंका कहना है, दामोदर कबीरपन्थी हैं। उनकी कोई जाति पॉति नहीं। अगर हो भी तो वह ब्राह्मण तो कदापि नहीं। अगर ब्राह्मण होते तो क्या दो चार यजमान भी न बनाते। कुछ लोगोंका खयाल था कि अछूत लोग ही अक्सर कबीरपंथी होते हैं क्यों कि कबीरपंथियोंके मठमें अधिक संख्या अछूतोंकी थी। अनुराधा दामोदरको बाबा कहती है। 'बाबा' से मुराद पिताके पितासे भी हो सकती है और पितासे भी। गुजरात या महाराष्ट्रमें 'बाबा' का अर्थ पिता होता है। वैसे किसी भी बुजुर्गको बाबा कहा जा सकता है। यह तो स्वयं पद्मकान्त भी नहीं जानता कि अनुराधा इन दामोदरकी कौन है? कन्या या पोती? या कुछ भी नहीं? यह अनाथा भी हो सकती है। दामोदर उसके केवल पालक भी हो सकते हैं।

पद्मकान्तने भी दामोदरकी नातिन कहलानेवाली अनुराधाको केवल अनुराधा ही समझा। वह अनुराधा जो उसे उसके उपन्यासके हर पेचीदा और उलझे हुए अंशपर राय देती है और जो ज़िन्दगीमें उपन्यासके बाहर भी उसकी विश्वासपात्र है, जो उसकी गोपनीय बातोंको अपने तक ही रखती है और उससे कुछ भी कह देना अहितकर नहीं है। मित्रोंसे अधिक स्नेह करनेवाली अपनोंसे भी अधिक निकट।

एक बार मामीसे पद्मकान्तने पूछा था कि यह अनुराधा इतनी बड़ी हो गई है, अभी तक उसकी शादी क्यों नहीं हुई? तो मामीने गौरसे पद्मकान्तको देखा जैसे कोई सन्देह घर कर गया हो। मामीने कहा—“लड़कोंको लड़कियोंके मुआमलेमें ज़्यादा लगाव नहीं रखना चाहिये।” पद्मकान्तने शुद्ध उपन्यासकारकी तरह कारणकी खोज की थी, एक सत्य या तथ्य जानना चाहा था। मामी पद्मकान्तको 'ना समझ' नहीं समझतीं इसीलिये बोलीं, “उसकी शादी क्या धूम धड़ाकेसे होगी? अरे, कोई भी उसे ब्याह ले जायगा!” पद्मकान्तने पूछा था “पर ऐसे ही?” इसपर मामी बोलीं “नहीं सो तो नहीं। शादीकी तरह कुछ शायद होता होगा। पर मुझे ठीक तरह मालूम नहीं।” इसके आगे पद्मकान्त और कुछ नहीं जानता। अगर अनुराधा अछूत है तो भी भली है

और ब्राह्मण-कन्या है तो भी। विवाहके लिये उसके विचार ठीक मामीकी तरहके थे—बिना धूम धड़ाकेके विवाह कैसा ! अगर हो भी, तो उसे क्या करना है !

अनुराधा दामोदरकी गैर-मिलनसार प्रकृतिकी वजहसे मुहल्लेवालोंकी आलोचनासे परे है और फिर जातिकी जगह कबीरपन्थी होनेका आवरण उसे सहानुभूतिके प्रपंचसे भी बचाये रहता है।

अनुराधा स्वयं तो इतनी मिलनसार है कि लोग उसे 'गऊ' कहते। वह भूलकर भी उससे कोई बात ऐसी न करते जिससे उसे कष्ट पहुँचे। अनुराधा एक समाजमें—पूरेके पूरे समाजमें इस तरह जी रही थी जैसे वह उनसे सबसे अलग है और अलग होते हुए भी वह उन्हींकी तरह है—जैसे एक ही स्थानको जानेवाली दो रेलगाड़ियाँ, जो दो भिन्न भिन्न रास्तेसे तो जाती हैं पर उनकी पटरियाँ कहीं कहीं एक दूसरेके काफी करीब आ जाती हैं—एक दूसरेसे छू भी जाती हैं। अनुराधाकी मंजिल भी वही है जो समाजकी मंजिल है। किन्तु उसका रास्ता वह नहीं है। वह समाजके रास्तेको किसी किसी जगह छू लेती है, कहीं कहीं वह पाससे तेज़ीसे गुज़र जाती है।

वह कैसी भी हो, कुछ भी हो, पद्मकान्तके लिये उसका महत्व बहुत ज्यादा है। इसलिये पद्मकान्त, अनुराधाका जिक्र लिखकर खुश तो हुआ पर सन्तुष्ट न हो सका। इसी कशमकशमें पद्मकान्तके उपन्यासका चौथा परिच्छेद भी किसी तरह पूरा हो गया।

५

राजोके यहाँ पद्मकान्तका आना जाना कोई नई घटना न थी, फिर भी उस छोटेसे परिवारमें सिवाय राजोके और किसीको पद्मकान्तसे दिलचस्पी न थी। हाँ राजोकी मा अक्सर उसके काम-बन्धेके बारेमें पूछताछ कर लिया करती थीं। राजो इकलौती होनेके कारण कुछ ज़िद्दी स्वभावकी तो थी ही और उसकी तक्रीबन हर ज़िद पूरी भी हो जाती थी। राजो चूँकि प्राइवेटली इन्टरमीडियेटकी तैयारी कर रही थी, इसलिये उसके पास ऐसा फ़ालतू वक्त

था जो काटे न कटता था। कुछ ही दिन हुए राजोके कहनेसे जज साहबने बंगलेके बागमें बैडमिण्टन-कोर्ट बनवा दिया था। खेलनेवाली अकेली राजो थी। उसे साथी भी चाहिये। इसलिये कभी माको परेशान करती, कभी जज साहबको। माका स्थूल शरीर बैडमिण्टन खेलने योग्य न था और जजसाहबको क्लबसे अवकाश न होता।

उस दिन जजसाहबने राजोकी मासे कहा, “अगर पद्मकान्त ही कुछ देर राजोके साथ बैडमिण्टन खेल जाया करे तो कैसा हो?” राजोकी माको यह बात पसन्द आई। पर वह पद्मकान्तके स्वभावसे परिचित थी, बोली—“उसे खेल कूदसे क्या सरोकार? वह तो अजीब-सा लड़का है।” जजसाहब यह कहते हुए कि पूछ देखनेमें कोई हर्ज तो है नहीं, क्लब चले गये। पद्मकान्तने इस प्रस्तावको बिना किसी हिचकिचाहटके स्वीकार कर लिया।

आरम्भमें पद्मकान्तको इस ऊटपटाँग खेलमें कोई दिलचस्पी नहीं मालूम हुई, पर राजोके संसर्गने उसे फिर भी अच्छा खासा खिलाड़ी बना दिया। अब पद्मकान्तकी शामें घिरीं हुई होतीं। उनमें राजोका चेहरा होता, जिसपर वेशुमार पसीनेकी नन्हीं नन्हीं बूँदें होतीं। उसके हाथका उठता और गिरता हुआ रैकेट होता। बीचमें एक नैट होता। दोनोंको शृंखलामें पिरोनेवाली नाचती हुई शटिल-कॉक होती। फिर पद्मकान्तकी हार होती। हार ही तो वह चाहता था। जान बूझकर। ओर राजोने हारनेको कभी अच्छा न समझा। वह केवल जीतमें ही विश्वास करती चली आई थी। इसीलिये सदा हार जानेवाला पद्मकान्त राजोका अधिकाधिक स्नेहका पात्र होता जा रहा था।

राजो बैडमिण्टनके अतिरिक्त और भी कई तरहके खेलोंमें दिलचस्पी रखती थी। उदाहरणके लिये उसने बागके कुछ भागमें स्वयं खुरपीसे क्यारियॉ बनाकर कुछ फूल कुछ तरकारियॉ बोई थीं। बागके एक कोनेमें एक छोटी-सी झील बनाई थी जिसमें बागकी सिचाईके पानीका बड़ा अंश इकट्ठा हो जाता था। इसी झीलसे राजोने छोटी छोटी नहरें निकालीं थीं जिनका पानी उसकी तरकारी और फूलोंकी क्यारियोंमें आता था। झीलके किनारे एक छोटा-सा छप्परनुमा बंगला भी बनवाया था जिसमें मुश्किलसे दो आदमी बैठ सकते

थे। इसी बंगलेमें जब राजो कभी आती तो उसका पालतू खरगोश और हिरनका बच्चा भी साथ होता। इन पालतू जानवरोंको वह इस नकली वन-प्रान्तमें छोड़ दिया करती। राजोकी कल्पनाका वन-प्रान्त पूरा हो जाता।

गर्मियोंके दिनोंमें राजपूतानेमें आँधियोंका बड़ा जोर रहता है। गो पाँच बज गये थे पर आँधी थमनेके कोई चिह्न नज़र नहीं आ रहे थे। राजोने पद्मकान्तसे पूछा—“आज खेलना मुमकिन है?” पद्मकान्त बैठा यही सोच रहा था कि राजो बोली—“तो फिर चलो, अपने मानसरोवरमें चलें।” पद्मकान्तने राजोका मानसरोवर नहीं देखा था। उसने पूछा—“तुम्हारा कोई अपना मानसरोवर भी है?” राजो हँसने लगी। “हाँ है, लेकिन वहाँ सिवाय मेरे और कोई नहीं जा सकता।” पद्मकान्तने किंचित् परिहासके ढंगसे कहा, “तो फिर मैं भी कैसे जा सकूँगा?” राजोने पद्मकान्तको स्नेह-सरल भावसे देखते हुए कहा—“तुम्हारी बात और है।”

राजो मानसरोवर उसी स्थानको कहती जहाँ उसने झील बना रखी थी। पद्मकान्तने दो खरगोशोंको गोदमें ले लिया और राजोने हिरनके बच्चेको। वह मानसरोवरपर जा पहुँचे। पद्मकान्त तो वैसे ही ज़रूरतसे ज्यादा भावुक था। उसे यह स्थान सचमुच बहुत पसन्द आया। झीलके पास ही लकड़ीकी बेंचपर दोनों बैठ गये। हिरनका बच्चा इधर उधर कुलाचें भरने लगा और खरगोश तरकारियोंके पत्ते चरने लगे। राजोने कहा, “इस स्थानपर मुझे एक कमी मालूम होती है।” “वह क्या?” पद्मकान्तने किंचित् आश्चर्यसे पूछा। राजोने कहा “यहाँ भी तालाबकी तरह सारस वगैरह आया करें तो कितना अच्छा हो।” पद्मकान्तने सुझाव पेश किया—“अगर इस झीलमें कुछ मछलियाँ डाल दी जायें तो सारस बगले वगैरह बिना बुलाये आ जाया करेंगे।” राजोको सुझाव बहुत पसन्द आया। अब सवाल यह था कि मछलियाँ लाये कौन? राजोका कहना था कि वह पिताजीसे कहेगी, पर पद्मकान्तने यह ज़िम्मा अपने ऊपर लिया। इसके बाद इस वनप्रान्तको और भी आकर्षक बनानेके लिये यह भी तय हुआ कि एक नकली पहाड़ी भी बनाई जाय। उसमें आरपार जानेकी गुफा भी हो। इसके अतिरिक्त झीलके किनारे सूरजमुखी और गुलाबके पौधे भी लगाये जायें। इसके कुछ ही दिनों बाद

सूरजमुखी और गुलाबके पौधे भी वहाँ लगा दिये गये। नकली पहाड़ी भी बन गई। मछलियाँ भी डाल दी गईं।

इस बरसातमें झीलके आसपास बहुतसे जंगली पौधे उपज आये थे और सर्दिके आरम्भमें एक रोज़ राजोने पाया कि एक सारसका जोड़ा झील-किनारे खड़ा है। दो एक बगले भी नकली पहाड़ीपर चुपचाप बैठे हैं। इसके अतिरिक्त सूरजमुखीके पौधेमें कई रंगीन और खूबसूरत छोटी जातिकी चिड़ियोंने अपने घोंसले बना लिये हैं।

राजोके लिये यह वस्तुएँ भले ही सामयिक महत्त्व रखती हों पर पद्मकान्तके लिये इन दिनोंको किसी युवा-स्वप्नकी तरह भूल जाना असम्भव था। यह उसके उसन्यासका वह सर्वश्रेष्ठ अंश था जिसपर पद्मकान्तके उपन्यासकारको अभिमान हो सकता था।

राजोके मामाकी लड़की पद्माकी अवस्था विवाहयोग्य हो जाने पर भी कोई वर न मिला। गो राजोके मामाके पास दहेजमें भी देनेको बहुत कुछ था। कारण यह था कि पद्मा शरीरसे बहुत स्थूल थी। रंग साँवला। नाक नक्शा बहुत साधारण और चेहरेपर चेचकके दाग। इधर कई दिनोंसे लगातार राजोकी माके पास उनके भाईके पत्र आ रहे थे कि वह ही कोई लड़का तलाश करें। यूँ पद्मामें और कोई खराबी न थी। इस साल उसने भी मैट्रिक पास कर लिया था। गाना भी उसे आता था। काढ़ना बुनना तो जैसे उसके हाथमें ईश्वरका वरदान था। जहाँ जहाँ शादीकी बातचीत चलती और उसका फोटो भेजा जाता वहींसे बातचीत खत्म हो जाती। अब तो राजोके मामाने फोटो भी भेजना बन्द कर दिया था। वह खुद शादी तय करने जाते तो साफ़ साफ़ कहते, मेरी लड़कीमें गुण हैं रूप नहीं।

राजोकी माकी नज़रमें पद्मकान्त था ही। पद्मकान्तकी सबसे बड़ी अयोग्यता यह थी कि वह अनाथ था। इसके अतिरिक्त कोई मुस्तक़िल काम न करता और फिर माली हालत, उसका तो जिक्र ही बेकार है। यूँ पद्मकान्त अब एक सुन्दर युवक हो गया था। अक्सर रिश्तेदारीमें ऐसे युवकोंको इसलिये खुश रखा जाता है कि उन्हें किसी तरह फुसलाकर किसी कुरूप लड़कीके हाथ

कुछ भी नायकसे नहीं कहा। ” अनुराधाने पूछा—“ फिर नायक किस आधारपर यह समझने लगा कि वास्तवमें नायिका उसे बहुत चाहती है ? ”

पद्मकान्तने कहा—“ आपसकी बातें । ”

अनुराधाने चुटकी ली—“ पर अभी तक जो बातें तुमने मुझे सुनाई उनमें तो कहीं कुछ भी नहीं है। वह तो खेल-तमाशेकी-सी बातें हैं। नायकको ही कह देना चाहिये था कि वह उससे विवाह करना चाहता है। खुद नायिकाके प्रेमका पता लग जाता । ”

पद्मकान्तने सरल भावसे कहा—“ नायिका भी तो कह सकती है। नायकको क्या पड़ी है ? ”

अनुराधाने हँसते हुए कहा—“ मुँह धुलाकर रखो अपने नायकका । ”

पद्मकान्तकी समझमें कुछ न आया। पूछने लगा—“ भला नायिका क्यों नहीं कह सकती ? ”

अनुराधाने हल्की-सी चपत पद्मकान्तके गालपर मारते हुए कहा—“ पगले हो पगले ! नहीं कहती उसकी इच्छा ! ”

पद्मकान्त अनुराधाके पाससे उठकर सीधा घर पहुँचा ।

छुट्टीका दिन बाबू रमाचरण या मुन्शी रामलालके लिये किसी खास कार्यक्रमका न होता। दोनोमेंसे कोई एक दूसरेके घर जाकर जम जाता। पुराने ज़मानेकी बातें होतीं, पुराने रीत-रिवाजोंको अच्छा बताया जाता। पुराने ज़मानेकी खास अच्छाइयोंमें बस्तुओंका सस्ता मिलना मुख्य बात होती। फिर वर्तमानको मँहगाईके नामपर कोसा जाता। मुन्शी रमाचरण आज कुछ उदास थे, बोले—“ मुन्शीजी, आखिर किया क्या जाय ? हमने तो एक पैसा जोड़ा नहीं और इस लड़ाईने ऐसी मँहगाई कर रखी है कि क्या बतायें । ” उन दिनों दूसरे महायुद्धने काफी जोर पकड़ लिया था। मुन्शीजीने कहा—“ पदम भी तो आखिर तुम्हारे बेटेके ही तरह है। अब उसे भी हाथ बँटाना चाहिए। दो महीने बाद आपको रायसाहब पेंशन मिलनेवाली है। ” बाबू रमाचरणने कहा, “ हाँ ठीक है, अभी तक यह घरमें कुछ नहीं देता। हम लोगोंने भी यही सोचा, बेचारेको थोड़ा बहुत ही तो ट्यूशनसे मिल पाता

है सो वह अच्छे कपड़े आदि बना लेता है। वैसे बेचारेने पढ़ाई ही बड़ी मुश्किलसे की है।” मुन्शी रामलालने कहा, “अब पदमको धौलपुर छोड़ कहीं आगरे या ग्वालियर चला जाना चाहिये। सुना है, लड़ाईका सामान बनानेके नये नये कारखाने खुल रहे हैं। कहीं न कहीं उसे भी जगह मिल ही जायेगी।” रमाचरणने सर हिलाया, “हाँ, ठीक कह रहे हैं मुन्शीजी।” रामलाल बोले—“आज भाभी (पद्मकान्तकी मामी) जज साहबके यहाँ गई हैं। शायद कुछ पद्मकान्तकी शादी ब्याहकी बातचीत चल रही है।” रमाचरण बोले “भई, शादी ब्याहकी बात तो तब शोभा देती है जब पास खर्च करनेको दो चार हजार रुपये हों। खूब जशन रहे। खूब जेवर दिया जाय। खूब दहेज भी मिले। पर भाई जब हमारे पास खर्च करनेको ही कुछ नहीं है तब दहेज देने कौन आयगा ?”

रामलाल बाबूने पूछा—“राजो भी लड़की अच्छी है, अगर जजसाहब राजी हो जायँ।” राजोका नाम सुनते ही रमाचरण कुछ चौंके। “भला राजोसे पदमका ब्याह कैसे मुमकिन हो सकता है ? इतने बड़े आदमीको बेटीकी हम गरीब क्या खिलायेंगे।” रमाचरणने मुन्शी रामलालकी तरफ देखा। रामलाल कभी निराशा प्रकट करनेवाले अदमी न थे, बोले—“यह तो जजसाहबको जँच जाने पर है। वह चाहें तो पद्मकान्तको आगे भी पढ़ा सकते हैं। कोई व्यापार भी करा सकते हैं। पदमकी तारीफ तो हमेशा करते रहते हैं। देखें भाभी क्या खबर लाती हैं।” पद्मकान्तने अन्दर घुसते हुए अन्तिम वाक्य सुन लिया। जैसे खुशीके मारे उसका दम घुट जायगा।

पद्मकान्तकी मामी पद्मकान्तकी शादीकी चर्चासे सदा ही खिल उठती थीं पर वह बात पक्की कहीं न कर पातीं। क्योंकि पद्मकान्त अभी तक कोई मुश्तकिल काम न कर पाया था। जजसाहबके यहाँ इस तरह जाना मामीके लिये न तो एकदम आश्चर्यजनक था और न रोजमर्राकी-सी बात, फिर भी—मामीने इस बातको अच्छी तरह सोच लिया कि अगर राजोकी मा राजोके लिये बातचीत चलाएँगी तो वह तुरन्त ‘हाँ’ कह देंगी। फिर मामीके आत्मगौरवने उन्हें रोका। ‘हाँ’ कह देनेसे लड़कीवालोंके दिमाग खराब हो जाते हैं, इसलिये शुरूमें टालमटोल तो जरूर करनी होगी। राजोकी मा मामीसे बड़ी होत्रेके नाते

जीजी कहती थीं और मामी उन्हें राजोकी मा, जैसे कि बुढ़ियोंकी आदत होती हैं। राजोकी माने पूछा—“ जीजी, अब तो आपको थोड़ा बहुत आराम भी करना चाहिये, भला यह कोई उम्र है काम करनेकी ? ” मामीने चापलूसीकी ऐसी बातें पहले भी सुनी हैं पर अब बेटी-व्यवहारका सवाल है इसलिये उन्हें क्या उत्तर देना चाहिये, यही सोचकर बोली—“ राजोकी मा, जो मेरा पदम किसी लायक हो जाय तो बहू घरमें आये और आराम मिले। बरना जै दिन जीना तै दिन सीना, तो है ही। ” राजोकी माने पद्मकान्तकी मामीके ऊपर पंखा झलते हुए कहा, “ लेकिन आप शादी तो तय कर लीजिये उनकी। जब बहू घरमें आजायगी तो खुद कोई न कोई काम करेंगे ही पदम। ” आज पद्मकान्तके लिये राजोकी मा बहुत आदरसे बातें कर रहीं थीं। “ नहीं जी ” मामी बोली “ ऐसा करनेसे क्या फायदा ? फिर पद्मकान्तको खुद शादीसे चिढ़ है। वह तो कहीं कुछ काम शुरू करनेके बाद ही शादी करे तो भले ही करे, बरना तुम तो जानती हो राजोकी मा, यह आजकलके लड़के बिना नाथके बेल जैसे ही जिन्दगी-भर घूमना चाहते हैं। ” राजोकी माके तीर निशाने पर नहीं बैठ रहे थे, बोली—“ पर जीजी, क्या पदम आपका कहा भी न मानेंगे ? ” मामीने जैसे टालना चाहा। “ पर कोई काम तो लगे उसका ? ” राजोकी मा बोली—“ यह खूब कही जीजी ! आनेवालीके भागमें होता है तो सब कुछ हो जाता है। ” मामीने कहा—हाँ, ठीक कह रही हो राजोकी मा, बहूके भाग होंगे तो क्या मुश्किल है। ” इसपर राजोकी माको किसी राजाकी उन दो बेटियोंका किस्सा याद हो आया जिसमें राजाने अपनी बेटियोंसे पूछा कि वह किसके भाग्यका खाती हैं ? इसपर बड़ीने उत्तर दिया कि वह अपने पिताके भाग्यका खाती है और छोटी बोली, वह अपने भाग्यका खाती है। इसपर राजाने छोटी बेटीको किसी नितान्त कंगालसे ब्याह दिया और बड़ीके पतिको अपना राज्य दे दिया। छोटी कुछ दिन बाद भाग्यसे रानी हो गई और बड़ी भिखारिन। मामीको इस किस्सेने बहुत प्रभावित किया। बोली—“ फिर राजोकी मा, तुम ही बताओ, है कोई अच्छी लड़की ? ” राजोकी मा चटसे बोली—“ तो जीजी, लड़कियोंकी भी कमी है। लड़की तो घरहीमें मौजूद है। ” इसके बाद राजोकी माने मामीको समझाया कि दहेजमें भी

कोताई नहीं की जायेगी...। मामी यह कहकर चली आई कि वह पद्मकान्तके मामा यानी मुन्शी रमाचरणसे पूछकर ही कुछ निश्चय कर सकेंगी।

उस रात जब मुन्शी रमाचरणने बाबू रामलालसे जजसाहबके यहाँकी बातचीतका जिक्र किया तो बाबू रामलाल बोले—‘ शुभस्य शीघ्रम् ’ रायसाहब ! ऐसे मोके सदा नहीं आते। पद्मकान्त अपने कमरेमें बैठा उपन्यास लिख रहा था। उसने सोचा अगर वह शादी इतनी जल्दी कर लेगा तो एक तरहसे बन्धनमें पड़ जायेगा। दूसरे ही क्षण पद्मकान्तका भात्रुक उपन्यासकार सोचने लगा, यदि फिर मौका हाथ न आया तो ? अन्तमें वह इस निश्चयपर पहुँचा कि अगर एक वर्षके बाद शादी हो तो इस बीच वह कामका आदमी अवश्य बन सकता है।

पद्मकान्त आज बहुत दिन बाद मुन्शी रमाचरण और रामलाल बाबूकी रोज़की सभामें बैठा था। आज बहुत दिन बाद उसकी तारीफ़ोंके पुल बाँधे जा रहे थे। मुन्शीजीकी ओरसे बाबू रामलाल बोले—“ बेठा पदम, अब जल्दी ही तुम्हें मामाका हाथ बँटाना चाहिये। उन्हें पेन्शन मिलनेवाली है। फिर तुम अब काफ़ी सयाने हुए, तुम्हारी शादी भी हो जाना ज़रूरी है। ” पद्मकान्त चुप रहा। वह ऐसे मौकोपर बोलता कभी नहीं। रामलाल बाबू बोले—“ राजोके बारेमें तुम्हारा क्या खयाल है पदम ? ” पद्मकान्त शरमाता हुआ उठ बैठा। चुप्पीमें ही ऐसे अवसरोपर स्वीकृति समझ ली जाती है।

दूसरा दिन पद्मकान्तके लिए और भी व्यस्त था। उसने निश्चय किया कि राजोसे पूछेगा कि आखिर वह मेरे क्या बन जानेमें सुखी होगी। कैसा अजीब साहसका काम है एकदम पूछ लेना, यह पद्मकान्त जानता है। इसीलिये दो पहरको जब पद्मकान्त राजोके यहाँ पहुँचा तो उसे स्वयं ही रमी खेलनेका प्रस्ताव रखना पड़ा। स्वयं ही मानसरोवरकी चर्चा चलानी पड़ी। इन सब चीजोंकी आड़ भी उसे अपनी बात कह देनेका सहारा न प्रदान कर पाई और शब्द उसके होंठोंके बाहर न आ सके।

अभी तो साँझ दूर थी। पद्मकान्त आज चाहता था कि यह तेज़ चलती हुई आँधी न थमे और उसे बैडमिण्टन न खेलनी पड़े। बहुत सम्भव है, मानसरोवरपर जाकर वह अपनेको व्यक्त कर सके। पद्मकान्तके अन्दर जो

घुटन थी उसका प्रभाव कुछ उसके चेहरे पर भी छाया हुआ था। इसे लक्ष्य कर राजोने पूछा—“पद्मजी, उदास हैं कुछ?” पद्मकान्तने सकपकाकर कहा “नहीं! नहीं! उदास तो नहीं हूँ।”

पाँच वजनेको आये पर आँधी थमनेको नहीं आती। गो इस आँधीका रूप गर्मियों जैसी आँधीका-सा न था, पर सक्रान्तिकी तेज़ और हड्डियों तकको कंपा देनेवाली हवा किसी भी दशामें ब्रैडमिण्टनकी चिड़ियाको लक्ष्य-भ्रष्ट करनेको आँधी जैसी ही थी। ऐसेमें मानसरोवरका प्रस्ताव भी कुछ अजीब-सा लग रहा था। राजोको अपनी नई सूझों पर सदा ही गर्व रहता। वह बोली—“अगर आज मानसरोवरपर आग-ही तापी जाय तो क्या हर्ज है?” पद्मकान्तको यह प्रस्ताव भला लगा। हिरनका बच्चा राजोने लिया और पद्मकान्तने दोनों खरगोश उठा लिये।

पद्मकान्त और राजोको आता देख मानसरोवरपरके बगुले और सारस उड़ गये। पालतू हिरन और खरगोश इधर उधर उछलते रहे। पद्मकान्तने इधर उधरसे सूखे पौधोंके डण्ठल और घास आदि खोजी। दोनों बहुत देर तक बैठे आग तापते रहे। सहसा राजोको एक अजीब प्रश्न सूझा। राजोने पूछा—“पद्मजी, आपका ब्याह हो रहा है?” “ब्याह?” पद्मकान्तने पूछा। “हाँ जी, ब्याह ही तो।” राजो चुप हो रही। “तुमसे किसने कहा?” यह दूसरा प्रश्न था जो पद्मकान्तने राजोसे पूछा। राजोने सरलतासे कहा, “मा कह जो रहीं थीं।” पद्मकान्तको बहुत भला महसूस हुआ। शादीकी बात युवकोंके लिये ऐसी ही होती है, फिर जिसमें उन्हें यह विश्वास हो जाये कि वह लड़की सुन्दर है जिससे उनका विवाह हो रहा है तो और भी प्रसन्नता बढ़ती है और यदि लड़की, लड़केके नगरमें ही है तो फिर क्या कहने। लड़के जरूर चेष्टा करेंगे कि एक झलक तो मिल जाय उस लड़कीकी। यहाँ तो वह सामने बैठी थी। पद्मकान्तके मुँहसे बहुत चेष्टा करने पर भी यह निकल न पाया कि उसने आज तक राजोको पानेके लिये निरन्तर कई महीनेसे चाह की है। फिर भी भले लड़कोंकी तरह बातको दूसरे ढंगसे पूछ लेना पद्मकान्त जानता है। पूछने लगा—“तुम तो बहुत प्रसन्न हुई होगी यह सुनकर?” राजोने कहा—“हाँ, क्यों न होती।” पद्मकान्तको जैसे वाणी मिल गई।

“पर राजो, तुम यह तो बताओ कि मुझे करना क्या चाहिये ?” राजोने कहा, “क्या मतलब ?” पद्मकान्त बोला—“शादीके बाद मुझपर ही तो पत्नीका भार—मेरा मतलब है—” पद्मकान्त रुक गया—“पड़ेगा और मैं कुछ भी नहीं करता हूँ।” राजो बोली—“और जो आपके श्वसुर महोदय बहुत-सा धन दे दें तो क्या तुम अच्छा धन्या नहीं कर सकते ?” यहाँ पद्मकान्तका आत्म-सम्मान जाग उठा, “श्वसुरके भरोसेपर तो ज़िन्दगी बीतेगी नहीं राजो ? खुद अपने बल-बूतेपर ही कुछ करूँगा।” राजोने जिज्ञासा प्रगट की “ज़रा मैं भी तो सुनूँ क्या करोगे ?” पद्मकान्तने सगर्व सीना फुलाते हुए कहा—“मैं ग्वालियर जाकर टेलरिंगका काम सीख आऊँगा, फिर यहाँ आकर दूकान खोलूँगा। खूब फायदा हुआ करेगा।”

राजोने कहा “उठो” और पद्मकान्तकी तरफ़ मुस्कुरा कर बोली—“हाँ, विचार बुरा भी नहीं है।”

पद्मकान्त राजोके यहाँसे सीधा शिवालय पहुँचा। पता नहीं, वह उलझ गया था या मुलझ गया था। इतना वह अवश्य जानता था कि अनुराधाकी सलाह बिना आगे कुछ निश्चित करना कठिन है।

अनुराधा कुसमयमें घण्टेकी आवाज़ सुनकर चौंकी। उस समय वह रोटी सेक रही थी। परन्तु रोटी सेकनेसे अधिक आवश्यक काम वह भी हो सकता है जिसपर पद्मकान्त कुछ बातचीत करने आया है। अनुराधाने आटेके हाथोंको दिखाकर पद्मकान्तसे कहा—“अगर उपन्यास सुनाना है तो फिर हाथ धोकर आती हूँ और कोई ज़रूरी काम हो तो खड़ी हूँ, कहो।” पद्मकान्तने हत्मीनानसे कहा—“नहीं, तुम आरामसे आओ, मैं बैठा हूँ।”

अनुराधा खुद भी पद्मकान्तकी शादीकी अफ़वाह सुन चुकी थी और अब वह स्वयं पद्मकान्तसे सुननेकी इच्छुक थी। पद्मकान्तने अनुराधाको आते देखा तो कहा “रोटी पूरी बन गई या नहीं ?” अनुराधाने किंचित् मुस्कुराते हुए कहा “अगर न भी बनी होगी तो तुम तो बना देनेसे रहे। हाँ, तो आज तुम्हें फ़ुर्सत मिल कैसे गई ?” पद्मकान्तने उसके आक्षेपका कोई उत्तर न दिया। बोला—“और अनु, अब तो उपन्यासमें उलझने ही उलझने हैं। क्या

तुम उन्हें मेरे लिये सुलझा न सकोगी ? ” अनुराधा खिलखिलाकर हँस पड़ी, “ लो भला, मैं कैसे सुलझाऊँगी, लिखते तुम हो और सुलझाऊँ मैं—” पद्मकान्तने ज़रा-सा सहारा पा कहा—“ यह जो नायक है न अनु, मेरे उपन्यासका, उसे अब कुछ धन्धा तो करना ही होगा । क्योंकि उसके धन्धेके पीछे शादी जो रुकी पड़ी है । ” अनुराधाने सहानुभूतिके स्वरमें कहा “ तो फिर कठिनाई क्या है पदम ? ” पद्मकान्तने ज़रा दबे स्वरमें पूछा—“ अगर वह टेलरिंगका काम सीखकर दूकान खोल ले, तो क्या हानि है ? ” अनुराधाने पद्मकान्तके विचारोंसे सहमत होते हुए कहा, “ हर्ज तो कुछ भी नहीं । ” अनु, पर धनी पिताकी पुत्री (नायिका) यह पसन्द करेगी कि उसका पति मैजिस्ट्रेट या कोई और सरकारी अधिकारी न होकर एक मामूली मजदूर हो ? ” अनुराधा पद्मकान्तके भावको समझकर बोली—“ हर एक पेशा, आखिर करता तो इन्सान ही है । अगर सभी सरकारी नौकरा करने लगें तो हमारा काम कैसे चले । जितने ज़रूरी सरकारी अधिकारी हैं उतने ही ज़रूरी दूसरे पेशेवाले । फिर कपड़ा तो हर गरीब अमीर, बड़ा छोटा, पहनता ही है और पहननेसे पहलें कपड़ेका सिलवा लेना भी आवश्यक है—तुम्हारी नायिका क्या कहती है ? ” पद्मकान्तने राजाके शब्द दुहराये—“ कहती है, विचार बुरा भी नहीं है । ” “ हूँ ” कहकर अनुराधा चुप हो रही । पद्मकान्तने पूछा—“ क्यों, तुम्हारे विचारसे क्या वह पसन्द नहीं करती इस धन्धेको ? मेरे विचारसे तो उसे बहुतेरी सुविधायें ही होंगी । ” अनुराधाने भावुकतासे कहा—“ यदि नायिका नायकको चाहती ही है, तो पेशे-गरीबी-जाति-रूप-या रंगकी कोई बाधा बीचमें दीवार बनकर न खड़ी होगी । यदि नायक डलिया ढोकर चार पैसे लाकर सौझको नायिकाके हाथपर धर देगा, तो उसे कुवेरका खजाना समझेगी । रूखा सूखा जो कुछ भी होगा खुद आधा-पेट खा सेवा करेगी । वह क्षणिक सहवासको ही सुख मानेगी । परन्तु पदम, नायिकाके हृदयको समझनेकी मुबुद्धि भगवान् तुम्हारे नायकको दे, मैं तो यही प्रार्थना करती हूँ । ” उस समय अनुराधाकी आँखोंमें गाढ़े गाढ़े आँसू छलछला आये थे । पद्मकान्तने बच्चोंकी तरह अनुराधाके आँचलसे उसके आँसू पोंछते हुए कहा—“ तुम्हें क्या हुआ है अनु ? ” अनुराधाने रूँधे कण्ठसे उत्तर दिया—“ तुम्हारी अनुको कभी कुछ न होगा, विश्वास रखो पदम ? ” और वह

उठकर अन्दर चली गई। पद्मकान्त कुछ देर अनुराधाकी, मन्थर गतिसे अन्धेरेमें लोप होती हुई मूर्तिको देखता रहा। फिर उठकर घर चला आया।

दिनको दस बजेकी गाड़ीसे पद्मकान्त सचमुच ग्वालियर जानेको तैयार हो गया। मुन्शी रमाचरण इस समाचारसे बहुत प्रसन्न हुए। मामीने बड़े हठसे कुछ खाने पीनेका सामान साथ रख दिया। बोलीं—“मेरे पूत, चिट्ठी लिखता रहियो। बस तू काम सीख कर लौटा कि मैंने तेरा मदिया बसाई।” मामीके अन्तिम शब्दोंने पद्मकान्तके मनमें नया उत्साह भर दिया। राजोने भी कुछ अच्छे ही लहजेमें पूछा था—“पदमजी, लश्कर जाकर तुम मुझे भूल न जाना!” तौंगेमे सुख्तसर-सा सामान लादकर वह स्टेशन जा रहा था। यह उसकी पहली यात्रा थी जब उसे काफी दिनों तक घरसे दूर रहना होगा। पद्मकान्तका दिल भारी था। तौंगा जब मुहल्लेसे काफी दूर पहुँच गया तब पद्मकान्तने पाया कि तौंगा वकायक रुक गया है। पद्मकान्तने देखा कि तौंगेको रोकनेवाली और कोई नहीं अनुराधा थी।

अनुराधाने व्यंगके लहजेमें कहा—“अगर मुझे भी मिल जाते तो तुम्हारी गाड़ी तो छूट नहीं जाती।” “हाँ अनु!” झेंपता हुआ पद्मकान्त कहने लगा—“मुझे समय ही न मिला...” अनुराधाने एक छोटा-सा डिट्वा पद्मकान्तके हाथमें देते हुए कहा—“वह तो तुम्हें कभी शायद ही मिले।” पद्मकान्तने जल्दीमें पूछा—“यह क्या है अनु?” अनुराधा बोली—“इसमें भगवान शंकरका प्रसाद है। वह तुम्हारे सब मनोरथ पूरे करेंगे?” तौंगा चल दिया। पद्मकान्तने देखा, अनुराधाकी आँखें डबडबा आई हैं। अनुराधा तौंगेको जाते—दूर जाते—देखती रही। वह खड़ी रही। पद्मकान्तने देखा कि अब तौंगेके पीछे उड़नेवाली धूलने अनुराधाके उदास चेहरेको ढक लिया है।

जब चम्बलके पुलपरसे गाड़ी गुज़री तो पद्मकान्तको अपनी पहली यात्राकी बातें याद हो आईं। उसे लगा कि आज जो उत्साह है वह पहली यात्रामें न था। यह दोनों तरफ़के गहरे गहरे गड्डे जैसे पाटे जा सकते हैं अगर चेष्टा की जाय। परिश्रमसे सब कुछ सम्भव है। वह तीसरे दर्जेकी यात्रामें अधिक न सोच सका। गाड़ीमें भीड़ तो थी ही, इसके अतिरिक्त सामने दो शोख लड़कियाँ

खिलाखिला कर हँस रही थीं। पद्मकान्तने काफी देरतक उनकी ओर देखकर उनके चेहरेसे राजो और अनुराधाके चेहरे मिलाये। कभी उनमेंसे एक अनुराधा-सी लगती और दूसरी ठीक राजो जैसी; किन्तु इस क़दर हँसी ठट्ठा भी भला लड़कियोंको सोहता है! इस विचारने फिर उनकी ओरसे ध्यान बाँटा ही था कि उनमेंसे बड़ीने पूछा—“क्या देख रहे हो जी?” पद्मकान्तने डिब्बेमें इधर उधर देखा तो पाया कि लड़कियोंके साथ कोई मर्द या बड़ी बूढ़ी नज़र नहीं आती। पद्मकान्तने कहा—“मैं तो कुछ भी नहीं देख रहा हूँ उधर खिड़कीके पारके सीन सीनरी...” लड़कियाँ फिर खिल खिलाकर हँस पड़ीं—“हमारी शक्ल तो किसीसे नहीं मिलती, कहीं आपको कोई धोखा हुआ हो—” पद्मकान्तको कुछ झेंप भी हुई, कुछ क्रोध भी हुआ। उसने सोचा, यह शहरकी पढ़नेवाली लड़कियाँ शायद छुट्टीमें घर जा रही हैं। उनके मुँह कौन लगे और उसने चुप रहना ही श्रेयस्कर समझा। उसे अपनी जेबमें पड़े हुए अनुराधा द्वारा दिये हुए डिब्बेका ख़याल आया। उसने उसे निकालकर खोला। उसमें कुछ बेलपत्र, कुछ तुलसीपत्र और थोड़ा-सा पेड़का टुकड़ा था। इसके अतिरिक्त अनुराधाके कानोंके बुन्दे भी थे। पद्मकान्त बड़े चक्करमें पड़ा। आख़िर बुन्दे रख देनेका क्या मतलब हो सकता है? पद्मकान्तने बुन्दे बाहर निकाले, इसके बाद उसमें बिछा हुआ कागज़। वह थी एक छोटी-सी चिट्ठी पद्मकान्तने पढ़ी। ‘अगर कभी हाथ तंग हो तो इन्हे बेच कर काम चलाना। तुम्हें अपनी अनुराधाकी सौगन्ध।’ बस यही कुछ था उस डिब्बेमें। पद्मकान्तने डिब्बेको फिर जेबमें रख लिया। लड़कियोंने अबकी पद्मकान्तको उदास देखा तो फिर छेड़ते हुए कहा—“आप पहली बार यात्रा कर रहे हैं जनाव?” पद्मकान्तको इन लड़कियोंकी आदतपर बड़ा गुस्सा आया। कहने लगा—“हाँ कर रहा हूँ, आप क्या करेंगी पूछकर?” एक लड़की बोली—लीजिये साहब, एक तो हम आपके साथ सिमपैथाइज़ करें उसपर इस तरहसे उत्तर दिया!” पद्मकान्त बहुत सीधा लड़का था। वह शर्मके मारे लाल हो उठा। उनमें बड़ीने फिर कहा, “सफ़रमें हमें एक नई दुनिया बनानी पड़ती है जिसमें सब मुसाफ़िर एक परिवारकी तरह होते हैं। हमें ठीक स्वजनोंकी तरह ही एक दूसरेके सुख दुख बँटाने चाहिये। आप सोचते होंगे, अजीब लड़कियाँ हैं। ज़माना तरक्की कर रहा है। अच्छा, आप इसलिए खुल कर बातें नहीं कर

रहे हैं कि हम लोग आपसे अभी तक अपरिचित हैं। परिचय भी दिये देते हैं। मैं हूँ रत्नमाला और यह मेरी सहपाठिन श्री। आप कहाँ जा रहे हैं जनाव ? ”

पद्मकान्तने कहा—“ दूसरे स्टेशन ? ”

अबकी श्री बोली—“ तो यूँ कहिये साहब कि लश्कर जा रहे हैं । ”

“ आप क्या करते हैं ? पढ़ते हैं ? ”

“ कुछ भी नहीं, बस जा रहा हूँ इतना क्या काफी नहीं है ? ”

“ बड़े उदासीन हैं आप दुनियासे, किसीने आपका दिल दुखाया है क्या ? ”

“ क्षमा कीजिए, मैं बातें करनेकी स्थितिमें नहीं हूँ । ”

रत्नमालाने चुटकी ली—“ लीजिये साहब, तबीयत खराब है ऐसा क्यों नहीं कहते ? हमारे पास ढेर सारा पेनवाम है। सरमें दर्द मालूम हो रहा है क्या ? श्री ज़रा निकाल तो वाम । ”

“ मुझे कुछ नहीं हो रहा, आप अपना काम देखिये । ” पद्मकान्तने अपना दैनिक उठा कर पढ़नेकी चेष्टा की। श्री बोली—“ आदमी हैं पढ़े लिखे । ” रत्नमाला बोली—“ बरना अखबार न पढ़कर कोई कविता कहानीकी पुस्तक न पढ़ते ? ” इसपर दोनों फिर हँसने लगीं। पद्मकान्तने जब तक ग्वालियर न आ गया उनकी ओर न देखा ।

पूरा तौंगा करनेमें पूरे तौंगेका भाड़ा देना होता है। इसलिए पद्मकान्तने एक ऐसा तौंगा देखा जिसमें और सुसाफ़िर बैठे हों। कुछ देर बाद उसे ऐसा तौंगा भी मिल गया। उसमें एक और युवक बैठा था। पद्मकान्त भी चुपचाप बैठ गया। कुछ देर तौंगेवाला आवाज़ लगाता रहा, “ एक और सवारी ! बाड़ा ! तारा गंज ! दालका बज़ार ! ” कोई न आया। उस युवकने तौंगेवालेसे कहा, “ अब भाई चलो भी ? ”

तौंगा चल दिया तो युवक बोला—“ आप कहाँ जायेंगे ? ” पद्मकान्तने कहा—“ तारागंज ”। “ मैं भी वहीं रहता हूँ । ” वह युवक बोला। पद्मकान्तने कहा—“ तो फिर मिलते ही रहेंगे । ” पद्मकान्तके उसका नाम

पूछा। उसने बताया कि उसका नाम श्रीगम है और वह मिल-मजदूर-संघमें काम करता है। पद्मकान्तने उसका और उसने पद्मकान्तका पता नोट कर लिया। श्रीगमने उतरते हुए कहा—“आप जैसे सज्जन नौजवान मैंने कम देखे हैं। आप शायद किसी छोटी जगहके मालूम होते हैं। मैं काफी देर तक उन लड़कियोंका आपको बनाना देख रहा था। शिक्षाके यह मानी तो नहीं कि स्त्रियाँ बेहया हो जायँ ! इन लड़कियोंने को-एज्यूकेशनद्वारा बोल्ड होनेका यही अर्थ लगाया है शायद। फिर भी साहब, शहरमें इस तरहकी चीजें मामूली बातें हैं।” पद्मकान्तने हाथ जोड़कर कहा—“कभी उपस्थित होंऊँगा आपकी सेवामें ?” तौंगा चला गया। श्रीरामसे पहले दिनका उसका यही अल्प परिचय था।

६

कभी कभी परिस्थितियाँ भी मनुष्यको कुछका कुछ बना देती हैं। पद्मकान्त एक अच्छा उपन्यासकार बनकर एक अच्छा नागरिक बनना चाहता था। उसमें उपन्यासकार बननेकी प्रतिभा न भी हो अनुभूति अवश्य थी और यदि इस अनुभूतिको अनुकूल हवा मिलती तो उसकी महत्वाकांक्षाकी नाव अवश्य लक्ष्य तक पहुँच जाती। दर्जीके काम और उपन्यास-लेखकके बीच एक दड़ी खाड़ी थी जिसे पाटे बिना वह दर्जी रहते हुए उपन्यासकार नहीं बन सकता था। उसने अपने तात्कालिक पेशेसे समझौता किया और उपन्यास-लेखनको जारी रखनेका संकल्प किया। यहाँ फिर किसी सलाहकारकी उसे ज़रूरत थी। श्रीराम एक ऐसा व्यक्ति था जिससे उसे कुछ सलाह मिल सकती थी। इसके बाद जब जब भी कामसे जी उचाट होता तो उसे राजोका ख्याल आ जाता कि वह सिर्फ़ उसके असली योग्यताके दिनोंके लिये ही तो उसकी प्रतीक्षा कर रही है। मामा-मानीकी आशाएँ उसीपर केन्द्रित हैं। अब वह बूढ़े हुए। पद्मकान्त ज़िन्दगीको ज़रा करीबसे दूरकर देखनेका प्रयास करने लगा। उसे अक्सर अनुराधाके शब्द याद हो आते—“वह पतिकी मज़दूरीको भी सुख मानेगी...” उसके उपन्यासको ऐसी ही नायिकाकी ही शायद ज़रूरत है। पद्मकान्तने सोचा, अनुराधा कितनी बुद्धिमती लड़की है।

‘उसने अपने उपन्यासका छठा परिच्छेद लिखना आरम्भ किया। जिस समय एक भारतीय युवक नौकरी करने या कोई पेशा सीखने जाता है उस समय उसके सामने केवल वेतनका प्रश्न होता है जिससे पेट भरा जा सके। पेशे या नौकरीको पसन्द करनेका प्रश्न एकदम गौण होता है। शिक्षामें बहुत-सा धन खर्च होता है पर यह शिक्षा न तो कोई अच्छा पेशा सिखा पाती है और न धन-उपाजनका तरीका। वम शिक्षित आदमीके लिये केवल क्लर्कीका द्वार जरूर खुला रहता है जिसमें प्रवेश करनेके बाद आदमी किसी दूसरेके स्वरमें बोलता है। किसी संकुचित दायरेकी बात सोचता है। किसी तरह बाल-बच्चोंको पढ़ा लिखाकर मर जाना उसके लिये परम मोक्ष-सुख है।’

पद्मकान्त कपड़ोंके छोटे छोटे और बेकार टुकड़ोंपर काज बनाना सीख रहा था। उसने अधिक अँग्रेजी नहीं पढ़ी। वस हाईस्कूल पास किया है तो क्या हुआ, कुछ तो पश्चिमके विषयमें पढ़ा है। रूसकी शिक्षाप्रणाली उसे पसन्द है। जहाँ मा-बापके अलावा सरकार भी बच्चोंपर करोड़ों रुपया उनको अनुकूल शिक्षा देनेमें खर्च करती है। शिक्षाकेन्द्र केवल क्लर्क ढालनेकी फैक्ट्रियाँ तो नहीं हैं। पद्मकान्तका विद्रोही मन अजीबो-गरीब विचारोंसे भरा रहता। यहाँ पढ़ाईकी फीस भारी है। पुस्तकोंका खर्चा ज्यादा है। उसे कई दृश्य याद हो आये। मैले कुचैले बच्चोंको उसने दिन भर मय अपने मास्टर्सके फटे और गन्दे टाटोंपर जँघते देखा है। मास्टर अपनी नौकरी पूरी कर चलता बनता है। धीरे धीरे बच्चा जँचे स्कूलोंमें पहुँचता है। वहाँ पुस्तकोंका खर्चा बढ़ता है। मा-बाप कर्ज लेकर उसे पूरा करते हैं। पन्द्रह बीस वर्षके परिश्रमके बाद वह बनता है एक क्लर्क।

वह सोचते सोचते काज बनाना भूल जाता। इसपर दूसरे लड़के जो कृतई पढ़े लिखे न थे और उम्रमें उससे कहीं ज्यादा छोटे थे हँस पड़ते। पद्मकान्त अपने साथके इन दर्जी-उम्मीदवारोंमें मिलनेका प्रयास करता है किन्तु सिवाय तेलपानी जैसी सन्धिके और कुछ नहीं हो पाता। पद्मकान्त सचमुच कुछ ही दिनोंमें बहुत होशियार कारीगर हो गया। वह अब कटर भी है और दूकानका मुनीम भी। थूँ पढ़ा लिखा होनेके नाते बिल बगैरह भी वह पहले ही दिनसे तैयार करता था। दूसरे लड़कोंके लिये वह इसलिये भी श्रेष्ठ है कि

मालिक यानी रामेश्वरीके पतिका साला है और उसकी लिखाई पढ़ाईका लोहा इस मजदूर तबकेमें मान लिया जाना कोई मतलब नहीं रखता। रामेश्वरीका पति एक चालाक व्यापारी है। वह पद्मकान्तको खर्चके लिये कुछ पैसे रोजानाके अतिरिक्त कुछ भी न देता। सदा कहता रहता कि उसके बैसे रामेश्वरीके पास जमा हो रहे हैं।

ग्वालियर आये पद्मकान्तको तकरीबन एक वर्ष हो गया था। एक दिन बातों ही बातोंमें श्रीरामने पूछा—“भाई, तुम जो उपन्यास लिख रहे थे न, उसका क्या हुआ? मुझे दो तो मैं प्रकाशित करा दूँ।” पद्मकान्त बोला—“किन्तु अभी वह अधूरा है।” श्रीरामने सहानुभूतिसे कहा—“दिन भरकी कड़ी मेहनतके बाद उपन्यास लिखते बने भी कैसे?” पद्मकान्तने सफाई पेश की, “सो बात नहीं श्रीराम भैया, बात यह है कि फ़िलहाल मेरे पास कोई मसाला नहीं है।” श्रीरामने मज़ाक किया—“उपन्यास लिख रहे हो या अपनी डायरी?” पद्मकान्तने ठीक उपन्यासकारकी तरह कहा—“उपन्यासकार और उसके जीवनमें क्या अधिक अन्तर होता है भइया?”

श्रीरामने अपनी बात प्रमाणित होते देख कहा—“और नहीं तो क्या, वरना तुम्हारे पाँचवें परिच्छेदमें रत्नमाला और श्री जैसी ही दो लड़कियाँ ‘सिन्धु’ और ‘बिन्दु’ कहाँसे आ टपकतीं! हैं पद्म भैया, क्या यह नायिका और तुम्हारी सलाहकार सहेली भी सच्ची पात्रायें हैं?” पद्मकान्त बोला—“ऐसा मेरा भाग्य नहीं है श्रीराम भैया।” बात खत्म हो गई।

श्रीरामको पद्मकान्तसे मिलनेका ज़रा कम ही अवकाश मिलता है। श्रीराम मजदूर-संघके कार्यमें बहुत व्यस्त रहता। यूँ कभी कभी वह अपने कपड़े सिलाने आता तो घण्टे आध घण्टे बैठ जाता। अक्सर जब पद्मकान्तका दिल भारी होता तो रातको वह मजदूर-संघके दफ़्तरमें चला जाया करता। श्रीरामसे जैसे पद्मकान्तको काफ़ी सहारा मिलता। किसी भी रूपमें सही, श्रीराम, पद्मकान्तको निरुत्साह न होने देता। भावुकताके नामपर श्रीराम शून्य था। इसलिये उसे पद्मकान्तकी उपन्यास जैसी बातें कृतई समझने न आतीं। अगर वह अपनेको बहुत भावुक बनानेकी चेष्टा भी करता तो पद्मकान्तको ऐसा लगता कि श्रीराममें अनुराधाके बराबर भी समझ नहीं है। इसीलिये सिर्फ़ छठे परिच्छेदका थोड़ा

ही अंश वह श्रीरामको सुना सका। आगे उसने निश्चय किया कि श्रीराम जैसे नासमझ आदमीको उपन्यास सुनाना बेकार है। उपन्यास आगे बढ़ता जा रहा था, उसी रफ्तारसे जिस रफ्तारसे वह दर्जीका काम सीख रहा था। उसका बाकीका अवकाशका समय या तो रामेश्वरीसे बातें करनेमें बीतता या श्रीरामके साथ मजदूर-क्षेत्रोंमें घूमनेमें। रामेश्वरीकी बातोंमें उसे भविष्यका विवाहित पद्मकान्त मिलता और श्रीरामके भाषणोंमें उसे एक मजलूम इन्सान, जिसे पेशेके नामपर वर्गभेदके नामपर पीसा जा रहा है। आखिर उसकी यह धारणा हो गई कि वह भी उन करोड़ों मजदूरोंमेंसे एक बनने जा रहा है जिन्हें एक वर्ग सदा सताया करता है। और यह राजो उसी वर्गकी लड़की है। कैसा संयोग है यह? फिर वह राजोको छोड़ भी नहीं सकता।

अभीतक उसके विद्रोही विचार चूँकि पक्के नहीं थे इसलिये वह सोचा करता, सभी उच्च वर्गके लोग ऐसे थोड़े ही होते हैं। उसे श्रीरामके शब्द याद आते कि अर्थ सभी अनर्थोंकी जड़ है। थोड़ी-सी पूँजी पाकर इन्सान ज्यादा पूँजी पानेका प्रयास करता है और इसलिये वह शोषण शुरू करता है। यह शोषण पहले स्वजनोंसे शुरू होता है और इसका अन्त एक बड़े मानव-समाजका शोषण करके भी नहीं होता।

रामेश्वरीके पतिको इस श्रीराम नामके ग्राहकसे बहुत चिढ़ है। रामेश्वरीका पति चाहता है कि श्रीरामके साथ रहकर वह अपनी असली स्थिति न जान सके। सदा पद्मकान्त उसीके साथ रहे। पद्मकान्तसे उसे हर तरहकी मदद मिलती हैं। फिर अब तो वह बहुत दोशयार कारीगर हो गया है। यह वह खुद भी जानता है कि उसके खुदके हाथमें कोई खास सफाई नहीं है पर पद्मकान्तके हाथमें जो सफाई है वह ईश्वरीय देन है। उसे वह उसकी १५ या १६ वर्षकी पढ़ाई माननेको तैयार नहीं। कुछ भी हो ग्राहक उसकी बहुत प्रशंसा करते हैं।

पद्मकान्त जवसे आया तबसे लौटकर घर नहीं गया था। उसकी कई बार इच्छा भी हुई पर रामेश्वरीका पति उसे कोई न कोई बहाना बना कर रोक लेता। फिर वह स्वयं भी आदमी बनकर ही लौटना चाहता था। पद्मकान्तको दर्जीके कामसे बतौर पारिश्रमिक सिवाय चंद आनोंके और कुछ न मिलता। श्रीरामने बीस रुपयेकी ट्यूशनें लगा दीं थीं, उसका पैसा वह नियमित रूपसे

मामाको भेज दिया करता। अनुराधाको वह चाहकर भी न जाने क्यों पत्र न लिख सका। राजोको पत्र लिखा तो उसका उत्तर न आया। पद्मकान्तके मामाको पैन्शन मिले साल भरसे भी अधिक समय हो गया था। इसी बीच मामाकी अचानक बीमारीका सन्देश मिला। पद्मकान्तने मामाकी बीमारीकी बात रामेश्वरीके पतिसे कही। उसने सुनकर ज़बानी सहानुभूति प्रकट की। परन्तु जब पद्मकान्तने घर जानेको कुछ खर्च मांगा तो वह बोला—“मेरे भइया, किरायेका इन्तज़ाम कर दूँगा और तो मेरे पास कुछ है नहीं।”

पद्मकान्त बड़े असमंजसमें पड़ा। बिना खर्च वह कैसे? जाय अब शहरके अन्य दर्जियोंमें भी उसकी काफी जान पहिचान हो गई थी, इसलिये कुछ प्रयत्न करने वह भोला दर्जियोंकी दूकानपर गया। वहाँ कुछ और भी घनिष्ठ दर्जियों दोस्त बैठे थे। पद्मकान्तने अपने बहनोईके व्यवहारकी चर्चा तो न की बल्कि यही कहा कि उनके पास नहीं है। बालबन्धेदार आदमी हैं और उसका जाना ज़रूरी है। भोलाने उससे मामाकी बीमारी पर सहानुभूति प्रकट की, तो पद्मकान्तको लगा जैसे इस सहानुभूति और उसके बहनोईकी सहानुभूतिमें ज़मीन आसमानका अन्तर है। उसके जानेके खर्चके अतिरिक्त इलाजके लायक भी पैसेका इन्तज़ाम भोलाने कर दिया। भोलाने ज़रा साहससे कहा, “यह तो पदम मास्टर? कहनेकी बात है। क्या तुम्हारे बहनोईके पास सौ दो सौ रुपये न होंगे।” पद्मकान्तने इस बातपर पर्दा ही पड़ा रहना भला समझा। दूसरी दूकानका एक कटर बोला—“तुम्हारे बहनोई परसों इस्माइलकी दूकानपर कह रहे थे कि दो सालसे पड़ा खाता है और एक धेलेका काम करके नहीं देता। दिनभर यारोंसे फुसंत नहीं मिलती।” भोला बोला—“एक घण्टेको यहाँ आ बैठता है, तो दो पैण्ट काट जाता है। यह तो बेईमानी है उनकी।” पद्मकान्तने पूछा “और क्या कह रहे थे जीजा?”—“और क्या कहते, कह रहे थे” कटर बोला “कि काममें ऐसा मट्टा है कि अभी तक उसे कमीज़का तीरा (पीठकी पट्टी) काटना नहीं आता। जब इन्सानको मुफ्तका खानेको मिले तो वह काम क्यों करे? और अब तो वह पद्मकान्तसे तंग आ गये हैं।”

पद्मकान्त तटस्थ होकर यह सोचता रहा कि उसकी अपनी कमज़ोरीके स्थल कौन-से हैं जहाँ वह अयोग्य सिद्ध हुआ है, उसने शिथिलता दिखाई है। वह

जब काम सीखता था तब भी ढेर सारे कपड़ोंपर अस्तरी करता था। 'बिल' बनानेका काम भी उसीका था। अगर एक क्लर्क भी रखा जाता तो क्या ३०) ६० माहवरसे कम लेता ? आज साल भरसे वह रोजाना ५ या ६ रुपयेका काम करता है, सो सिवाय दो या तीन आने रोजके और क्या मिलता है। उसके पास कुल दो तीन जोड़े ही कपड़े हैं। उन्हें ही हाथसे धोकर अस्तरी करके वह पहन लेता है। जीजाने किया क्या है उसके लिये ? उसे अपने लश्कर आनेके बादसे आज तकके दिन पर्दे पर फिल्मकी तरह गुज़रते दिखाई देने लगे। जीजा आते हैं शामको हिसाब लेने, दिन भर या तो इस्माइलकी दुकानपर बैठे रहते हैं या रात रात भर तीन परी (तीन पत्ते) के नाचमें बैठे रहते हैं। आखिर पद्मकान्त इस निश्चय पर पहुँचा कि जो समर्थ हैं वे अपने धनके बलपर इन्सानकी आत्माको खरीदनेकी चेष्टा करते हैं, जैसे दूसरेकी न इज्जत है न मर्यादा। और जो दूसरोंके पेटपर लात मार सकता है वही तो धनवान् बन सकता है। पूँजीपतियों और जीजामें कोई अन्तर नहीं। पद्मकान्तका अधकचरा विद्रोही मन सोचता रहा। वह ज्यादा देर भोला दर्जीकी दुकानपर न बैठ सका।

वह रास्ते-भर सोचता आया। रामेश्वरीके व्यवहारमें अवश्य मृदुलता है। वह उसकी दालमें अपने पतिकी चोरीसे ज़रा अधिक घी डाल देती है। रातको चुपकेसे दूध भी पीनेको दे जाती है। रामेश्वरीके शब्द उसके कानोंमें गूँज रहे थे:—

रामेश्वरी कह रही थी—“दिन भर तू मेहनत करता है अगर खायगा नहीं तो काम कैसे करेगा ?” कभी कभी वह रामेश्वरीसे दो चार आने भी माँग लेता है। रामेश्वरी उसे सचमुच भाई मानती है। उसका पति—निरा व्यापारी है। उसे हर चीज़ व्यापारिक दृष्टिसे देखनेकी आदत है। यह आदत रामेश्वरीको भी खलती है।

दूसरे दिन पद्मने सुबहका खाना खाते खाते पूछा—“जीजी, एक बात पूछूँ, बताओगी ?” रामेश्वरीने अपने माथेका पसीना आँचलसे पोंछते हुए कहा—“क्या है पदम, तू आज ऐसा उदास क्यों हो रहा है ? पूछ ना, क्या मैं मना

करती हूँ ? ” “ यह बताओ, मेरे कितने रुपये तुम्हारे पास जमा हैं ? ” पद्मकान्तने प्रश्न करके रामेश्वरीकी तरफ़ देखा । रामेश्वरीने तअज्जुबसे पूछा—“ मैं तेरा मतलब समझी नहीं । ” पद्मने ढेर सारा पानी पीकर थाली एक तरफ़ सरका दी । रामेश्वरी कहती ही रही “ अरे आज तूने कुछ खाया नहीं भइया । ” पद्मकान्तने बहाना किया “ जीजी, मामाजी बीमार हैं । मैं धौलपुर जा रहा हूँ । ” रामेश्वरीने अपने इष्ट देवताका ध्यान कर कहा—“ ईश्वर सब मंगल ही करेगा भइया, तू खाना तो खाले । ” पद्मकान्त अबकी फूट पड़ा—“ जीजी, मैं तो कुत्ता हूँ मेरा खाना क्या ज़रूरी है ? मिला तो मिला, नहीं तो पूँछसे झाड़ कर कहीं भी सो गये । ” रामेश्वरीने पूछा, तू पागल हो गया है क्या ? पद्मकान्त कहता गया “ सच जीजी, दुनियाँ ईश्वरने चार ही प्रकारके कुत्ते सिरजे हैं :—

बहिन घर भाई कुत्ता, स्वसुर घर जमाई कुत्ता ।

कुत्ता पाले सो कुत्ता, कुत्ता सो है ही कुत्ता ।

मैं पहले नम्बरका कुत्ता हूँ । रामेश्वरीकी आँखोंसे टपाटप आँसू गिरने लगे । वह पद्मकान्तके पास आई और उसके सरपर हाथ धर कर बोली—“भइया, तू दुखी न हो । तुझे शायद किसीने बहका दिया है । या तेरे जीजाने कोई लगनेवाली बात कह दी है । उनकी तो आदत ही ऐसी है कि जो मुँहमें आया कह दिया । तुझे उनके कहेका बुरा नहीं मानना चाहिये । दिल तो उनका बड़ा साफ़ है । ”

पद्मकान्तने दुबारा पूछा—“तुम बताओ जीजी, तुम्हारे पास मेरे कितने पैसे जमा हैं ? ” रामेश्वरी उसी सरलतासे बोली—“ तूने कभी मेरे पास जमा तो किये नहीं, होंगे कहाँसे ? ” पद्मकान्तने कहा, “तो जीजा आज तक मुझे मूर्ख ही बनाते रहे कि तुम्हारे पास मेरे पैसे जमा हैं । ठीक है, तभी तो कह रहे थे कि मैं सुप्तखोरा हूँ । खून पसीना एक करके दिनभर काम करता हूँ उसीका नतीजा है यह । ”

पद्मकान्त चारपाई पर जा पड़ा । रामेश्वरी कहती ही रही “ तू जा दूकान पर जाकर उनसे कह तो सही कि आज तुझे घर जाना है । तेरे मामा बीमार

हैं।” पद्मकान्तने कहा—“कहा था जीजी, उनके पास तो किराये तकको रुपये नहीं हैं। मैं इसी तीन बजेकी गाड़ीसे जा रहा हूँ। भगवान तो सभीका है जीजी।” रामेश्वरीने पूछा—“और आयेगा कब?” पद्मकान्तने उदास स्वरमें कहा—“अब तो लश्करसे आबदाना उठ गया जीजी।” रामेश्वरीको अब पता लगा कि बात कुछ ज़्यादा आगे बढ़ गई है। पद्मकान्तके दिलपर ज़रूर बहुत गहरी चोट लगी है। गरीब कैसा सीधा लड़का है। उसे भी चैनसे नहीं खाने देते। फिर वह सोचने लगी कि नामको तो वह उसके पति हैं, पर हैं कितने कंजूस। उसे घरके वर्तन घिड़ते १० वर्ष हो गये, एक कहारिन आजतक न लगाई। न बाल न बच्चे। पैसेका क्या होगा? मेरे कफ़न या उनके श्राद्धमें लगेंगे। तभी रामेश्वरीने खुद ही अपनी ज़वान काट ली। ऐसे अमांगलिक विचार उनके प्रति मेरे दिलमें आये कैसे? वह मेरे पति हैं। परमेश्वर हैं। कितने जन्मोंकी साधनासे उन्हें पाया है। और सचमुच रामेश्वरी तुलसीके घरएके नीचे जा खड़ी हुई और मन ही मन बोली—“हे तुलसा महारानी, मैंने जो कुछ उनके लिये बुरा सोचा हो वह सब मेरे ऊपर पड़े। मैंने बड़ा पाप किया है। फिर वह तुलसीके घरएपर माथा टेककर कहने लगी, “मेरे पदमको सहारा देना तुलसा महारानी! वह जहाँ जाये सुखी रहे।”

रामेश्वरीका पद्मकान्त सगा भाई नहीं है, फिर भी वह पद्मकान्तको भाईसे भी बढ़कर चाहती है। पद्मकान्तकी भी कोई बहन नहीं है। हर आदमीमें (स्त्री हो या पुरुष) भाई या बहन पानेकी चाह होती है। वह किसीकी बहन हो, वह किसीका भाई हो। भाग्यसे भाई बहन नहीं होते तो वह किसी ग़ैरको भाई बहन बनाकर अपनेसे ज़्यादा समझते हैं। अक्सर ऐसे रिश्ते अटूट देखे गये हैं। यूँ तो अपने भी अपने नहीं होते। बहिन भाईको ज़हर दे देती है। मा बेटेको कुएँमें ढकेल देती है। बाप बेटेको क़त्ल कर देता है। भाई भाईके खूनका ग्राहक हो जाता है। यह सब सम्बन्ध सिर्फ़ सदृच्छा तक सीमित हैं। इसके बाद सब कुछ पाशविक है, असत्य है।

पद्मको जाना है और वह जाकर रहेगा। रामेश्वरीको यद्यपि यह मालूम है कि पद्मकान्तके मामा बीमार हैं इसलिये उसका जाना आवश्यक है परन्तु

मामाकी बीमारीके बाद तो वह लौट भी आता परन्तु अब जो उसका दिल टूट गया है सो क्या वह लौटकर आनेवाला है ? रामेश्वरी चाहती है, पद्मकान्त वापस लौट आये । वह पद्मकान्तको सिवाय एक बहनके अछूते प्यारके और क्या दे सकी है ? काश कि वह उसकी आर्थिक सहायता कर सकती । वह सोचती है, वह परतन्त्र है । उसका पति भी तो है जो उसकी बात कभी नहीं मानता ।

रामेश्वरीके पतिने दोपहरको घरमें घुसते ही कहा—“अजी ओ नवाबज़ादे, कहाँ हो ? इस तरह एक दिन भी निर्वाह होना मुश्किल है । मैं कबसे दूकानपर मर रहा हूँ । शादीके कपड़े कल ही देने हैं ।” रामेश्वरीने अपने पतिके पाँव धुलाये और चौकेमें ले गई । खाना परसकर धीरे धीरे रोज़हीकी तरह हवा करती हुई बोली—“उसे क्यों चुभनेवाली बात कह देते हो ? बेचारा जन्मका दुखयारा है ।”

“तो फिर क्या मैंने ठेका ले रखा है किसीके सुख दुःखका ?” रामेश्वरीके पतिने आँखें तरेर कर कहा, “पड़ा हुआ खाता है और गुराँता है ।” रामेश्वरीके आँसू बरसाती बादलों जैसे चू पड़े । उन्हें आँचलसे पौँछकर बोली—“बेचारा कितना काम करता है । सुबहसे दुकान खोलना । सफ़ाई करना । हिसाब किताब सँभालना । रात ग्यारह बजेतक कपड़े शिरोँक करना, और क्या चाहते हो मशीन हो जाये वह ?” रामेश्वरीका पति उसी तावमें बोलता रहा—“तुम्हें ऐसा काहिल आदमी प्यारा होगा, पर मुझे नहीं । मैं तो खुद मेहनती आदमी हूँ और मुझे प्यार भी मेहनती आदमीसे है ।” इसके बाद वह कानाफूसीमें बोला, “बिना इस तरह डाटे डपटे यह लोग काम जो नहीं करते, समझीं ? और फिर क्या वह कोई तुम्हारा सगा भाई है ?” फिर उसने अपनी आवाज़ ऊँची उठाई, “अरे भाई, मुन रहे हो ?” रामेश्वरीने कहा, “उसे कुछ रुपयोंकी ज़रूरत आ पड़ी है । उसके मामा बीमार हैं, कुछ प्रबन्ध कर दो न ?”

रामेश्वरीका पति चुप ही रहा । जब वह भोजन कर चुका तो रामेश्वरीने उसी थालीमें थोड़ा-सा और कुछ खाना परसकर खाना शुरू कर दिया और पतिसे विनयपूर्ण स्वरमें कहा—“देखोजी, उसके दिलपर बहुत चोट पहुँची है ।

वह अब लौटकर नहीं आयेगा। अगर अबकी तुम उसे समझा लो तो—” बात पूरी होनेसे पहले ही रामेश्वरीका पति गरजा, “मुझे तुम्हें उपदेश देनेकी जरूरत नहीं, समझीं! अगर वह जाता है तो जाये। बिना उसके मेरा काम तो रुकेगा नहीं। रुपये कहाँसे दूँ? दूकानका किराया तक तो दिया नहीं है!”

रामेश्वरीसे कुछ खाया न गया। वह जानती है कि उसका पति लाख व्यापारी बने परन्तु उसका धन उसके पास रहता तो है नहीं। वह सब तो रातको जुएमें लग जाता है, अगर कुछ बचता भी हो तो उसे कतई मालूम नहीं। लाख चेष्टा करनेपर भी वह अपने मनको यह कहकर न बहला सकी कि उसके पतिके पास रुपया नहीं है।

पद्मकान्तने रामेश्वरीके पतिके पाँव धूते हुए कहा—“जीजा, आज तककी मेरी गलतियाँ माफ़ करना। मैं हूँ ही बड़ा अभाग जो आप सरीखे देवता बहनोईको न खुश कर सका और न कुछ सीख ही सका।” रामेश्वरीके पतिने रुखाईसे कहा—“सो तुम काफी समझदार हो। पर यह तुम समझ लो कि दुनियाके किसी कोनेमें तुम सरीखे घमण्डी आदमीकी गुज़र हो जाना मुश्किल है।” जानेसे पहले रामेश्वरीने पद्मकान्तको, अपनी दोसालकी एक एक इक्की दुअनी करके इक्कीकी हुई पूँजी जो कुल पचास रुपये थी, देते हुए कहा—“जा पदम, भगवान तेरा मनोरथ पूरा करें।” पद्मकान्तने उस रेज़गारीकी पोटलीके भारीपनको महसूस करते हुए कहा—“जीजी, यह तो मुझसे नहीं होगा। तुमने न जाने कितने कष्ट सहकर यह रुपये बचाये हैं?”

रामेश्वरी पद्मकान्तके कन्धेपर क्षर धर फपक फपक कर रो उठी—“मेरे राजा भइया—” रामेश्वरीने हँधे कण्ठसे कहा, “अगर तू मना करे तो मेरा मरा मुँह देखे।” पद्मकान्तने लश्करसे अपनी छोटी-सी दुनिया रामेश्वरीके चरण छू—उन पर दो बूँद आँसू गिरा समेट ली।

गाड़ी उसे जिस बेगसे ग्वालियर ले आई थी, उसी बेगसे वापस घर लौटाये लिये जा रही थी।

पद्मकान्तके उपन्यासमें इस यात्राके सम्बन्धमें कोई लिखित वर्णन नहीं मिलता ।

७

पद्मकान्तकी दौड़-धूपके बावजूद भी मुन्शी रमाचरण न बचे । पद्मकान्तको मामाकी मृत्युसे ठीक वैसा ही धक्का लगा जैसा कि उसे अपने पिताकी मृत्युसे लगता यदि वह उस समय समझदार होता । पद्मकान्तने दाह-कर्म किया । तेरह दिन बाद जब कि तेरहवीं हो गई तब पद्मकान्तने मामीसे कहा कि अब वह बम्बई जाकर कुछ काम करेगा, पर मामीकी इच्छा कुछ दिन अपने मैके जाकर रहनेकी थी । पद्मकान्तको इसमें क्या आपत्ति होती ! वह उन्हें उनके मैके पहुँचानेपर राजी हो गया । मैका तो मामीके ज़रूर था पर न तो बूढ़ी मामीकी मा ही जीवित थीं न बाप और न भाई । हाँ, भतीजे ज़रूर थे । मामी अपने भाई बहिनोमें सबसे छोटी थीं ।

मामीने—जिस दिन पद्मकान्त मैके छोड़कर लौट रहा था—कहा, “बेटा, अगर तेरी बहू आ जाती तो मैं अपनी आँखें तृप्त कर लेती ।” पद्मकान्त चुप रहा । मामी स्नेहभरे स्वरमें बोलती रहीं—“और तेरे मामाकी आत्माको भी शान्ति मिलती । बोल करेगा ब्याह ?” पद्मकान्त जानता है कि राजोसे सम्बन्ध होनेमें अभी कुछ कठिनाइयाँ हैं, इसलिये मामी किसी दूसरी सुन्दर लड़कीको अपनी बहू बना लेनेकी अत्यन्त इच्छुक हैं । वह बोला—“मामी, मेरा विचार अभी विवाह करनेका क़तई नहीं है ।” मामीने पूछा—“भला मैं भी सुनूँ, क्यों नहीं है ।” पद्मकान्तने दलील दी “मैं जब तक इतना धन न कमा लूँ कि हमारी गृहस्थीकी नाव सुखसे पार लग जाय तब तक तुम्हीं बोलो मामी, किस बिरतेपर ब्याह कर लूँ ?” मामी क्या आसानीसे मान जानेवाली थीं, कहने लगीं—“जब मैं ब्याह कर आई थी तो जानता है तेरे मामाको क्या तनखाह मिलती थी ? अरे मेरे भइया, कुल १० रुपये । लेकिन मेरा भाग्य कि मेरे आते ही १५ तनखाह हो गई, और बेटा, आमदनी ऐसी कि दोनों हाथोंसे खर्च करते भी पैसेकी कमी न होती थी । बड़के भाग होंगे तो तुझे भी ऐसी भगवान् देगा । मुझे तू ‘हाँ’ या ‘ना’ का जवाब दे, दे मैं इसी ‘आखातीज’ को तेरी भोंवरें पड़वा दूँ । मेरे जीते जी तेरा घर तो बस जाय ।”

पद्मकान्तने व्याकुल हो कहा—“सो तो मामी, ठीक है कि उस सस्ते ज़मानेमें १५ रुपयेमें भी गृहस्थी चल सकती थी। लोग चला ले गये। फिर मामाजीको ऊपरकी आमदनी भी थी, वरना क्या १५ रुपये कोई ऐसी बड़ी रकम तो कही नहीं जा सकती जिसके बलपर कोई शादी कर ले। मामी, मैं तो मज़दूर हूँ। मुझे रोज़ जितनी मेहनत करनी उतनी ही मेरी आमदनी। मुझे ऊपरी आमदनीका तो कोई ज़रिया नहीं और मुझे तुम तो जानती ही हो मामी कि सरकारी नौकरीसे बहुत चिढ़ है। सरकारी नौकरीमें तो नामको तनखाह होती है, काम चलता है रिश्ततसे। किसीका काम अटकाओ तो कोई पैसे दे, वरना किसीके पास फालतू पैसा तो होता नहीं। मजबूरीमें आदमी रिश्तत न दे तो क्या करे ? ”

मामी कहने लगीं—“क्यों रे, शहरमें रहकर बड़ी बातें बनाना सीख गया है, पर मैं तो बिना तेरी मदिया बसाये नहीं मरनेकी।” मामीने जाते जाते कहा—“तू मुझे धौलपुर जाते ही चिट्ठी लिखियो।”

पद्मकान्तका स्वर तरल हो उठा, “मामी, एक तुम ही हो मेरे ऊपर। भला, जिस दिन तुम्हारा साया उठ जायगा उस दिन किसकी मासे मा कहूँगा ? तुम सदा मामी अपने मरनेकी बात भला क्यों ज़बानपर लाती हो ? ” पद्मकान्तको यह कहना ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके दिलके किसी नर्म कोनेसे खुद-ब-खुद यह आवाज़ आ रही हो—जहाँ एक बच्चे-लड़के या युवाका माके लिये प्यार संचित होता है। उसकी आँखें सहज ही सजल हो उठीं। उसे अपनी माकी तनिक भी याद नहीं। पद्मकान्तकी आँखोंके आँसुओंमें मामीको सब भूले विसरे साफ़ साफ़ दिखाई दे गये। मामीके आँसू जैसे एक बार फिर बाँध तोड़कर बह चले। बोली, “आज कहीं नन्दजी (पद्मकान्तकी मा और उनकी ननद) और नन्दोईजी जिन्दा होते तो कितने खुश होते, यह देखकर कि उनका पदम कितना लायक हो गया है।” पद्मकान्त मामीके वक्षमें मुँह छिपा रोने लगा। मामीने उसे धीर बाँधाते हुए कहा—“रोता है पगले, मैं जो तेरी मा हूँ।” पद्मकान्त जिस दिन जानेको हुआ उस दिन उससे कुछ खाया पिया नहीं गया। उसे रह रहकर उबकाई आती थी। आखिर मामीने उसे विदा करते हुए कहा—“तू क्या लड़की है ! लड़कोंकी तरह हिम्मत होनी चाहिये तुझमें।”

मामीका अन्तिम अनुरोध यह था कि वह किसी भी लालचमें बन्धवई न जाये। लड़ाईका ज़माना है। आज सब ठीक है, तो कलका कोई भरोसा नहीं।

पद्मकान्त वापस लौटनेके बाद एक महीने तक अनुराधासे स्वतन्त्र रूपसे न मिल सका था। यूँ वह मामीके पास (मामीकी मृत्युके बाद) उनका जी बहलानेके खयालसे आती जाती रही। पद्मकान्तको इस वक्त सबसे ज्यादा ज़रूरत थी अनुराधाकी सलाहकी। उसने राजोसे मिलना भी एक तरहसे स्थगित ही कर दिया था।

पद्मकान्त अपने दूटे और पुराने मकानमें साँझको बैठा था। शिवालयसे सदाकी तरह घण्टे घड़ियालकी आवाज़ आ रही थी। परन्तु इस आवाज़में अब पहला जैसा जादू न था। अब तो जैसे सोगका कोई राग उसमें बजता है। धीरे धीरे पद्मकान्तके आसपास गहरा अन्धेरा छाने लगा। पद्मकान्त सोचता हुआ बैठा रहा।

अनुराधाने शिवालयके बाहर आकर दो चार बार देखा तो पाया कि पद्मकान्तके घरमें रोशनी नहीं दिखाई देती। गो उसे सूचना मिल चुकी थी कि पद्मकान्त सुबह वापस लौट आया है। आखिर लालटेन हाथमें लिए हुए अनुराधा निकल पड़ी। वह जब पद्मकान्तके दरवाज़ेपर आई तो उसने पाया कि दरवाज़ा ठीक तरहसे बन्द भी नहीं किया गया है। अनुराधा अन्दर पहुँची तो उसने पाया पद्मकान्त खोया-सा बैठा है। अनुराधाको लालटेन लिये हुए आते देखा तो चौंका — “कौन ? अनुराधा, तुम हो ?” अनुराधाने कहा — “यह क्या पदम, कोई इस तरह भी दुख मानता है। मामा तो बड़े बूढ़े थे। बड़े बूढ़ोंको एक न एक दिन अवश्य जाना ही पड़ता है हमें छोड़कर। अब तुम खुद भी तो काफ़ी समझदार हो।”

पद्मकान्त उठ बैठा। अनुराधासे अनुनयके ढंगमें कहा, “बैठो अनु, शायद दो वर्ष बाद आज हमें बात करनेका अवसर मिल रहा है। क्यों ठीक है ना अनु ?” अनुराधाने किञ्चित् मुस्कराकर कहा — “अनुराधाकी कुशल-क्षेम भी बिना पूछे तुम मानोगे नहीं, सो मैं अच्छी तरह हूँ—बाबा मजेमें हैं। हाँ, यह तो बताओ कि घरमें लालटेन या चिराग़ कुछ है या नहीं ?” पद्मकान्तके

उदास चेहरेपर गुलाबी हँसी बिखर गई। पद्मकान्तने अनुराधासे कहा—
“ ज़रा तुम ही खोजकर जला दो तो क्या कोई हर्ज है ? ”

अनुराधा लालटेन लिये हुए अन्दर चली गई और कहती गई, “ दो मिनट और अन्धेरेमें बैठोगे तो डरोगे तो नहीं ? ” पद्मकान्त बोला—“ अब अनु, तुम्हारे आनेके बाद डरनेका कोई कारण तो दिखाई देता नहीं । ”

अनुराधा कुछ देर बाद दूसरी लालटेन जलाकर ले आई। पद्मकान्त कहने लगा, “ अब देखो न अनु, कितनी अजीब बात है यह कि मुझे मेरे घरकी ही चीज़ोंका पता नहीं ? ”

अनुराधाने इस प्रश्नकी उपेक्षा नहीं की बल्कि उसका स्वागत करते हुए कहा, “ तब भी क्या तुम अपना विवाह कुछ जल्दी नहीं कर सकते हो ? ”

पद्मकान्तको तो इसी वाक्यकी आवश्यकता थी ताकि वह अपनी बात कह सके। वह बहुत गंभीर लहजेमें बोला—“ अभी सही अर्थोंमें इन्सान बनना बाकी है। किसी दर्ज़ीके यहाँ कटरकी नौकरीसे अपनी छोटी-सी दूकान ही सही वह भली है। नौकरीमें क्या कोई सुख है अनु ? ”

“ तो फिर दूकानके लिये इतनी देर क्यों कर रहे हो ? जब दूकान करनी ही है तो फिर कर डालो । ”

“ उसके लिये भी थोड़े बहुत पैसेकी ज़रूरत होती है । ”

अनुराधा कुछ सोचमें पड़ गई। इसी समय पद्मकान्तको अनुराधाके दिये हुए बुन्दोंका खयाल आया। उसने अनुराधावाला डिब्बा निकाला आर अनुराधाको वापस करते हुए कहा—“ मैं बहुत कोशिश करनेपर भी वेच न पाया। सोचो अनु, क्या यह अन्याय नहीं है कि मैं तो तुम्हें कभी कुछ देने योग्य हुआ नहीं और तुम्हारा ले लेकर अपने सरपर एक बोझ क्यों इकट्ठा कर लूँ ? ” अनुराधा इसपर खिलखिलाकर हँस पड़ी। बोली—
“ वापस कुछ पानेकी आशासे तो मैंने तुम्हें वह दिये नहीं थे और अगर कभी तुम्हारी इच्छा कुछ देनेकी ही होगी तो मैं छोटी मोटी चीज़ लेकर ही तुम्हारा पिण्ड छोड़ देनेवाली नहीं हूँ। अपनी अनुको इतनी भोली ना समझना ? ”

पद्मकान्तने अनुराधाकी इस बातका उत्तर न देकर कहा—“ और जब किसी योग्य होऊँगा तो मैं तुम्हें भूल जानेवाला तो हूँ नहीं, इतना विश्वास तो तुम्हें मुझपर शायद है न ? ”

पद्मकान्तने अपनी स्थितिको ध्यानमें रखकर अनुराधासे पूछा “ और अनु, अगर मैं अब बम्बई जाकर कुछ पैसा कमा लूँ तो कैसा रहे ? फिर तो मुझे लोग ढंगका आदमी कह सकेंगे न ? ” अनुराधा अबकी फिर हँस पड़ी, “ अगर बम्बईमें धन इसी तरह बरसता है तो वहाँ सब लोग कुबेर ही होंगे ? ” पद्मकान्तने जैसे अनुराधाके तर्कपर अपनी दलील देनेकी चेष्टा की, “ सो बात नहीं । वहाँ भी कड़ी मेहनतका पैसा पैदा करना होता है । हाँ, यह बात नहीं है कि आदमीको करनेके लिये कोई काम न हो । ”

अनुराधाने तर्कके भावसे कहा—“ अगर इसी तरह सारे देशके लोग बम्बई कलकत्ते भागेंगे तो कुछ दिनमें सिवाय बम्बई कलकत्तेके सारा देश वीरान हो जायगा । ”

पद्मकान्तने बम्बईकी ज़िन्दगीके बारेमें काफी सुना था, बोला—“ सो तो वहाँ आज भी लाखों आदमी सड़ककी पटरीपर सोते हैं । ”

अनुराधा हँस पड़ी, “ तो फिर बेकार जाकर वहाँकी आबादी बढ़ानेसे क्या लाभ ? अभी लोग सड़ककी पटरीपर सोते हैं फिर उन्हें सड़कपर सोना पड़ेगा । इससे तो अपना घर अच्छा । हाँ पदम, क्या तुम यहाँ किसी तरह छोटी-सी दूकान नहीं खोल सकते ? ” पद्मकान्तने फिर अर्थकी बात कही । अनुराधा बोली, “ कुछ भी हो, बम्बई तो मैं तुम्हें इस लड़ाईके ज़मानेमें जाने नहीं देनेकी । अगर मामी यहाँ नहीं हैं, तो क्या मैं तुम्हारी कोई भी नहीं हूँ ? ”

पद्मकान्तको रातभर यह सोचना पड़ा कि अनुराधा आखिर कौन है उसकी ? इसका कोई उत्तर उसके मस्तिष्कको न सूझा किन्तु एक निष्कर्षपर वह अवश्य पहुँच गया कि वह चाहे कुछ भी न हो पर उसे इस तरह रोक लेनेका अधिकार तो ज़रूर है ।

पद्मकान्तने अपने उपन्यासमें यह तो कहीं भी नहीं लिखा कि दूकानके लिये रुपयेका जो प्रबन्ध हुआ उसमें किस किस हितचिन्तकने कितना भाग

दिया। हाँ हकीम उल्फ़तहुसैन और हैड कौन्टेबिल अहमद हुसेन इन दोनोंने किसी तरह प्रबन्ध कराया। इस दूकानमें खर्च होनेवाली रकममें अनुराधाने भी एक बड़ा भाग दिया था जिसे पद्मकान्त समझता था कि उसने अपने बुन्दे, पेरोंके लच्छे और झौझन बेचकर ही प्राप्त किया होगा। पद्मकान्तकी दूकान खुल गई। मुहल्लेके लोगोंने उसे कामकी कमी न रहने दी।

पद्मकान्तका अब एक ही ध्येय था कि वह जल्दीसे जल्दी उन लोगोंका धन किसी तरह वापस कर दे। इसके अतिरिक्त अब भी वह दो तीन दिन बाद राजोके यहाँ अवश्य हो आता। राजोसे बातें करता। राजो अब बी० ए० में पढ़ती थी और छुट्टियाँ बिताने घर आई हुई थी। राजो अपना अधिक समय पढ़ने लिखनेमें व्यतीत करती किन्तु पद्मकान्तको कभी भी उसकी ओरसे उपेक्षाका भास न हुआ। राजोके खयालसे पद्मकान्त काफी दिलचस्प आदमी था।

एक दिन राजोकी माने पद्मकान्तसे पूछा, “पदम, क्या कमाते हो?” पद्मकान्तने महीने भरका हिसाब लगाकर बताया कि वह १५०) रुपयेके करीब बचा लेता है। बाकई यह रकम लड़ाईके ज़मानेमें भी बड़ी ही समझी जाती थी। राजोकी माने कहा—”तो फिर अब देर क्यों कर रहे हो? कहो तो तुम्हारी मामीको हम लोग चिट्ठी लिख दें, लड़की देखने सुननेमें अच्छी है।” पद्मकान्तको समझमें कुछ न आया। लड़की देखने सुननेमें सुन्दर है, इसके लिये प्रमाणकी क्या ज़रूरत है?

पद्मकान्तका विश्वास अब और गहरी जड़ें पकड़ता जा रहा था कि राजोको उससे ब्याह देनेमें जज साहब या राजोकी माको कोई आपत्ति न होगी। यह दूसरी बात है कि इस बीच मामाकी मृत्युने जो व्यवधान उपस्थित कर दिया है उसे हटते देर लगे। मामाको जज साहब भी काफी मानते थे। बाबू रामलाल और उनकी पत्नी तो फ़िलहाल यहाँ हैं ही। यह लोग भी बातचीत पक्की कर सकते हैं। इसीलिये उस दिन पद्मकान्त बाबू रामलालके यहाँ रातको गया। बाबू रामलालको अब जीवनसे कुछ विरक्ति-सी हो गई थी। उन्होंने पीना मानो एकदम त्याग दिया था। पद्मकान्त आया तो जैसे मुन्शी रमाचरणकी याद

ताजा हो गई। बूढ़े रामलालकी धुँधली आँखें सहज ही भीग उठीं, बोले—बेटा, तुम्हारे मामाके मरनेसे मुहल्ला ही सूना हो गया और तू तो जानता ही है बेटा, कि हम दोनों एक आत्मा दो शरीर थे। अब तो यही जी चाहता है कि मैं भी उन्हींके पास पहुँच जाऊँ।” बात पूरी होने भी न पाई थी कि छटंकीकी मा कमरेमें आती हुई बोलीं—“ऐसी अशुभ बातें सही सौझ कोई करता है ? हाँ पदम, तुम्हारी दूकान कैसी चल रही है ?” पद्मकान्तने पाया कि बाबू रामलाल लाख विरक्त होनेकी चेष्टा करें उन्हें गृहस्थीकी गाड़ी ढकेलनी ही है। छटंकी अपनी माके पीछे शर्माती हुई आई। वह पद्मकान्तको नहीं पहचानती। यूँ बुलानेसे वह किसीके पास भी चली जाती है। पद्मकान्तने छटंकीको ग्वालियरसे आनेके बाद पहली बार देखा सो बात नहीं है। बल्कि अब यहाँ उसका रोज़का आना जाना नहीं है इसीलिये वह अधिक हिल नहीं पाती है। पुरानी जान पहचानकी उसे तनिक भी याद नहीं।

वास्तवमें छटंकी अब बहुत सुन्दर लगती थी—अब तो वह खूब चटपटी बातें करती है। पद्मकान्तके नज़दीक छटंकी अब भी वह है किन्तु उसे देखकर अब उसमें पुराने पितृत्व जैसे भाव कतई पैदा नहीं होते। उसकी कल्पनाकी छटंकी किसी भी हालतमें बड़ी हो नहीं पाती। वह तो उस उम्रकी हर छटंकीको प्यार करता है जो तुतलाकर बोलती है—जो पूरी तरह चल नहीं सकती। यह छटंकी जो आज भी है, जो बातें भी कर सकती है इससे पद्मकान्तको मोह तो है किन्तु यह मोह वैसा ही है जैसे छोटे भाई बहिनोके प्रति होता है।

छटंकीकी माने पूछा—“खाना खाकर तो क्या आये होंगे ?” पद्मकान्तने निसंकोच कहा “हाँ मामीके जाने बाद हाथसे ही ठेकनी पड़ती हैं। छटंकीकी मा बुद्धिमती है, यह बात पद्मकान्त सदासे स्वीकार करता आया है और आज भी। छटंकीकी माने पूछा—“तो पदम, फिर भी तुम शादीके नाममें चुप्पी साधे बैठे हो ?” पद्मकान्तने बाबू रामलालकी ओर देखा, वह छटंकीको गोदमें लिये कह रहे थे—“छटंकी बेटी, तू पदम भाईसाहबसे क्यों नहीं बोलती ?” छटंकी शिकायत कर रही थी—“यह टाफी नहीं लाते। कुछ भी नहीं लाते।” पद्मकान्तने उसे गोदमें उठाते हुए कहा—“अच्छा, इसीलिये क्या तू नाराज़ रहती है ? उसे गोदमें लिये हुए पद्मकान्त छटंकीकी माके

इशारेपर अन्दर चला गया। अब वह खुलकर बातें कर सकता है। छटंकीकी माने पूछा, “दिनभर मशीन चलाते हो, भूख तो खूब लगी होगी।” पद्मकान्त उनसे भी मामी कहता था, बोला “मामी, वह भी क्या पूछनेकी बात है?” छटंकीकी माने कुछ नाश्ता करनेको दिया। खाना उनके यहाँ हमेशा ज़रा देरसे बनता है। नाश्तेमें छटंकीको भी शामिल करना पद्मकान्त न भूला और छटंकी भी इस अधनिष्ठताकी बात मिठाई खानेके मामलेमें बीचमें न लाना चाहती थी। छटंकीकी मा बोलीं, “यह अभी तक तुम्हें भूखा नहीं है भैया।” पद्मकान्त उनकी ओर देखने लगा कि आखिर इनमें भी इन कुछ वर्षोंमें कोई अन्तर पड़ा है या नहीं। छटंकीकी मा बोलीं—“खाना खाकर जाना पदम।” पद्मकान्तने मना करनेके लहजेमें कहा “नहीं मामी, खाना मैं जाकर बनाऊँगा।” मामीने पद्मकान्तके मर्मको छेड़ा। “तभी तो कहती हूँ, ब्याह कर लो, रोटी पानीका तो आराम हो जाय।” पद्मकान्तको उनका यह वाक्य अच्छा तो लगा किन्तु उसकी सहज कल्पनामें केवल एक ऐसी ही स्त्री न थी जो केवल रोटी पानीका आराम दे सकती है। उसके सपने इस गृहस्थी और गरीबीके विचारोंसे ज़रा कुछ ऊँचे थे। फिर भी बातें करनेके लिये यह वाक्य भूमिकाकी शक्लमें बुरा नहीं है। बोला “आजकल मामी भी यहाँ नहीं है, इसलिये क्या कहूँ? तकलीफ़ की! सारे दिन मशीनपर काम करनेके बाद क्या किसीका जी चूल्हेमें सर देनेको होता है!” छटंकीकी मा बोलीं—“सो क्या हुआ, हम लोग भी तो उसी तरह हैं।” छटंकीकी मा और पद्मकान्तकी बातोंमें यह तय हुआ कि छटंकीकी मा किसी बहानेसे जज साहबके यहाँ अवश्य जायेंगी और उन लोगोंका इरादा मालूम करेंगी।

बाबू रामलालको भी पद्मकान्तके ब्याहकी काफी कुछ फ़िक्र थी। पद्मकान्तके जाते जाते बोले, “भाई, अब तो तुम्हे शादी कर ही लेनी चाहिये। भगवानकी दयासे काफी समझदार हो और बारोजगार भी। पद्मकान्तने रामलाल बाबूकी बातका छोटसे वाक्यमें उत्तर दिया—“आप लोग भी तो बुजुर्ग हैं। आपका कहा मानना मेरा फर्ज है।”

पद्मकान्त दूसरे दिन राजोके यहाँ गया तो सीधा राजोके कमरेकी तरफ़ ही जा रहा था। पद्मकान्तकी राजोकी माको कई दिनसे तलाश थी। उनूके

भाईके पत्रपर पत्र आ रहे थे। भला राजोकी मा भतीजीके हाथ पीले करवाने जैसे शुभ कामका पुण्य क्यों न लूटती ? बोलीं—“ आज किधरसे सूरज उदय हुआ है पदम बाबू, कुछ मालूम है ? ” पद्मकान्तके पाँव रुक गये, बोला—“ क्या करूँ, दुकानके कामके कारण अवकाश ही नहीं मिलता । ” पद्मकान्त उत्तर देकर आगे बढ़नेवाला ही था कि राजोकी माने ऊँचे स्वरमें नौकरोंको ताकीद दी—“ कहाँ मर गये सबके सब ? ” किसी नौकरने धीमेसे पास आकर पूछा, “ क्या बहूजी ? ” राजोकी माने कुर्सी लानेको कहकर पूछा—“ तो पदम बाबू, दुकान तो अच्छी खासी चल रही है न ? ”

“ हाँ, ” पद्मकान्तने छोटा-सा उत्तर दिया। पद्मकान्त खास तौरपर राजोकी मासे जब बातें करता है तो बहुत ही सोचे और समझे हुए वाक्योंका प्रयोग करता है। वैसे भी पद्मकान्तकी आदतमें अधिक बातें करना शामिल कभी नहीं रहा। दूसरोंकी बातें सुननेके लिये उससे अच्छे श्रोता कम ही लोग होते हैं। कुछ देर खामोशी-सी रही। पद्मकान्त अपनी ओरसे बोलनेका प्रयास ज़रा कम ही करता था। पद्मकान्तकी इस बदलती हुई आदतको राजोकी माने उसकी बुद्धिके पकनेका प्रमाण समझा। बोलीं—“ तुम तो खुद समझदार हो पदम,—तो कुछ बचा भी रहे हो या नहीं ? ” पद्मकान्तने कहा, “ हाँ, कुछ तो ज़रूर बचा ही लेता हूँ। यूँ काममें अभी कुछ ज्यादा बरकत नहीं होती, नया काम है न ? ”

राजोकी माने घुमा फिरा कर कहा—“ हाँ तो भाई, कब तक शादी कर लेनेका खयाल है तुम्हारा ? आज कल तुम्हारी मामी भी यहाँ नहीं हैं, वरना मैं खुद तुमसे कभी इस सम्बन्धमें बातें न करती और भई, अब तो लड़कोंसे ही सब कुछ पूछनेका ज़माना आ गया है । ” पद्मकान्त चुप रहा। राजोकी मा किसी तरह पद्मकान्तके मर्मकी बात न जान सकी ? उन्हें हर पल यह शंका लगी रहती थी कि कहीं पद्मकान्त मना न कर दे। इसी लिये बोलीं, “ पदम बाबू, तुमने जवाब नहीं दिया । ” पद्मकान्तने उनकी शंकाका समाधान किया—“ बदायूँवाली मामी (छटंकीकी मा) भी तो मेरी मामीके स्थानमें है। आपको उनसे बातें कर लेनेके बाद कोई कठिनाई न होगी। रामलाल मामा मेरे

मामाजीके स्थानमें है । उनसे भी आपको मेरे मामाकी कमी पूरी हो जाती दिखाई देगी । ” “ सो तो है ही, ” राजोकी मा खुश होकर बोली—“ थोड़े बहुत ज़ेवर तो तुम्हें बनवाने ही होंगे पद्मबाबू,—मेरी मतलब है कुछ नये फैशनके । ज़रा शोभा हो जायगी उस समय । फिर आखिर रहेगा तो तुम्हारे ही घरमें । ” पद्मकान्तने पूछा—“ क्या क्या ज़ेवर फैशनमें है ? ” वह बोली, “ यह तो मुझे भी अच्छी तरह मालूम नहीं । रोज़ ही तो फैशन बदलते हैं । राजोसे पूछ देखो । ” राजोकी मा बोली, “ वह अपने कमरेमें पढ़ रही होगी । वह तुम्हारी काफी मदद कर सकेगी । ” पद्मकान्त वहाँसे उठकर राजोके पास आया । राजो इस समय हारमोनियमपर किसी गीतकी पक्तियाँ लयमें बिठा रही थी । पद्मकान्तको आते देखा तो सरपर पल्ला ज़रा ठीक तरह ओढ़ती हुई बोली—“ रास्ता भूल गये हैं ? ” पद्मकान्त किंचित् मुस्कराया, “ हाँ भूल-सा ही गया हूँ, तुम्हारा विचार ग़लत भी नहीं है । ” राजोने पूछा—“ शरबत पियेंगे ? ” पद्मकान्त इस आग्रह अनुरागको भला किसे बिरतेपर ठुकरा दे ! शरबत भी राजो स्वयं बनाकर लाई । यह कुछ नई-सी बात थी । पद्मकान्त इस छोटेसे परिवर्तनका ज़्यादा विश्लेषण न कर सका । राजोकी माका भी कर्त्तव्य है कि अपने भावी दामादकी खातिर करें और राजो अगर कुछ करती है तो यह सब उसीके पतिके लिये तो है । पद्मकान्त अब तो काफी प्रौढ़ प्रकारका उपन्यासकार होता जा रहा है ।

राजोने ज़रा रूठनेके लहजेमें कहा—“ आपको भला आज भी फुर्सत मिल कैसे गई ? ” पद्मकान्तने मोहकी दृष्टिसे राजोकी ओर देखा । राजोने चुटकी ली, “ बड़े खुश दिखाई देते हैं ? शादी हो रही है आपकी, क्यों ? ज़रा हम भी तो सुनें उनके रूप गुणकी चर्चा ? ” पद्मकान्त राजोकी इस नाटकीय ढंगकी बातचीतका उत्तर नाटकीय संवादसे तो न दे सका, हाँ औपन्यासिक सूझ उसकी भी कम नहीं है । बोला—“ ऐसी लड़कियाँ इस धरतीपर किसी शापके कारण ही उत्पन्न होती हैं । वास्तवमें वह स्वर्गकी अप्सरायें हैं । ” राजोने ज़रा दिलचस्पीसे पूछा—“ अपनी पत्नीकी तारीफ़ कोई इस तरह भी किया करता है और वह भी ख़ास कर पत्नीके निकटसम्बन्धीके सामने ? ” पद्मकान्तने इस मज़ाकको जैसे समझकर कहा, “ सिफ़ारिश पहुँचानेका

यह तरीका कौटिल्यकी कूटनीतिमें है । ” राजोने इसपर मुस्कराते हुए अपनी चोटी वक्षपर डाल ली और उससे खेलती हुई बोली, “क्यों जी, उस सिफारिशको वहाँ तक पहुँचा देनेके लिये क्या दलाली मिलेगी ? ” पद्मकान्त बोला—“मेरे पास जो कुछ भी है सब कुछ सौंप दूँगा ? ” राजोने चोटीको कलाईमें लपेटते हुए पूछा—“वह ‘कुछ’ क्या है पदमजी ? ” पद्मकान्त बोला—“तुम नहीं समझोगी । ” राजोने और चुटकी ली, “अच्छा साहब, उन्हें ही समझाइयेगा, पर एक निवेदन दासीका स्वीकार कर लीजिए कि जब अपनी उन्हें आप समझाने लगें तो छिपकर किवाड़के पीछेसे ही गुननेके सौभाग्यसे वंचित न करें । ” पद्मकान्तने राजोकी ओर देखा । वह तो अब भी चोटीसे खेले जा रही थी । राजो चंचल है, यह तो पद्मकान्त अच्छी तरह जानता है और सदा ही राजोके सामने उसने अपनेको गंभीर रूपमें रखा है, पर इस वक्त भी उसे उसकी बातका जवाब देना आवश्यक है । पद्मकान्तने गंभीर होते हुए कहा, “कालिजकी पढ़ाईसे क्या वाक्शक्ति सचमुच बहुत बढ़ जाती है ? ” राजोने बातचीतके दरम्यान हार होते हुए देखी, तो कहा—“तो साहब, हमारी बातें भी बुरी लगने लगीं । पत्नीका चाव ऐसा ही होता है क्या ? अभी क्या है, अभी तो सारी दुनिया बुरी लगनी बाकी है । लीजिये, हम चुप्पी साधे लेते हैं । ” पद्मकान्तने चावकी दृष्टिसे राजोको देखा । राजो अपनी चोटीसे खेलती जा रही है । उसके कानके वाले दीवार-घड़ीके पैण्डुलमकी तरह हिल रहे हैं और वह खुद एकदम दूसरी ओर देखनेका प्रयत्न कर रही है ।

पद्मकान्तने राजोको पहले भी अनेक बार देखा है । उसके साथ घण्टों अपने समयके लम्बे घण्टे काटे हैं पर हर बार राजो नवीन-सी मालूम पड़ती है । पद्मकान्तका भावुक मन विरेलपण करने लगा । राजोकी रूप-माधुरी एक दूरसे दीखती हुई बर्फसे ढकी पहाड़की चोटी है, जिस तक पहुँचनेके लिये उसके पाँव अनायास ही आगे बढ़ते जा रहे हैं । और उस चोटी तक जानेवाली राह अत्यन्त सरल और दिलचस्प है । राहके दोनों किनारे आमके घने कुंज हैं, जिनपर कोयलें कूक रही हैं । उनके पीछे ढालपर बनेले फूलोंकी सतरंगनी झाड़ियाँ हैं । ऊपर जलसे भरे श्यामल मेघ छाये हैं । नीचे, पाँवोंके नीचे कोमल द्वे है ।

पद्मकान्तको यूँ विचारोंमें डूबा हुआ देखकर राजोने पूछा, “बुरा मान गये क्या ?” पद्मकान्त अपने औपन्यासिक विचारोंपर मुस्कुराया। पद्मकान्तको राजोकी माका कहना याद आया। जेवरोंकी बात उसे ज़रूर पूछ लेनी होगी। बरना जरा-सी बातको लेकर राजो व्यंग ज़रूर करेगी। पूछा— “राजो, आजकलकी लड़कियाँ कैसे ज़ेवर पसन्द करती हैं ?” राजो खिलखिला कर हँस पड़ी। “बाल तो आपके सफ़ेद नहीं हुए किन्तु बुजुर्गी ज़रूर आ गई है।” पद्मकान्त जैसे इस उत्तरके लिये तैयार न था, झेंप कर बोला—“मेरा अभिप्राय क्या तुम बिल्कुल नहीं समझीं ? मैं यह पूछना चाहता था कि तुम्हें कौन-से जेवर पसन्द हैं ?” “मेरी पसन्दसे क्या तुम्हारी भार्वा पत्नीकी पसन्द मिल जायगी ?” राजोने सीधा प्रश्न किया। पद्मकान्त सदा ही प्रतीक लेकर आगे बढ़ता है। बोला—“हाँ, तुम्हारी माका खयाल तो ज़रूर यही है।”

राजोने जेवरोंकी तालिका बताई। पद्मकान्तने नोटबुकमें दर्ज करना शुरू किया। राजो बोली—“झूमर” पद्मकान्तने उसके शब्द दोहराये “झूमर”, फिर कुछ देर सोचकर बोला—“राजो यह झूमर तो शायद बहुत पुरानी...?” राजोने हँसते हुए पद्मकान्तकी शंकाका समाधान किया, “यूँ तो सिविल मैरिज भी होती हैं, जहाँ न ज़ेवरका सवाल है न किसी तरहके रस्मों रिवाजका। न मेंहदी न काजल। न रतजगे। न खोरिया। पर शादी पुराने ढंगसे हो रही है, तो शगुनके लिये झूमर भी ज़रूरी है। फिर पंजाबमें तो झूमर दुबारा फैशनमें आ गई है। पद्मकान्तने पूछा “और।” राजो बोलती गई, “तीन जोड़े तीन डिज़ाइनके—ईयर-रिंग ब्रेसिलैट—आर्मलैट, लौकेट और इन सब चीज़ोंको रखनेके लिये मखमली केस—। एक बढ़ियाँ शृंगारदानी जिसमें देशी और विलायती बढ़ियाँ परफ्यूमरीसे लेकर तेल आइना कंवी सभी होना चाहिये।” पद्मकान्तने शृंगारदानीके सामानकी लिस्ट पृथी। राजोने गिनाना शुरू किया—“कोल्ड क्रीम, वैनिशिंग क्रीम, पाउडर, लिपस्टिक, नेल पौलिश यू. डी. कौलन, पफ़।” पद्मकान्त हर चीज़को ध्यानसे लिखता रहा। पद्मकान्तने सोचा, कपड़ोंकी भी तालिका अंगर यह बता दे तो खरीद कर वह खुद ही सीं डालेगा। राजोने तीन जोड़े पंजाबी कपड़े (शलवार कुर्ते और ओढ़नी), तीन जोड़े बनारसी साड़ियाँ, बाकी साधारण फैशनके किन्तु कीमती लिखाये। पद्मकान्तने यह भी पूछा कि अमुक

रंगकी सलवारपर कौनसे रंगका कुर्ता और ओढ़नी ठीक रहेगी। कौन-सी साड़ीपर कौनसे रंगका ब्लाउज़ मैच करेगा। राजोने अपनी पसन्दकी सब चीजें लिखा दीं। पद्मकान्तने तालिका बनाके पूछा—“ फिर तुम्हें शिकायत तो न होगी ? ” राजो मुस्कुराई—“ मुझे क्यों शिकायत होगी ? लेकिन आपकी श्रीमतीजी आपपर बिगड़ें, तो कृपा कर मेरा नाम न ले देना, समझे ? ” पद्मकान्तको इस बातसे अपार आनन्द प्राप्त हुआ और उसकी कल्पनामें एक नववधू आ खड़ी हुई जिसके अंगपर गहरे लाल रंगकी साड़ी और पीला ब्लाउज़ है। जिसके एक बाजूपर मीनेके कामका आर्मलैट, हाथोंमें ब्रैसिलैट और गलेमें लौकित है। पद्मकान्तने जब घूँघट उठाया तो पाया यह तो राजो है जो पूछ रही है, क्यों दूल्हे साहब, यह झुमर बुरी लगती है क्या ?

पद्मकान्त दिनभर दूकानपर काम तो करता रहा पर काममें आज उसे कोई विशेष उत्साह न था। रह रहकर सुनारोंकी दूकानें सामने आ जातीं, जिनमें छोटे छोटे हथोड़ोंसे सोनेको पीटा जा रहा है। छोटी छोटी छैनियोंसे डायमण्डकी कटाई हो रही है। वह पूछता है, “ भइ, तैयार हुए ज़ेवर ? ” तो एक बूढ़ा सुनार मुँहकी फुँकनीको हटाकर कहता है, “ बस शामको सब तैयार हो जायेंगे । ”

उसी साँझ वह दूकान बन्द करनेके बाद सुनारके यहाँ गया तो उसे पता चला कि यह जो ज़ेवरोंकी मुख्तसर लिस्ट है, उसमें भी तकरीबन ढाई हजार रुपये लग जायेंगे। लड़ाईके कारण सोनेका भाव चौगुना हो उठा है। पद्मकान्त बनवाई और सोनेका मूल्य सुनकर सन्न रह गया। बूढ़ा सुनार मुन्नीलाल पद्मकान्तको चुप्पी साधे देख बोला—“ आग लगे इस लड़ाईमें, हमारी तो रोजी ही खत्म हो गई। आजकल कौन नये ज़ेवर बनवाता है ? पुरानेको ही उजलवा लिया जाता है। अरे भैया पदमबाबू, तुम्हारी मामीके ज़ेवर खुद मैंने ही तो बनाये थे। उस वक्त सोना कुल बाईस रुपये था और आज तो गिन्नी तक पचासपर पहुँच गई। जर्मन जापानवालोंको और कोई काम नहीं है क्या ? ” पद्मकान्तने मुख्तसर-सा उत्तर दिया “ काम होता तो इस तरह लड़ाई छेड़ते ? ”

पद्मकान्त घर आया तो हारे जुआरी जैसा बिस्तरपर जा पड़ा। उसे महसूस हुआ कि यह गरीबी सचमुच बहुत बड़ी कमज़ोरी है आदमीके जीवनमें।

गरीबीमें आदमीको सिकुड़ना होता है। पन्नकान्त भी तो जीवनकी ऐसी ही सिकुड़नमें पैदा हुआ है और पाता है कि जिस समाजमें वह रहता है उसे जीवनकी हर आवश्यकताको धनके भारी बाँटोंसे तोलनेकी आदत है। इस वक्त उसे जोरकी भूख लगी थी। वह दाल रोटी बनाकर खा सकता है किन्तु निराशासे भरे मस्तिष्कवाले उसके शरीरमें इतनी अधिक थकान थी कि वह खानेकी बातको भूल जाना चाहता है। उस जैसे मज़दूरके लिये—गरीब तो वह है ही—स्वादका प्रश्न गौण हो उठा है। खाना तो राजोके यहाँ खाया जाता है जिसमें चटनी, अचार और मुरब्बोंसे लेकर मांस मछली और सभी तरहके मीठे खट्टे या नमकीन पदार्थोंकी आवश्यकता होती है। यहाँ तो पेटके खालीपनको सिर्फ भर लेना ही अभीष्ट है। पन्नकान्तकी सिकुड़न उसकी अकेलेकी नहीं सारे विश्वकी भी तो है। पन्नकान्त सोचता गया—संसारकी अधिकांश आबादीका भोजन ‘नमक रोटी’ कहलाता है। खाना, भोजन, भोज—यह शब्द केवल धनी-वर्गके लिये ही इस्तेमाल किये जाते हैं। भोजन गिरकर नमक रोटी रह गया और इन्सान गिरकर गरीब हो गया। उसी तरह उसकी कल्पनामें बड़े बड़े बंगले-कोठियाँ-बिल्डिंगें तैर उठीं; उनमें झलमल करते हुए वस्त्र पहने लोग रहते हैं। नफ़ासत, तड़क-भड़क, फैशन-चलन तो सिर्फ देखनेकी चीज़ है, जो उच्च वर्गमें दिखाई देती है। देखकर अपने भाग्यको दोष देना ईश्वरीय इच्छाका उपहास है और पानेकी चेष्टा करना भयानक मूर्खता है। जेबरोके अतिरिक्त श्रृंगार, प्रसाधन और कपड़ोंके लिये भी हजार दो हजार चाहिये। यह वेशकीमती कपड़े और भी महँगे इसलिये हो उठे हैं कि एक तो वह विदेशी हैं दूसरे इन्हें खरीदनेवाला वर्ग इस लड़ाईमें इतना ज्यादा धन कमा रहा है कि अगर नोटोंसे तोलकर भी वह वस्त्र मिलें तो उन्हें कोई असुविधा न होगी। राशनसे गरीबोंको नंगा रहना पड़ता है तो क्या हुआ, राशन है तो ? फ़ौजके कपड़े तो सरकारको मिल ही जाते हैं। इसके बाद भी उसका सोचना बन्द न हुआ। यहाँ तक कि जब आँखें मुँद ही गईं, तो उसके यह सब विचार सपने बन गये—भयानक सपने, जिनमें इन्सान इन्सानका धनके लिये खून चूस रहा है। एक ओर काला बाज़ार, दूसरी ओर अद्वारह रुपयेमें भूखे मरते हुए गरीबोंकी सिपाही बनती हुई लम्बी

लम्बी पक्तियाँ । अट्टारह रुपयेमें इन दिनों बकरे भी नहीं मिलते । आदमीका मूल्य बकरेसे किसी भी हालतमें अधिक नहीं । इन्सान हैवानसे भी नीचे दर्जेका हो उठा है ।

सुबह उसकी आँख खुली तो बहुत धूप चढ़ आई थी और दूकानके दो काम सीखनेवाले लड़के चाभी माँगने आये हुए थे । पद्मकान्त जल्दी जल्दी नहाया धोया । कुछ कच्चा पक्का बनाकर खा-पीकर वह दूकानकी ओर रवाना हो गया । रास्तेमें अनुराधा आज फिर मिल गई । करीब आती हुई बोली— “ दिनभर दूकान चलाने और रातभर उपन्यास लिखनेसे तुम बीमार पड़ जाओगे, समझे ? ” अनुराधा रुकी नहीं, जानेको उद्यत हुई । पद्मकान्तने अनुनयके स्वरमें कहा—“ सौझ जल्दी लौटूँगा । आ सकोगी ? कुछ बातें करनी थीं । ” अनुराधाने सम्मतिसूचक सर हिलाया । पद्मकान्तको संतोष हुआ कि अगर अनुराधा इस कठिनाईको सुनेगी तो अवश्य कोई रास्ता बतायेगी, अगर उसे कुछ न भी सूझा तो कमसे कम धीरज तो वैधाएगी ही ।



आज लश्करसे श्रीरामका पत्र आया था कि वह स्वयं कुछ दिनके लिये धौलपुर आ रहा है । उसने यह भी लिखा था कि वह जो कम्पनी टैण्ट सप्लाय करनेका काम काम कर रही है उसके पार्टनर उसके निकटके सम्बन्धी हैं और उन्हें वहाँके कुछ स्थानीय लोगोंके सहयोगकी अपेक्षा है । पद्मकान्तको भी उनकी कम्पनीसे कुछ काम मिल जायगा ।

पद्मकान्तने सोचा, अगर टैण्ट कम्पनीमें टैण्ट सीनेका पैटी कण्ट्रैक्ट मिल जाय तो उसकी तत्कालीन बहुत-सी कठिनाइयाँ हल हो जायें, किन्तु जब तक श्रीराम नहीं आया तब तक कुछ निश्चित मत स्थिर न कर पाया और चूँकि कई रोज़से निराशा ही निराशा उसके ऊपर छाई थी इस लिये उसने सोचा, हो सकता है, कम्पनी उसे अपने यहाँ टेलर सुपरवाइज़र रख ले । किन्तु उसे तो नौकरी करनी नहीं है ।

सौझको अनुराधा आई तो उस वक्त पद्मकान्त अपने उपन्यासके पन्ने रँग

रहा था। जैसे अब वह रुकेगा नहीं। जिस भी दिशामें उसके उपन्यासकी कथावस्तु जायेगी, वह जाने देगा। दुकानके बाद आजकल पद्मकान्तका एकमात्र मनोरंजन बस उपन्यास-लेखन था। पद्मकान्त महसूस करता कि दिन-भरकी शारीरिक मेहनतके बाद मानसिक मेहनतसे उसकी थकान उतरती-सी मालूम होती है। मनोरंजनके साधन तो थूँ अनेक थे जैसे हकीम साहबकी बैठकमें जाकर वेकार आदमियोंमें चौपड़ खेलना—कभी-कभी चम्बलपर जाकर मछलीका शिकार खेलना, या कभी राजोके यहाँ जाकर बैडमिण्टन खेल लेना।

पद्मकान्तको इन सब समयको नष्ट करनेवाले साधनोंसे धीरे धीरे विरक्ति होती जा रही थी। अन्तिम चौपड़की बाज़ी वह तीन हफ्ते पहले खेला था। मछलीके शिकारको उसे दो मास हो गये थे और बैडमिण्टन खेलना वह सम्भवतः भूल चुका था। अब तो उसे धन कमानेकी चिन्ता थी—हाँ निश्चय ही। किन्तु उसकी लालसा लखपति बननेकी कतई न थी, वह तो शानसे शादी करके सुखमय गृहस्थका जीवन बिताना चाहता था।

अनुराधा कुछ देर खड़ी यह देखती रही कि पद्मकान्तकी क़लम बड़ी तेज़ीसे पन्नेके पन्ने काले करती जा रही है। आखिर उसने टोका—“मुझे बुलाया था पदम?” पद्मकान्तके चेहरेपर स्वागतकी मुस्कान खिल उठी। बोला—“अनु, बुलाया तो था लेकिन यह तो बताओ तुम्हें काफी फुर्सत तो है न?” अनुराधाने पूछा “काफी फुर्सतसे तुम्हारा क्या मतलब है? तुम जितनी बातें करना चाहोगे उसके लिये मेरे पास काफी समय है।” पद्मकान्त अपने उपन्यासको बन्द करते करते बोला “अनु, बता सकती हो आदमीमें बहुत-सी कमज़ोरियाँ क्यों हैं?” अनुराधा हमेशाकी तरह ही हँसती हुई बोली—“आदमी इसीलिये तो शायद आदमी है कि उसमें कमज़ोरियाँ हैं, वरना वह देवता न कहलाता।” पद्मकान्तने मन ही मन अनुराधाकी रुमझदारीकी तारीफ़ की और पूछा “तो क्या मनुष्य देवता नहीं बन सकता?” अनुराधा अबकी गंभीर हो उठी, बोली—“जब मनुष्य अपनी कमज़ोरियोंके आगे घुटने टेक देता है तो उसे हम पशु कहते हैं और जब वह कमज़ोरियोंपर विजय पा जाता है तो उसे देवता कहने लगते हैं। क्या तुमने

राजा नहुषका दृष्टान्त नहीं सुना ?” पद्मकान्तने बेचैनीसे कहा—“ वह दृष्टान्त मुझे याद है अनु । ” अनुराधा आज पद्मकान्तको आसानीसे छोड़ देनेवाली न थी, इसलिये उसने पद्मकान्तके मर्मको छेड़ा—“ और उपन्यास कहाँ तक पहुँचा पदम ? ” अनुराधाके प्रश्नको समझ कर पद्मकान्त कहने लगा, “ आज तुम्हें उसका मज़ाक बनानेका अवसर न दूँगा । ” अनुराधाने मुस्कराते हुए पूछा—“ क्या मैंने कभी तुम्हारे उपन्यासकी हँसी उड़ाई है ? ” पद्मकान्त निरुत्तर हो गया—“ याद तो नहीं है । ” अनुराधाने उठते हुए कहा, “ तो याद कर लो । अगर तुम्हें याद आये कि मैंने कभी तुम्हारे उपन्यासकी हँसी उड़ाई है तो कभी न सुनाना और अगर न याद आये तो फिर मैं बिना सुने तुम्हारा पिण्ड छोड़ देनेवाली नहीं हूँ । ” अनुराधाको जानेके लिये उद्यत देखा तो पद्मकान्तने पूछा—“ क्या चली ही जाओगी ? ” अनुराधा रुक गई और मुस्कराकर पास आकर बोली—“ इतनी-सी बातमें तुम्हारा जी बैठ गया ? इस तरह तुम कैसे अपने उपन्यासके नायकको आगे बढ़ा सकोगे ? ” पद्मकान्तको इस आश्वासनपर आपत्ति न थी, बोला—“ तो फिर बैठ ही न जाओ उपन्यास सुननेके लिये । तुम्हारे पास समयका अभाव तो होगा नहीं ? ” अनुराधा मुस्कराई—“ तुम कामकी बात भी कभी करना सीखोगे ? इतनी लम्बी चौड़ी भूमिकाके लिये तो सचमुच मेरे पास समय नहीं है । ”

पद्मकान्त सुनाने लगा—“ सब कुछ सरल हो गया । नायकने आकर धन्या भी शुरू कर दिया । इस समय नायिका बी० ए० की तैयारी कर रही है । नायककी शादी नायिकासे तकरीबन तय हो गई है । बस नायकको ज़ेवर कपड़े जुटानेकी देर है । किन्तु अभी एक कठिनाई शेष है । ” अनुराधाने पूछा “ वह क्या ? ” पद्मकान्त कहने लगा “ नायकके पास पूँजी बहुत कम है किन्तु वह भाग्यमें विश्वास करता है । अगर नायिकाका भाग्य प्रबल है तो नायकको धन अवश्य मिलेगा । ”

अनुराधाने फिर टोका—“ भाग्यके सहारे क्यों चलता रहे तुम्हारा नायक ? क्या वह अपने प्रयत्न और परिश्रममें विश्वास नहीं कर सकता ? ” अनुराधाके इस आक्षेपसे पद्मकान्त अपनेको बचानेका कोई मार्ग न खोज सका । कहने लगा—“ फिर भी प्रयत्नके साथ भाग्य भी तो चीज है न ? ”

अनुराधा हँस पड़ी। पद्मकान्त कुछ देर चुन हो रहा, फिर बोला—“आगे सुनो।” अनुराधाने पूछा—“नायिकाने कभी शादीके समाचारसे प्रसन्न हो नायकसे कुछ न कहा?” पद्मकान्त बोला, “नायक और नायिका दोनों ही सीधी बात नहीं करते। बल्कि वह प्रतीक मान कर चलते हैं।” अनुराधा औपन्यासिक ‘प्रतीक’ शब्दका अर्थ न समझी। बोली “यह प्रतीक क्या है?” पद्मकान्तने समझाया “जैसे मन्दिरमें हम मूर्तियोंपर पुष्प आदि चढ़ाते हैं, वह क्या पत्थरकी मूर्तियाँ ग्रहण कर लेती हैं? वह तो भगवानके नामपर किया जाता है।” अनुराधा अबकी ठहाका लगाकर हँसने लगी—“तो इसे तुम नायकका बुद्धिकौशल किस प्रकार कह सकते हो? भगवान तो एक शक्ति है। उसके लिये शायद प्रतीककी ज़रूरत हो सकती है किन्तु नायिका कोई अदृश्य प्राणी तो है नहीं। क्या सीधी बातें कर लेनेमें कोई हर्ज है?” पद्मकान्तने पूछा—“अगर दोनोंकी ओरसे दूसरे बात करें तो?” अनुराधा बोली, “दूसरोंसे ब्याह तो नायकका हो नहीं रहा है।” पद्मकान्तने कहा—“तो यूँ समझ लो, नायकका विश्वास एकदम हिमालय है।” अनुराधाने कहा “सो तुम जानो। बादको नायक फिर किसी कठिनाईमें पड़ गया तो?” पद्मकान्तने विश्वासके साथ कहा, “किन्तु अनु, नायक इतनी तो कठिनाईमें पड़ नहीं सकता कि तुम्हारे उबारे भी न उबरे।” अनुराधा बोली, “स्वयं कठिनाई पैदा करते जाओ और उबारूँ मैं, यह कहाँका न्याय है पदम?” “अनुराधा!” पद्मकान्तने अनुनयके स्वरमें कहा। “मैं तुम्हारे लिये केवल अनु भर हूँ। अनुराधा पुकार कर मेरी खुशामद क्यों कर रहे हो? घबराते क्यों हो? कठिनाई तो आने दो, फिर पदम वह भी कोई जीवन है जिसमें केवल आसानियाँ हो? यदि दिनके बाद रात न आये तो लोग दिनकी उपयोगिता ही भूल जायें। प्रकाशके बाद अगर अन्धकार न हो तो प्रकाशका सुख कौन माने?”

अनुराधाने पूछा—“अब चली जाऊँ, तो कोई हर्ज है? उपन्यास तो सुन ही लिया है।” पद्मकान्तने उपन्यासके पन्ने बन्द कर दिये और बोला—“एक बात और पूछूँ, बताओगी?” अनुराधा कभी कभी पद्मकान्तको छेड़ देती है, इसलिये बोली—“कोई गोपनीय बात होगी तो भी तुम्हें यहीं कह देनी

होगी। मैं उसे सुनने और कहीं नहीं जाऊँगी।” पद्मकान्त समझ गया कि अनुराधाकी आपत्तिका अभिप्राय क्या है ? पूछने लगा—“और कहीं क्यों, यहीं कहूँगा। तुम्हारा सोचना ग़लत है अनु। अब क्या मैं इतना ना-समझ हूँ कि ज़रा-सी बातके लिये तुम्हें क़ब्रिस्तान ले चलेँगा?” अनुराधा हँस पड़ी—“नहीं, सो तो मैं भी देखती हूँ कि पहलेसे कुछ अधिक बुद्धि तुममें आती जाती है। किन्तु आगे भी बुद्धि तुम्हारे पास टिकेगी, इसका तो कोई भरोसा नहीं।” पद्मकान्तने तनिक उदासीके लहजेमें कहा “तुम्हें इस जीवनमें समझ पाऊँगा या नहीं अनु?” अनुराधाने मुस्कराकर पद्मकान्तकी ओर देखा और कहा, “जीवन तो एक यही है। पुर्नजन्ममें मेरा विश्वास नहीं है। समझनेकी चेष्टा करोगे तो मैं कोई अदृश्य देवता तो हूँ नहीं, जिसकी रूपरेखा ही निश्चित करनेमें ग्रन्थ लिखने पड़ें। हाँ, तुम कहो तो क्या पूछ रहे थे?”

पद्मके प्रश्न कुछ देर मस्तिष्कमें ही घुमड़ते रहे। फिर वह ज़वानपर भी आये तो एकदम पद्मकान्त कुछ पूछ न सका। अनुराधाकी ओर जिज्ञासकी दृष्टिसे निहारकर आखिर वह पूछ ही बैठा—“क्यों अनु, आदमीके जीवनमें स्त्री क्यों इतनी आवश्यक है?” अनुराधाने पूछा—“यानी कितनी?” अनुराधा बालकी खाल भी खींच लेती है कभी कभी। पद्मकान्तने सोचा किन्तु इस आक्षेपको प्रकट रूपसे कह देनेमें तो उसके पहले कुछ भी नहीं पड़ेगा। पद्मकान्तने अपने मनके आवेगको दबाकर पूछा—“आदमी अपने दूसरे किसी आवश्यक कार्यको स्त्रीकी कृपा प्राप्त करनेसे अधिक महत्त्व क्यों नहीं देता?” अनुराधा हँसी—“क्या प्रेम शब्द तुमने कहीं नहीं पढ़ा?” प्रेमका नाम सुन कर पद्मकान्त झेंप उठा। अनुराधाने पद्मकान्तका भाव समझ कर कहा, “और निश्चय ही तुम उस मूर्ख नायककी बात कह रहे हो जिसने उपन्यासकी पूरी धरतीको ऊसर बना डाला है। शायद वह नायक इसी मीमांसा-में पड़ गया है, क्यों न ? मैं पूछती हूँ, स्त्रीके जीवनमें जो पुरुषका महत्त्व है उसका उल्लेख क्या तुम्हारे उपन्यासमें कहीं भी नहीं है ? स्त्रीको क्या तुमने सब कुछ छोड़ पुरुषकी अनुगामिनी होते नहीं सुना ? खैर, यह समस्या तुम्हें अभी नहीं सुलझानी है।”

पद्मकान्त चुप हो गया। अनुराधा खिलखिलाकर हँस पड़ी। पद्मकान्त जैसे उदास हो गया—जैसे अन्दर ही अन्दर वह कहीं डूब रहा है। अनुराधा बोली, “कौन किसके लिये आवश्यक है सो तुम्हारा उपन्यास तुम्हें नहीं समझा सकेगा, इसका मुझे विश्वास है। तुम उदास मत होओ। मुझे तुम्हारे विचारोंसे खासकर उन विचारोंसे जिनका मूल कमज़ोर है बहुत सहानुभूति है। सच ही पदम, तुम विश्वास करो या न करो।”

पद्मकान्तने इस आक्षेपको आत्मसात कर लिया। वह बोला, “ठीक है अनु, आज तक तुमसे सलाह इसीलिये तो लेता आया हूँ कि मुझे तुमसे सहानुभूतिकी आशा रहती है। अच्छा अनु, जब तुम्हें उन कमज़ोर मूलवाले विचारोंसे सहानुभूति है ही, तो एक प्रश्नका उत्तर तुम और दिये जाओ।” पद्मकान्तके इस दूसरे प्रश्नमें क्या होगा, यह अनुराधा सिर्फ़ कल्पना कर सकती थी। किन्तु यह भी वह जानती थी कि शायद ही ऐसा कोई प्रश्न हो जिसके अन्दरकी शंकाका वह समाधान न कर सकती हो। पद्मकान्तके प्रश्न पद्मकान्तके लिये लाख जटिल रहे हों अनुराधाके लिये तो वह प्रश्न सदा उतने ही सरल रहे जितने कि छोटे बच्चोंके उत्कण्ठायुक्त प्रश्न चाँद, बादल या इन्द्रधनुषको देखकर हुआ करते हैं।

पद्मकान्तसे अनुराधाने कहा—“पूछो, क्या पूछना चाहते थे?” पद्मकान्तने निःसंकोच पूछा—“यह ग़रीबी क्या दुनियासे मिटाई नहीं जा सकती?” अनुराधाके लिये यह प्रश्न सचमुच जटिल प्रमाणित हुआ। फिर भी अनुराधा पद्मकान्तको कुछ न कुछ उत्तर तो अवश्य देना चाहती थी। बोली, “चेष्टा करनेसे ऐसा कौन-सा काम है जिसे पूरा नहीं किया जा सकता? फिर भी पदम, एक दिनमें तो सारी दुनिया अमीर बन नहीं सकती किन्तु हर आदमीकी चेष्टा ग़रीबीसे लड़कर उसे पछाड़ देनेकी ही होती है। आज तक तुम्हारा नायक भी तो ग़रीबीके विरुद्ध संघर्ष करता आया है। किन्तु पदम, अकेले एक चनेके फोड़े तो भाड़ फूटता नहीं। बहुतसे चनोंकी ज़रूरत होती है।” पद्मकान्तकी समझमें कुछ न आया। अनुगधा स्वयं भी इतनी बात कहनेके बाद स्पष्ट रूपसे यह न कह पाई कि आखिर बहुतसे लोगोंके सम्मिलित संघर्षकी वास्तविक रूप-रेखा क्या है। फिर भी गृहस्थीके छोटेसे संसारकी ज्ञात वह

जानती है। अनुराधा कहने लगी, “मजदूर लोगोंको देखो, पत्नी भी कमाती है, छोटे बच्चे भी कमाते हैं। यही तो इकट्ठे होकर गरीबीके खिलाफ लड़ना है।”

इस प्रसंगमें पद्मकान्तको श्रीरामकी बात याद आई। उसने अनुराधासे कहा—
“मेरा एक दोस्त लश्करसे आ रहा है। वह भी कुछ ऐसी ही बातें कहता था। वह मिलके मजदूरोंके अधिकारोंके लिये मिलके प्रबन्धकर्त्ताओंसे लड़ा करता है। उसका कहना है कि हम जो परिश्रम करते हैं उसका हमें चौथाई भी मूल्य नहीं मिलता। जिन्सकी कोई कीमत नहीं। कीमत है उसपर खर्च हुए परिश्रमकी। जैसे हीरेका मूल्य बिना उसे तराशे काँचके बराबर है। जब वह तराश कर तैयार हो जाता है तब उसकी कीमत कूती जाती है। इस कीमतमें खानसे निकलनेसे लेकर तराशे जाने तककी मजदूरी रुपयेमें चार आनेतक भी नहीं होती। बाकी बारह आनेके लगभग मुनाफा है, जिसमें खरीद-फ़रोख्तकी दलाली वगैरह सब आ जाती है। दलाल तक लखपति हो जाते हैं, मालिकोंका क्या कहना; किन्तु हीरोंको खानसे खोदनेवाले और उन्हें तराशनेवाले मजदूरके मजदूर ही बने रहते हैं। परिश्रमके उचित मूल्यके लिये ही श्रीराम काम करता है।”

अनुराधाने पूछा, “किन्तु यह सब बातें भी क्या तुम्हारे उपन्याससे सम्बन्ध रखती हैं?” अनुराधाके इस प्रश्नने पद्मकान्तको दो पलके लिये चौंका दिया। उसने पूछा—“क्यों, क्या हर्ज है अगर उपन्यासमें यह प्रश्न भी किसी रूपमें आ जाये? क्या पाठकोंको इसमें कोई आपत्ति हो सकती है?” अनुराधाने सरलतासे कहा—“मैं नहीं जानती। किन्तु इतनी-सी बात मैं और कहना चाहूँगी।” अनुराधा बोलते बोलते रुक गई। पद्मकान्तने खुशामदके स्वरमें कहा—“कहो अनु,” अनुराधाने कहा—“अगर प्रकाशके लिये दीप-ककी आवश्यकता है तो क्या चाँदको प्राप्त करनेके लिए आकाशकी ओर उड़ना शुरू कर देना चाहिये? दीप तो धरतीपर ही मिलते हैं या मिल सकते हैं।”

पद्मकान्तका नायक जैसे उपन्यासकी जेलको तोड़ मुक्त होनेको आकुल हो उठा। पद्मकान्त अनुराधासे हार तो सदासे ही मानता आया है। अबकी

पद्मकान्तने प्रकट रूपसे यह कह देना चाहा कि वह अनुराधासे हार माने लेता है। किन्तु यह कहना कितना बड़ा ढोंग होगा। यह तो सत्य है ही। फिर भी वह बोला—“तुम बहुत चतुर हो अनु।” अनुराधा हँसने लगी। पूछा—“तो क्या तुम्हें आज ही मालूम हुआ कि तुम्हारी अनु चतुर भी है? कहीं यह बात तुम्हारे उपन्यासके नायकने तो तुमसे नहीं कही है?” पद्मकान्तने इस बातका उत्तर न दिया। कहने लगा, “तुम अगर मुझे बच्चोंकी तरह बहलाना ही चाहोगी, तो भी मैं रुकावट पेश न करूँगा। किन्तु मैं यह फिर कह देना चाहता हूँ कि आमतौरपर लड़कियाँ कुछ भी नहीं जानतीं, लेकिन तुम इसका अपवाद हो।” अनुराधा जानेको उद्यत हो गई। पूछने लगी—“यह प्रशंसा करनेकी कला क्या अपने उपन्यासकी नायिकासे सीखी है?”

श्रीरामको धौलपुर आये दो दिन हो गये थे। आज इतवार है, श्रीरामकी सलाह मानकर पद्मकान्तने इस इतवारको दूकान बन्द कर दी थी। श्रीरामका कहना था कि दूकानोपर करोड़ों आदमी काम करते हैं। वे सबह्र अंधेरेसे आकर रात बारह तक काम करते हैं। उन्हें भी एक दिन छुट्टी मनाने और बाल-बच्चोंके साथ एक दिन मनोरंजन करनेका अधिकार है। आखिर हर आदमी एक आदमी है, कोई मशीनका कल-पुर्जा तो है नहीं। अब तक पद्मकान्तके मनमें दुविधा बनी हुई थी। उसने श्रीरामसे कहा—“लेकिन भैया, अगर दो चार महीने इतवारकी छुट्टी न मनाऊँगा तो हर्ज भी क्या है? कुछ अधिक काम करके अगर मैं कुछ अतिरिक्त पैसा बचा सका तो शादी ज़रा ढंगसे हो जायेगी।” श्रीरामने कहा, “पद्मकान्त, भारतके हर मज़दूरपेशा आदमीकी यही मनोवृत्ति होती जा रही है। इसीलिये तो हमारे मज़दूर-वर्गका स्वास्थ्य दिन ब दिन गिरता जा रहा है। जीवनमें मनोरंजनका उतना ही महत्त्व है जितना कि रोटी पैदा करनेके लिये काम करनेका। अगर तुम ज्यादा काम करके बीमार पड़ गये तो क्या लाभ होगा उस पैसेसे? उतने दिनोंमें वह सब कमाया हुआ बीमारीपर खर्च कर दोगे और बीमारीकी अवस्थामें जो घरमें पड़े रहोगे सो उसमें कहीं अधिक हर्ज होगा।”

श्रीरामकी बात भी टाली नहीं जा सकती। इसके बाद श्रीरामने पद्मकान्तको

बताया कि धौलपुरमें कई एक फैक्टरियों आरम्भ होनेवाली हैं, इस लिए यहाँ भी एक नयी मजदूर-बस्ती बन जायगी। अगर यहाँ उनकी कोई यूनियन न हुई, तो लाभके अन्धे मालिक क्या उन्हें ठीक ठीक पैसा देंगे? यहाँके सभी मजदूरोंको इकाईमें पिरोना होगा।” पद्मकान्तने पूछा—“और वहाँका—लश्करका काम कौन सँभालेगा?” श्रीरामने कहा—“वहाँ हम तुम सरीखे नौजवानोंकी कर्मा थोड़े ही है। वहाँ तो बहुत-से लोग हैं। यहाँ मैं कुछ दिन रहूँगा। यहाँके स्थानीय नौजवानोंको संघका कार्य चलाना समझाकर वापस चला जाऊँगा। तुम भी अच्छा काम कर सकोगे, मुझे विश्वास है। पढ़े लिखे तो हो ही, पेशेसे मजदूर भी हो।”

श्रीरामने यूनियनके कार्य आदिके बारेमें जो थोड़ी-सी पुस्तकें थीं उसे दीं। पद्मकान्तके उपन्यासकारको यह पुस्तकें कुछ अजीब भार-सा मालूम हुई। श्रीराम समझ गया। बोला—“मेरे भैया, तुम उपन्यासकार पीछे हो, एक मजदूर पहले। दुनियासे जब मजदूरोंपर होनेवाले जुल्म मिट जायें तब भले ही सुन्दर प्रेम-कहानियाँ लेकर उपन्यास लिखना। अभी तो तुम्हें इन रोज़के नये आते हुए संघर्षोंका ही किसी भी माध्यमसे सामना करना है।”

श्रीरामने पूछा—“आजकल क्या उपन्यास लिखना बन्द कर दिया है?” श्रीरामसे झूठ बोलनेकी इच्छा तो हो रही थी किन्तु वह ऐसा न कर सका, बोला—“हाँ, जी बहलानेको कभी कभी—एक आध पन्ना लिख लेता हूँ।” श्रीरामको जैसे पद्मकान्तपर विश्वास हो गया। कहने लगा, “तुम्हें तो एक सुयोग है यह। सभी तुम्हें जानते हैं, इसी लिये तुम्हारे बातोंको सभी मानेंगे?”

पद्मकान्त कुछ सोचने लगा। श्रीरामने फिर पूछा, “और शादी हो कब रही है भाई?” पद्मकान्तकी घुटन जैसे प्रसार पाकर धुँईकी तरह फैलने लगी। बोला, “दो महीने वाद। कुछ पैसा इकट्ठा हो जाये, बस अब तो यही चिन्ता है।” श्रीरामने पूछा “पैसेका क्या होगा तुम्हारी शादीमें?” “पैसेका?” पद्मकान्तने गंभीर होते हुए आश्चर्यसे कहा, “भैया, बड़े आदमीकी लड़की है न? जेवर कपड़े दावत अन्य रस्म-रिवाज। खर्च ही खर्च है।” श्रीराम मुस्कराया, “तो यह बात है? मजदूरसे पूँजीपतिकी बेटी ब्याही जा रही है? किन्तु पदम,

इसे मैं महज़ एक धोखा भर कहूँगा। इससे तुम्हारा या हमारे मज़दूर-वर्गका क्या भला होनेवाला है ? तुम भी फिर पूँजीपति बननेकी चेष्टा करोगे और हमें अपनी जमातसे एक मज़दूर खो देना होगा। और कोई लड़की—किसी गंरीबकी ही सही, क्या तुम्हारी निगाहमें नहीं है ? शादीके प्रबन्धका जिम्मा मेरा। तुम्हारा एक पैसा भी खर्च नहीं होनेका। बस कन्याको और तुम्हें बैठाकर विवाह-संस्कार कर देंगे। चार बड़े बूढ़े तुम दोनोंको आशीर्वाद दे देंगे। तुम चाहो तो दो चार रुपयेकी मिठाई उपस्थित लोगोंको बाँट देना। ”

पद्मकान्तको परियोंकी कहानी जितनी मोहक लगा की है उतनी ही शादी भी। द्वारपर बाजे बज रहे हैं। रात-रात-भर रत-जगा हो रहा है। वर जामा पहन और सिरपर मौँर धर राजाओंकी तरह चार घोड़ोंकी चौकड़ीपर चढ़ द्वारचारको जा रहा है। बारात तीन दिन बाद लम्बी लम्बी रस्मोंकी अदायगी करती हुई नव वधूको लिये हुए लौट रही है। सुहागकी रात एक लाजकी पुतली नारी सोलह शृंगार किये एक कक्षमें बन्द कर दी गई है। दोनों बन्दी हैं—दोनों अनजान हैं। वह पति-पत्नी हो गये हैं। और जिस शादीकी बात यह श्रीराम कर रहा है वह शादी तो ज़रूर है, किन्तु उसमें कोई आनन्द नहीं है।

श्रीरामने कल्पनाके सुन्दर जालोंमें मक्खीकी तरह फँस गये पद्मकान्तका ध्यान भंग किया। श्रीराम कहने लगा, “शादी मानव-जीवनकी सबसे पहली और अन्तिम आवश्यकता, इच्छा और कामना है। स्त्री, पुरुषकी जीवन-सहचरी है किन्तु वह एक अनजान स्त्री न होकर जानी पहचानी स्त्री भी हो सकती है। पुरुष और स्त्रीको विवाहसे पहले ही अगर एक दूसरेको पहचान लेनेका अवसर प्राप्त हो जाये, तो वह शादी अधिक सफल हो सकती है। जीवन-संघर्षसे टकरें लेना केवल पुरुषका ही ठेका नहीं। स्त्रीको भी पुरुषके कन्धेसे कन्धे भिड़ाकर चलना है। ”

श्रीराम जैसे पद्मकान्तके उपन्यासके पन्ने पन्ने फाड़कर फेंके दे रहा हो। पद्मकान्तका सुस्त चेहरा देख कर श्रीराम बोला—“उदास होनेका तो कोई कारण नहीं पद्म भाई। मनुष्य हम उसीको पुकार सकते हैं जो समयके साथ अपनेको बदलता हुआ आगे बढ़ा करता है, वरना पशु आज भी पशु है। ” पद्मकान्तको

श्रीरामके इस लम्बे भाषणसे तो कोई आपत्ति नहीं, किन्तु यह सब बातें उसने कभी सोची नहीं। इस समय अनुराधाकी बातें भी ज़हनमें ताज़ा हो गईं। निश्चय ही श्रीरामकी तरह अनुराधा भी बुद्धिमती है। पद्मकान्तका मत दृढ़ हो गया।

श्रीरामके ज़रिये-वसीलेके कारण पद्मकान्तको ट्रेण्ट-फैक्टरीका पैटी कप्ट्रेक सचमुच ही मिल गया। उसके पास उस वक्त कुल २०० रुपये थे। यह रुपया पद्मकान्तने रात दिन जी-तोड़ परिश्रम कर एक एक पैसा करके जोड़ा था। गो यह रकम बहुत थोड़ी थी किन्तु उसकी शराफ़त और ईमानदारीकी आदतपर मुग्ध कारीगरोंने थोड़ा थोड़ा पैसा लेकर भी उसके ठेकेमें काम करना स्वीकार कर लिया। कम्पनीके मालिकोंमें श्रीरामकी सिफ़ारिशकी वजहसे पद्मकान्तकी अच्छी इज्जत थी और उसके कार्यमें विश्वास था।

पद्मकान्त अपनी दूकान भी सँभालता और फैक्टरीका काम भी। अब सुबहसे उठकर उसका पहला काम था .खुद दूकान खोलना। काम सीखने-वाले लड़कोंको ग्राहकोंके कपड़ोंकी सिलाई बताकर वह सीधा फैक्टरी जाता। फैक्टरी ज़्यादा दूर न थी। दोपहरको वह फिर दूकान वापस आता, यहाँका काम देखता, कपड़े काटता और सीनेके लिये कारीगरोंको देकर फिर छै बजते बजते फैक्टरी पहुँच जाता।

पद्मकान्त अब मशीन बन गया था। उसकी आँखोंमें राजोसे विवाह हो-जानेके स्वप्न तैरा करते। उसके दिमागमें ज़ेवर और कपड़ोंकी कीमतका हिसाब चला करता। रातको अक्सर पद्मकान्तको घर लौटते नौ बज जाते। घर आकर वह कुछ कच्चा पक्का बनाकर खा लेता और पड़ रहता। बेहद थकानकी वजहसे पड़ते ही नींद आ जाती। सवेरे भी जब उठता तो थकान पूरी तरह न उतर पाती। इस तरह उपन्यासकार पद्मकान्त अब एक मेहनत-कश मज़दूर बन चुका था।

पद्मकान्तको अब उपन्यास लिखनेका क़तई वक्त न मिलता और इसीलिये हफ़्तों अनुराधासे मुलाक़ात भी न होती। क्योंकि अनुराधासे कहनेके लिये उसके पास कोई बात ही न होती। पद्मकान्त दिन-रात धनी होनेके सपने

देखता और उन सपनोंमें सब कुछ होता—पर अनुराधा न होती। क्यों न होती ? इसका उत्तर स्वयं उसके पास भी मुश्किलसे ही था।

पद्मकान्त अहसान-फरामोश कभी नहीं था। वह श्रीरामका इस टैण्ट-फैक्टरीके पैटी कण्ट्रैक्टके लिये बहुत आभार मानता था। अगर पैटी कण्ट्रैक्ट न मिलता तो वह राजोसे विवाहकी आशा छोड़ ही बैठता। एक दर्जी—एक मज़दूरके यहाँ एक धनी पिताकी लाड़ली बेटी किस तरह जीवन बिताती ? पद्मकान्तके मनकी साध राजोको राजरानी बनाकर रखना थी। इस साधको मौलिक ही कहना पड़ेगा। हर आदमीकी अपनी पत्नीको सुख देनेकी लालसा आजकी नहीं तबकी है जबसे उसने यह जाना कि पुरुष होकर अगर वह अकेला है तो अधूरा है और वह नारी जो उसके खाली जीवनको मनो-वांछित वस्तुसे भर देती है उसे भी सुख देना पुरुषका कर्त्तव्य है। पुरुषका सृजन बाहरकी कठोर दुनियामें जीनेके लिये—निरन्तर संघर्ष करनेको हुआ है, तो नारी घरके अन्दरकी उस दुनियाके लिये रची गई है जहाँ पुरुष संघर्षरत रहकर भी सैनिककी तरह थोड़ा-सा विश्राम कर लेता है, किसीका प्यार पा लेता है। इसीलिये जब श्रीरामके आदेशानुसार हरीराम नामका एक व्यक्ति धौलपुर आ ही गया तो पद्मकान्तको प्रसन्नता ही हुई और उसे पद्मकान्तने अपने घरपर ही ठहराया।

हरीराम ज्यादा पढ़ा लिखा तो न था, पर वह चोरी चोरी पचें ब्रॉटनेका, हाथका बना टीनका लाउड स्पीकर लेकर मुहल्ले मुहल्लेमें किसी सभाका एलान करनेका काम भली भाँति कर सकता था। अभी तक पूरी तरह कोई फैक्टरी न बनी थी। इमारतें तैयार हो रहीं थीं, इसलिये धौलपुर मज़दूर-संघके कार्यालयमें कुल दो ही व्यक्ति काफी थे। श्रीरामने पद्मकान्तसे कहा था कि जैसे ही फैक्टरियाँ खुलेंगी अलग अलग ट्रेडके मज़दूरोंके लिये संघकी शाखायें खोल दी जायेंगी। इधर धौलपुरमें उद्योग-धन्धोंका विकास हो रहा था, तो मज़दूर भी पहलेहीसे सजग थे। यूनियनके सदस्योंमें अधिक संख्या थी छोटी लाइनमें काम करनेवाले मज़दूरोंकी। इसके बाद दर्जी और फिर कुछ बिजली-घरके आदमी थे। श्रीराम शोषणके खिलाफ़ लिये जानेवाले मोर्चेकी पृष्ठ-भूमि तैयार कर गया था। पद्मकान्त ही संघका सेक्रेटरी था और उसकी दूकान ही दफ्तर। पद्म-

क्रान्तको शोषणसे सदासे घृणा थी। वह जन्मजात विद्रोही था। उसका दृष्टि-कोण एकांगी था। वह शोषकोंको केवल मन ही मन गालियाँ दे सकता था। उनसे लोहा लेनेका तरीका उसे नहीं आता था। पर अब वह श्रीराम जैसे व्यक्तिको पा अपने ही तरहके सैकड़ों मजदूरोंकी ताकत अपनेहीमें संचित पाकर खुश हो उठा। पद्मक्रान्तके कुछ पुराने मिलनेवालोंने उसे रोका भी कि वह इस झंझटमें न पड़े। पद्मक्रान्त अजीब धर्मसंकटमें पड़ गया, किन्तु फिज्हाल श्रीराम-की राय बिना एक भी कदम पीछे लौटनेमें अपनेको समर्थ न पाता।

पेशेके लिहाजसे उसकी दूकान बुरी न चलती, पर पहले जैसी आमदनी उसमें नहीं रह गई थी। कुछ लोग तो उसके मजदूर-संघके साइनबोर्डको पढ़कर ही वापस लौट जाते; और जो ग्राहक बँध गये थे वह भी अपना काम ज्यादा तबज्जह देकर न किया गया देखकर धीरे धीरे कहीं और कपड़े सिलाने लगे थे। पद्मक्रान्त एकदम अकेला था। कुछ भी हो, दूकानसे उसका अपना और दूकानमें काम करनेवाले कारीगर और सीखनेवाले लड़कोंका खर्च बखूबी निकल जाता। बचत न होती। इसकी उसे चिन्ता न थी। पैटी कण्ट्रेक्टरसे उसे अच्छी खासी आमदनी हो जाती थी। अगर चाहता तो दूसरे कण्ट्रेक्टरोंकी तरह वह भी अपने दर्जियोंको कम पैस देकर काम ले सकता था। इससे उसे और ज्यादा आमदनी हो सकती थी किन्तु उसने ऐसा किया नहीं। धीरे धीरे दूसरे पैटी कण्ट्रेक्टरोंके कण्ट्रेक्ट बैठने लगे। सभी दर्जी अच्छी नफ़रीकी वजहसे उसीके यहाँ काम करना चाहते, पर पद्मक्रान्त दूसरे कण्ट्रेक्टरोंके आदमियोंको अपने यहाँ तो न रखता, हाँ, उन्हें यह ज़रूर सिखा देता कि मेहनतके हिसाबसे मजदूरी लो। उनसे कहो। अगर न मानें तो काम न करो। बेकार रहनेका सन्देह वह यह कहकर मिटा देता कि अगर दूसरी जगह काम न मिला तो अपने यहाँ ज़रूर रख लेगा। इसका नतीजा यह हुआ कि फैक्टरीके आम दर्जियोंने ज्यादा दरकी माँग की। दूसरे पैटी कण्ट्रेक्टर अगर दर्जियोंको पद्मक्रान्तके बराबर पैसा देना स्वीकार करते तो उन्हें बहुत ही नपा तुला लाभ होनेकी आशा रहती। वह तो ज्यादासे ज्यादा लाभ चाहते थे। पैटी कण्ट्रेक्टरोंने मालिकोंसे शिकायत की। मालिकोंने पद्मक्रान्तको समझाया कि वह भी उन्हीं लोगोंके बराबर मजदूरी दिया करे। पद्मक्रान्त

इसपर राजी न हुआ ! मालिकोंके लिये एक ही रास्ता था, वह यह कि पैटी कण्ट्रेक्टोंको ज्यादा भाव दें । पर वह उसपर तैयार न थे । धीरे धीरे सब पैटी कण्ट्रेक्ट फेल होने लगे । कम्पनीको आर्डरके हिसाबसे जल्दी जल्दी माँग पूरी करनी पड़ती थी, इसलिये कम्पनीने पद्मकान्तको भी नोटिस देकर सारे पैटी कण्ट्रेक्ट खत्म कर दिये ।

जिस दिन उसे नोटिस मिला उसी दिन उसने दूकानके सामने शहर भरके रोज़ मजदूरीपर काम करनेवाले सभी दर्जियोंको इकट्ठा किया और श्रीरामके आदेशानुसार हड़ताल करनेपर राजी कर लिया । कम्पनीका काम रुक गया ।

दो चार दिन तो कम्पनीके पार्टनर चुप रहे किन्तु जब फौजसे फैक्टरीके कामकी देरीकी शिकायत आई तो पाटनर्समें यह सलाह हुई कि जब तक पद्मकान्तको मुठ्ठीमें न लिया जायगा कोई काम नहीं बनेगा । कम्पनीके एक पार्टनरने पद्मकान्तको श्रीराम द्वारा सिफारिशका अहसान लादते हुए कहा— “ आपको तो हमसे लाभ ही होता है, फिर समझमें नहीं आता कि इस तरह यूनियन खड़ी करके अपने आप अपने पाँवमें कुल्हाड़ी मारनेसे क्या लाभ है । अगर आप चाहें तो हमसे और अच्छा भाव ले सकते हैं । कुछ दिन बाद आप भी पूरा ठेका लेनेके योग्य हो जायेंगे । ”

पद्मकान्तने अपने इस परिच्छेदमें इस झगड़ेके विषयमें अधिक नहीं लिखा । किन्तु अपना यह परिच्छेद वह ऐसे ही खत्म न कर सका । उसने इस परिच्छेदके अन्तमें लिखा कि जब तक परिस्थितिको वह पूरी तरह समझ न ले और उसपर किसीकी राय न ले ले, तब तक कोई मत नहीं दे सकता । उसके दो ही सलाहकार थे, एक तो श्रीराम और दूसरी अनुराधा । इस समय अनुराधा उसकी क्या मदद करेगी, यह सोचकर उसने हरीरामको श्रीरामको बुलाने भेज दिया और खुद चूँकि अब उसे फुर्सत थी अपने उपन्यासके नवें परिच्छेदमें लग गया । उसने चाहा भी कि इस छोटेसे संघर्षका भी जिक्र वह इस परिच्छेदमें कर दे, पर चाहकर भी वह ऐसा कर न सका और इस परिच्छेदमें वह सिर्फ राजोंके इर्द गिर्द मँड़राता रहा ।

९

आज सौँझको पद्मकान्त अपनी मामीको मैकेसे लेने जा रहा था। इस बीच पद्मकान्तने ज़ेवर तो सभी बनवा लिये थे, कपड़ोंके लिए आगरे जानेका विचार है। वह मामीको ज़ेवर दिखायगा तो वह अवश्य ही अचम्भेमें पड़ जायेंगी। पद्मकान्त राजोके यहाँ जा रहा था, मन ही मन मामीके द्वारा अपने योग्य हो जानेकी बातें सुनता जा रहा था। मामी कहेंगी—देख पदम, मैं कहती न थी कि बहूके अगर भाग होंगे तो बहुतेरा धन मिल जायगा। आज वह राजोको भी वह सब ज़ेवर ज़रूर दिखायेगा। राजो कितनी प्रसन्न होगी! ज़ेवरोंका डिव्वा वह इसीलिये ले जा रहा था कि राजोको एक बार पहना कर देख तो सके कि वह कैसी लगती है!

राजोकी माने पूछा—“तो पदम, तुम्हारी मामी इतवार तक यहाँ आ जायेंगी? अच्छी बात है। उनसे सब बातें तय कर ली जायेंगी।” पाठक यह भले ही सोचता रहे कि पद्मकान्तके लिये राजोकी माके आश्वासनपर उनके भाईने वरकी खोज स्थगित कर दी हो, सो बात नहीं है बल्कि पद्माके शायद ग्रह ही ऐसे थे कि कहींसे बात पक्की नहीं हो पाती थी। एक बार लड़केवालोंने घरकी स्त्रियाँ उसे देखने आईं तो बावजूद सारे नुमायशके कौशलके भी वह किसीको पसन्द न आई। पद्माको सफ़ेद रंगकी साड़ी पहनाई गई। चेहरे-पर थोड़ा क्रीम पाउडर भी लगाया गया और जिस कमरेमें वह लोग उसे देखनेवाली थीं नीला बल्व भी लगाया गया। किन्तु इस नुमायशसे भी उन चालाक स्त्रियोंको धोखा न दिया जा सका।

पद्मकान्तको तो राजोकी माने बना कर इसलिये रखा था कि पद्मकान्त अगर सिर्फ़ मौखिक प्रशंसासे ही शादीपर राजी हो जाय, तो शादी हो जानेके बाद फिर कौन झँझट खड़ी करता है! फिर पद्मकान्त जैसा बिना मा-बापका लड़का किसीकी भी लड़कीको पाकर अपनेको सुखी ही समझेगा। वरना लड़की-वाले भी भरा पूरा घर देखते हैं।

राजोकी माने बहुत आदरसे पद्मकान्तको जल-पान कराया। पद्मकान्तको

लगा उसकी खातिर दामादसे कम तो हो नहीं रही। पद्मकान्तको जैसे बहुत अच्छा लगा। यूँ सुसरालकी मिठाई सभीको अच्छी लगती है। पद्मकान्तकी कल्पनामें केवल सुसराल हो सो बात नहीं, बल्कि राजो भी है जिसे वह रुखती मानता आ रहा है।

राजोकी माने कहा—“पदम बाबू, तुम सरीखे लायक लड़केको कोई भी मा अपना दामाद बनाकर खुश होगी।” पद्मकान्तने दामादों जैसी वनावटी नहीं किन्तु वास्तविक लजाका अनुभव कर सर झुकाते हुए कहा—“कृपा है आपकी।”

पद्मकान्तने राजोकी माको वह सब ज़ेवर दिखाये। यदि यह ज़ेवर राजोके व्याहके लिये होते तो राजोकी मा लड़केवालोंको मन ही मन कोसती। भला इतने थोड़ेसे ज़ेवरोंको लेकर कोई लड़केवाला दस बीस हजार रुपयेका दहेज माँगनेकी जुरात कर सकता है? किन्तु पद्मकान्तने अपनी दूकान और टैण्ट-फैक्टरीके बूतेपर इतने भी कर लिये वही काफी थे। राजोकी मा इस प्रयाससे प्रसन्न हुई। उन्हें यह भी प्रसन्नता थी कि उनके भाई यदि अगर कुछ कम ज्यादा भी दहेज देंगे तो पद्मकान्त या उसकी मामी हुआत नहीं करेंगी। फिर पद्मकान्तको तो स्वयं अपने विवाहका इतना चाव है। प्रकटमें बोली—“सो भैया, तुम्हें इनके भी बनवानेकी ज़रूरत न थी। क्यों बिना ज़ेवरोंके काम न चलता? हम तो मय ज़ेवरोंके लड़की देनेको तैयार थे। खैर, अगर बनवा ही लिये हैं तो तुम्हारे ही काम आयेंगे। ज़ेवर घरमें रहें तो वक्तपर काम ही आते हैं। राजोको दिखा देना, वह क्या कहती है। भई, नये फैशनकी यह लड़कियाँ—इन्हें अच्छीसे अच्छी चीज़में तुक्स निकाल देनेकी आदत होती है।” पद्मकान्त बड़े उत्साह और उमंगसे राजोके कमरेमें चला गया।

राजो इस समय बैठी तन्मयतासे किसीको पत्र लिख रही थी। पद्मकान्तने देखा, उसकी छोटी-सी मेज़पर और भी पत्रोंका ढेर लगा है। पद्मकान्तने पूछा—“राजो, यह इतने पत्र क्यों लिखे जा रहे हैं?” राजोने व्यस्तताके भावसे कहा—“मालूम होता है सेक्रेटरी होनेके बाद बिरादरी मुहल्लेकी ख़बरें भी तुम तक नहीं पहुँचतीं!” फिर धीरेसे बोली—“माताजीने

तुमसे कुछ नहीं कहा क्या ? ” पद्मकान्तसे राजोके सम्बन्धमें राजोकी मासे कोई बातचीत नहीं हुई थी । राजो बोली — “ कालिजकी फ्रैण्डसको पत्र लिख रही हूँ कि वह इस अवसरपर जरूर आयें । कालिजकी पढ़ाई, लड़कियोंकी शादीके बाद बिल्कुल मुमकिन नहीं है । शादीके बाद तो उनसे मुलाकात भी क्या होगी ! ”

पद्मकान्तको कितनी खुशी हो रही थी, इसका अनुमान लगानेके लिये पद्मकान्तके मस्तिष्ककी आवश्यकता है । पद्मकान्तने अनुकूल अवसर जानकर कहा — “ तुम्हें शादीकी प्रसन्नता तो बहुत होगी राजो ? ” राजो पद्मकान्तके सामने शायद पहली बार शर्माई । उसके चेहरेपर शर्मकी लाली देखकर पद्मकान्तकी कल्पनामें बरातके बाजे बज उठे । रत-जगे जाग उठे । रातें सुहागिन हो उठीं । राजोने मन्द स्वरमें कहा — “ तुम्हारी भी तो शादी हो रही है । उस खुशीमें तुमने तो यहाँ आना तक छोड़ दिया है । ” पद्मकान्त जैसे हवामें पंख फैलाये तैर रहा हो । पद्मकान्तने कहा — “ राजो, देखो तो, यह ज़ेवर तुम्हें पसन्द हैं ? ” राजोने थोड़ी देरको पत्र-लेखन स्थगित कर दिया, बोली — “ देखूँ । ” राजोने ज़ेवरोंकी तारीफ़के साथ ही कुछ व्यंगभरे वाक्य भी कहे । “ तुम्हारी बारातमें शहर-भरके मजदूर बराती बनके आयेंगे ? सेक्रेटरीका विवाह मामूली बात थोड़े ही है ! ” पद्मकान्तको ऐसा लगा जैसे स्वयं राजोको उसके सेक्रेटरी होनेपर गर्व हो रहा है । पद्मकान्त ऐसी ही जीवन-संगिनी तो चाहता था जो उसके जीवनके छकड़ेमें मोटरके इंजिनकी तरह जुड़कर उसे गति प्रदान कर दे । पद्मकान्त चाहता था कि वह राजोको यह सब ज़ेवर पहनाकर देख सके । बोला, “ ज़रा पहनकर देखो । यह ज़ेवर छोटे बड़े तो नहीं हैं ? ” राजोने हँसकर कहा — “ ज़ेवर झूठे हो जायेंगे पदमजी । यह तो जिसे पहनने हैं वही पहनेगी । ” पद्मकान्तने कहा — “ तो भी तुम्हारे पहन लेनेमें कोई हर्ज तो है नहीं ? ” राजोने मुस्कुराकर कहा — “ हर्ज क्यों नहीं है ? कुआँरी लड़कियाँ यह सब ज़ेवर थोड़े ही पहनती हैं । ” पद्मकान्तको इस बातसे और भी अधिक उत्साहका अनुभव हुआ ।

गो अब पूरी तरहसे पद्मकान्तके ख्यालसे शादीकी तैयारियाँ हो रही थीं, फिर भी पद्मकान्तने विज्ञापन करना भला न समझा । इस लिये अनुराधाने

जब पूछा कि उसके नायककी शादीका क्या हुआ, तो पद्मकान्तने अपने मनके आवेगको दबा देनेकी बहुत चेष्टा की किन्तु सफल न हो पाया, इसलिये बोला—“ शादी तो उसकी अगले मासमें अवश्य हो जायेगी । ” अनुराधाकी यह आदत बुरी है कि वह पद्मकान्तका आसानीसे पिण्ड नहीं छोड़ती । पूछने लगी, “ तो नायकने नायिकासे भी शादीके बारेमें बातें कीं ? ” पद्मकान्तने राजोके संवाद दुहरा दिये । अनुराधा हँस पड़ी । कहने लगी—“ सेक्रेटरी साहब, जब भगवानके यहाँ बुद्धि बँटी थी तो क्या तुम सबसे आगे थे ? ” पद्मकान्तको सदा ही तो अनुराधा इसी तरह उलझाती चली आई है । पद्मकान्त अनुराधाकी इस बातपर हँसने लगा । बोला—“ और क्या ऐसे पर्वपर भी मैं पीछे रहता ? तुम्हारा क्या खयाल है अनु ? ” अनुराधा बोली—“ खयालकी कोई गुंजायश तो तुमने छोड़ी नहीं है । अच्छा पदम, आगे क्या हुआ बताओगे तो ? ” पद्मकान्तने कहा—“ बस दो चार दस पन्नोंके बाद उपन्यास खत्म ही समझो । ” अनुराधाने जैसे चैनकी साँस ली—“ चलो, पूरा तो होगा आखिर । फिर तो पदम, तुम क्या आया करोगे अपनी अनुसे सलाह लेने ? ”

पद्मकान्तको लगा जैसे अनुराधा चाहती है कि सदा मैं उससे उलझता ही रहूँ । इस भावका अस्तित्व पानीके क्षणभंगुर जीवनवाले बुलबुलेकी तरह उत्पन्न हुआ और मिट गया । जैसे पद्मकान्तका अपना अस्तित्व सिमट उठा । अनुराधाने जैसे भूतकी स्मृतिमें डूबते हुए कहा—“ तो फिर तुम मुझे भूल जाओगे, क्यों पदम ? ” पद्मकान्तके अन्दर जैसे एक मन्थन-सा मच गया । क्या अनुराधाको सचमुच भूल जाना सम्भव होगा ? उसे क्यों भूल जाना चाहिये ? उसने निश्चय किया कि वह अनुराधाको सदा अपनी ही समझता रहेगा । अनुराधा उसकी अपनीसे भी अधिक है । उस अनुराधाको भूल जाना कैसे सम्भव हो सकेगा जिसने ज़िन्दगीके हर मोड़पर आकर मार्ग प्रदर्शनका कार्य किया है । किन्तु राजोकी यादने जैसे पद्मकान्तके विचारोंको छा लिया । इस समय वह क्या कर रही होगी, पद्मकान्तने सोचा । और न जाने वह कब तक सोचता रहता यदि अनुराधा टोक न देती—“ इसमें उदास होने या विचारोंमें खो जाने जैसा तो कोई कारण नहीं है । मैं कभी

तुमसे शिकायत करने तो आऊँगी नहीं ? ” अनुराधाका यह वाक्य सुनकर पद्मकान्तको लगा जैसे अनुराधाका व्यक्तित्व उसपर छा जायेगा । पता नहीं क्यों, मन ही मन वह अनुराधाको देख काँप गया । अनुराधाका यह भोलापन कितना अद्भुत है, जिसमें स्वार्थकी गन्ध तक नहीं आती ! अनुराधाको कुछ देर और वह गौरसे देखता रहा । अनुराधाने पद्मकान्तका भाव समझकर कहा, “ मैं कोई तुमसे झगडूँगी थोड़े ही । जितना मेरा तुमपर अधिकार है उसे तो तुम्हारा उपन्यास छीन नहीं सकेगा ! ”

पद्मकान्तको आज अनुराधा अजीब उलझनमें छोड़ गई । पद्मकान्तने जल्दी जल्दी यात्राकी तैयारियाँ कीं । अनुराधा कुछ खानेकी सामग्री लिये हुए लौटी । रास्तेमें बाज़ार-हाटका खाओगे, तो तबीयत खराब हो जायगी । पद्मकान्तको इस आग्रह-अनुरागसे कभी आपत्ति न थी । आज जैसे कुहरेकी तरह चारों ओरसे अनुराधाका अनुराग उसपर छाने लगा । अनुराधाने कहा—“ जब तुम्हारा नायक ‘बन्ना’ बन कर जायेगा, तब उसे सजायेगा कौन ? ” पद्मकान्तने हँसते हुए कहा—“ तुम्हारी तरहकी एक लड़कीका ज़िक्र करना मैं नहीं भूँडूँगा । सजानेका अधिकार उसीका होगा । क्यों अनु, ठीक है न ? और मेरी शादी होगी तो तुम मुझे तो सजाओगी ही ? ” अनुराधाने धीरेसे सर हिलाकर सम्मतिकी सूचना दी । पद्मकान्त तौंगेमें बैठ गया । तौंगा चल पड़ा । अनुराधा घोड़ेकी टापोंकी क्रमशः धीमी होती हुई आवाज़ सुनती रही । फिर पद्मकान्तको ले जानेवाले तौंगेके पहिये तेज़ होते गये । घोड़ेकी टापोंकी आवाज़ और भी मन्द पड़ती गई और फिर धूलके एक बड़े गुबारने पद्मकान्तके टौंगेको अनुराधाकी दृष्टिसे छिपा लिया । पद्मकान्तको अनुराधाका चेहरा कुछ उदास-सा लगा, किन्तु वह उस उदासीका कारण पूछनेके लिये साहस संचयन कर पाया । अनुराधाके उत्तरसे पद्मकान्त डरता है ।

मामी तो जैसे धौलपुर वापस जानेके लिये उधार खाये बैठी थीं । पद्मकान्तके आते ही उन्होंने उसे एक माकी तरह वक्षसे लगा लिया । मामीके भतीजे और उनकी बहुएँ भले ही इसे राजनीतिकी तरहका स्नेह समझें लेकिन मामी सचमुच ही पद्मकान्तको बेटेसे अधिक चाहती आई हैं ।

कुछ देर विश्राम लेनेके बाद जब पद्मकान्त यात्राकी थकान उतार चुका,

तो मामीने पूछा—“दूकान कैसी चल रही है बेटा !” पद्मकान्तने कहा—
 “दूकान तो अच्छी खासी चल ही रही है, इसके अतिरिक्त मुझे डेरे बनानेका ठेका भी मिल गया है। सब मिलाकर आजकल पाँच सौ रुपये माहवारकी आमदनी हो जाती है।” मामीको जैसे किसीने कुबेरका कोष लाकर सौंप दिया। प्रसन्नताके मारे उनका बुरा हाल था। बोली, “सब तुझे यही कहते थे कि कुछ न करेगा, पर मैं तो सदा भगवानसे यही माँगती थी कि मेरा पदम ऐसा निकले जैसा हमारे कुलमें कोई न निकला।” पद्मकान्त इस अतिशयोक्तिको ओढ़ना नहीं चाहता था। बोला—“सो मामी, वह ठेका तो चार दिनका है। जैसे ही फौजके डेरे पूरे हो गये, काम खत्म।” मामीने कहा—“अरे मेरे भैया, जब भगवान देता है तो छप्पर फाड़कर देता है। उसके लिये बहानेकी क्या कमी ? भगवानको धन देना था इस बहानेसे दे दिया। कहावत है “हीले रोजी।” कहावतका अगला अंश है “बहाने मौत।” जिसका मामीने अमांगलिक समझ उच्चारण न किया किन्तु इस अवसरपर भी उन्हें बीबी (पद्मकान्तकी मा) और नन्दोई (पद्मकान्तके पिता) की याद आये बिना न रही, बोली—“आजको बीबी और नन्दोई ज़िन्दा होते तो देखते उनका पदम कितना लायक हो गया है।” मामीको भूले बिसरे बहुत जल्दी याद हो आते हैं। २०-२२ वर्ष पूर्व मृत्युको प्राप्त हुए पद्मकान्तके मा-बापकी स्मृति उन्हें आज भी ऐसे ही कला देती है जैसे वह दो घण्टे पूर्वकी घटना हो।

मामीके दूरके रिश्तेकी एक बहिन बिन्देश्री भी उन्हींके मैकेमें रहती थीं। बिन्देश्रीको विधवा हुए कई वर्ष हो चुके थे। अब तक वह गहने बेच बेचकर अपनी एकमात्र सन्तान नन्दिनीको पालतीं रहीं। अब उनके पास कुल इतने ही गहने शेष थे जिनमें दुःखम सुखम नन्दिनीके हाथ पीले हो जायें और बिन्देश्री जैसा कि वह कहती थी वृन्दावनवासको चली जायें। बिन्देश्रीकी असमर्थता निश्चय ही ऐसी थी जिसपर किसीको भी दया आ जाती, किन्तु पद्मकान्तके बढ़ते हुए ऐश्वर्यने मामीको बिन्देश्रीकी परिस्थितिको सोचनेका अवसर शायद नहीं दिया। इसीलिये मामीने टालते हुए कहा—“अरी बिन्दो, तू क्या कोई गैर है जो तेरी लड़कीको न लूँ ? पर पदमका तो शगुन भी

हो गया है ? ” बिन्देश्रीको लगा, जैसे उसकी सारी आशाओंके महल ढह गये हों। बिन्देश्री विधवा थीं, फिर लड़कीकी मा थीं। उन्हें शादी ठहरानेके कड़वे अनुभव थे। कोई लड़केवाला ६-७ हजार नगद दहेजके नीचे बात ही न करता था और जो लड़केवाले कम लेनेपर राजी थे उनके लड़के बिन्देश्रीकी समझमें नन्दिनीके योग्य न थे। कोई बेकार था, कोई कम पढ़ा लिखा था, कोई पन्द्रह रुपयेका मुन्शी था। कोई अच्छी हैसियतका था तो विधुर था। बिन्देश्रीने फिर भी साहस बटोरकर कहा—“ किसके यहाँ ? ” मामी ज़रा कठिनाईमें पड़ गईं, पर शीघ्र ही उन्हें एक बात भी सूझ गई। उन्होंने कहा—“ कन्हैयालाल जजकी लड़की राजोके साथ। ” बिन्देश्री चुप हो रहीं। पद्मकान्तको बहुत आश्चर्य हुआ कि आखिर शगुन कब और कैसे हुआ ? पद्मकान्त शगुनका अर्थ समझता था। शगुन कहते हैं फल-दानको, जब लड़कीकी लड़केवालेकी ओरसे गोद भरी जाती है। इस रस्मसे शादी पक्की समझी जाती है।

दूसरे दिन ही पद्मकान्त मामीके साथ धौलपुरके लिये रवाना हो गया। सिर्फ़ इस एक ही दिनमें पद्मकान्तकी शादीके लिये अनेक सन्देश आये। हिन्दू लड़का जैसे गूलरका फूल है। इसीलिये तो उसे प्राप्त करनेके लिये इतनी बड़ी कीमत दी जाती है। पद्मकान्तने धौलपुर आकर मामीसे पूछा—“ मामी, मेरा शगुन कब हुआ ? ” मामीने कहा, “ बेटा, इसी तरह टाला जाता है। बरना पिण्ड न छोड़ें यह लोग। ” पद्मकान्तको अपना मूल्य जैसे आज जीवनमें पहली बार मालूम हुआ। पद्मकान्तने जब पाया कि राजोके सम्बन्धकी बात मामी आगे उठानेवाली नहीं हैं, तो खुद ही संकोच त्याग कहा—“ मामी, राजो बुरी लड़की तो नहीं है ! ” पद्मकान्तका संकेत मामी समझ गईं। बोलीं—“ मेरे पूत, राजो ही बहू बनकर आयेगी। अब रामकी कृपासे तेरे पास कमी किस चीज़की है ! ” मामीकी समझ या पद्मकान्तकी पूर्वकी ग़रीबीको देखते हुए पद्मकान्तकी हैसियत ज़रूर अच्छी कही जा सकती है, किन्तु जज-साहबके साथ समझीका रिश्ता करनेके लिए पद्मकान्तका थोड़ा-सा धन जजसाहबकी हैसियतसे टक्कर लेनेके लिये काफी न था। पद्मकान्तकी अपनी समझसे नहीं बल्कि आम यकीन भी यही था। शादी तो वही है जिसमें लड़की और

लड़केवाले दोनों ही दोनों हाथोंसे लुटायें—एक दूसरेको दें या लें। मामीने पद्मकान्तकी इच्छा जानकर कहा, “उन्हें गरज होगी, तो सौ बार शादी करेंगे। वरना क्या तेरे लिए लड़कियोंकी कमी है ?”

पद्मकान्त इस बार राजोके यहाँ गया तो राजोकी माने कहा—“तुम्हारी मामी तो आ गई हैं न ? कल फिटन भेज दूँ, आ जायँगी ?” पद्मकान्त तो जैसे यही चाहता था। मामीसे आकर उसने राजोकी माका सन्देश कह दिया।

दूसरे दिन नियत समयपर जजसाहबकी फिटन आई। मामी अकेली नहीं गई, साथमें छटंकीकी मा भी थी। मामी बड़े बड़े मनसूवे लेकर आज जजसाहबके यहाँ गई थीं। राजोकी माने घुमाकर बात कही। इस घुमाव-फिरावमें पद्मकान्तकी प्रशंसा भी थी। मामीने देखा, शादी-व्याहके मुआमलेमें राजोकी मा कम चतुर नहीं है। आखिर राजोकी माने मतलबकी बात कही—“आखिर पदमकी शादी तो तुम्हें करनी ही है। लड़की भी घरहीमें है।” मामीने कहा—“हाँ, सो तो ठीक है, पर सब बातें साफ तौरसे तय हो जायें तब तो कुछ कहूँ।” राजोकी मा बोली—“मेरे भाईकी हैसियत कोई ज्यादा अच्छी तो है नहीं। हाँ, बरातका खाना पीना शामिल करके छह या सात हजारकी शादी तो ज़रूर हो जायगी ?”

अब मामी समझी कि राजोकी मा किस लड़कीके लिये कह रही हैं। किसी शादीके अवसरपर मामीने राजोकी माकी भतीजीको देखा था। मामीको उसका नाक नक्शा सब याद था। बोली—“लेकिन पद्माके साथ तो शादी होना मुश्किल है राजोकी मा। पहली बात तो यह है कि...” मामी कुछ कहते कहते रुक गई। राजोकी मा बोली, “आपसे कोई बात छिपी तो है नहीं। काले गोरे तो ईश्वरने बनाये हैं। हम ही कहाँकी रूपवती हैं ! लड़कीके गुणोंपर जाइये। काढ़ना बुनना, गाना बजाना, सब आता है उसे।” मामी क्या कहे, कुछ सोच न पाई। आखिर मामीको कोई बहाना तो चाहिये ही, बोली—“और रामकी दयासे पद्माकी तन्दुरुस्ती भी काफी अच्छी है। मेरा पदम तो तुम जानती हो कैसा सुकुमार है।” राजोकी माने विश्वास दिलानेकी बहुत चेष्टा की कि अब पद्मा भी बहुत दुबली हो गई है किन्तु मामीने हाँ या ना का कोई उत्तर न दिया।

राजोकी माने मामीको कई तरहसे समझानेकी चेष्टा की किन्तु जब पद्मा पसन्द ही न थी तो मामी क्या करती। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मामीको पद्मासे कोई व्यक्तिगत वैर न था, फिर भी मामी यह भी तो समझती थी कि पद्माकान्तकी कोई उम्र थोड़े ही निकल गई है, जो अच्छी लड़की न मिले। राजोकी माकी चाकूपटुताकी मामीने मन ही मन तारीफ़ की और छटंकीकी माकी तत्फ़ देखकर धीरेसे मुस्करा दीं। छटंकीकी माको सीधी बात करनेमें कभी कोई संकोच नहीं होता। बोलीं—“राजोकी मा, हमारा ख्याल तो यह था कि आप राजोके लिये बातचीत करना चाहती हैं, आज तक पदमकी बातसे भी हमें ऐसा ही लगा।” राजोकी माको इस प्रश्नके उठनेकी सम्भावना थी, इसलिये वह उत्तर देनेके लिये भी तैयार ही थी, पर वह इस सोचमें पड़ गई कि अगर इस बातचीतके दौरानमें कोई बात इन लोगोंको नाखुश करनेवाली निकल गई, तो पद्मा गरीब बीचहीमें मारी जायेगी। उस वक्त बुआके मनमें भतीजीके लिये बहुत दया उत्पन्न हो रही थी, बोलीं—“राजो भी आपहीकी बच्ची है, पर मुझे पहलेसे इस बातकी ज़रा भी जानकारी होती, तो शायद मुझे खुशी ही होती। पदम सरीखा लड़का भला किसे पसन्द न आयगा ? फिर अब तो इस चीज़का ज़िक्र करनेसे भी क्या होगा ! बातचीत पक्की ही नहीं हो गई, बल्कि कल फलदान, परसों लगुन और ग्यारह दिन बाद शादी है।” छटंकीकी माने राजोकी माको आसानीसे न छोड़ा, बोलीं—“लड़का क्या करता है ?” राजोकी माने बतलाया, इलाहाबादमें एकाउण्टैण्ट जनरलके दफ्तरमें औज़ीटर है।” छटंकीकी माने लड़केके बापका नाम आदि पूछा, तो उन्हें पता चल गया कि किस लड़केसे राजोकी शादी तय हुई है। छटंकीकी मा बोलीं—“बुरा न मानियेगा, लड़का रिश्तेमें मेरा भानजा होता है। वह तो दूजियाँ हैं। पहलीको मरे कुल दस या ग्यारह महीने ही तो हुए हैं।” राजोकी माने इस भेदके खुल जानेको खूबसूरतीसे निवाहना चाहा। बोलीं—“भरा पूरा घर है, चार भाई हैं, सास स्वसुर हैं, जमींदारी है, मित्रिकयत है। लड़का खुद भी तो चार सौ रुपये कमाता है। फिर दूजियाँ होनेसे क्या होता है, अभी उम्र तो कुछ भी नहीं है। यूँ कहो कि पहली शादी बहुत कच्ची ही उम्रमें हो गई थी। अमीर बापका बेटा क्या ज्यादा दिन तक बैठा रहता है ?”

मामी और छटंकीकी माके जाते जाते भी राजोकी माने पूछा, “आप लोगोंने कोई जवाब नहीं दिया ?” पद्मकान्तकी मामी बोली—“पद्मकान्तसे पूछ देखूंगी, क्या कहता है ? आजकलके लड़के क्या आसानीसे शादीके लिये राजी हो जाते हैं ?”

छटंकीकी माने मामीसे कहा कि लड़केकी उम्र तक़रीबन ३२ वर्षके है । पता नहीं, क्यों कोई बच्चा नहीं हुआ । गो बहू छह या सात बरस तक तो रही ही । छटंकीकी मा और मामीमें जो बातें हुई उनका निचोड़ यह है कि राजोके माता पिता राजोको भाड़में झोंके दे रहे हैं ।

सच बात क्या है, यह बात सिर्फ़ एक व्यक्ति जानता है जो राजोकी माका भी उतना ही हिमायती है जितना कि पद्मकान्तकी मामीका । वह हैं एटेवाली—सुन्दरबाबूकी पत्नी ।

पद्मकान्त दो एक दिन अपनी उत्सुकताको दबाये रहा । उसकी समझमें न आया कि आखिर मामी चुप क्यों हो रहीं । एटेवाली, मामीके पास, जज साहबके यहाँ जानेके दो तीन दिन बाद आई । पद्मकान्तने एटेवाली, छटंकीकी मा और मामीकी गुप्त सभाका वार्तालाप सुना । एटेवालीने कहा—“लोग यह भले ही समझ लें कि जज साहबकी हालत ठोस है, पर सत्य यह है कि शान शौकत तड़क भड़कमें ही सब आमदनी लग जाती है । लोग उनकी स्थितिको देखकर लम्बा चौड़ा दहेज़ माँगते हैं । पर दें तो तब, जब हो । इसीलिये अगर राजो एक तीस सालके दूजियाँके साथ ब्याही जा रही है तो क्या तअज्जुब है ?” छटंकीकी मा बोली—“पर एटेवाली, पद्मकान्तसे रिश्ता होनेमें भी तो उन्हें ज़्यादा लेना देना नहीं पड़ता । फिर पद्मकान्त और राजोकी जोड़ी है भी कितनी अच्छी !” मामी बोली—“वह पद्माको हमारे मत्थे मढ़ देना चाहती हैं । पद्मा सौवली तो है ही, चेचकके दाग़ भी हैं मुँहपर, और वो भी इतने कि भगवान जाने ।” मामी कुछ कहते कहते रुक गई । एटेवाली बोली, “पदम लल्ला खुद भी तो चाहते थे कि राजोसे उनकी शादी हो जाये ।” मामीने पूछा—“आखिर पद्मकान्तके साथ रिश्ता कर देनेमें उन्हें क्या दिक्कत है ?” एटेवाली बोली, “बड़े लोगोंकी बड़ी बातें । पद्मकान्तका स्वभाव

उन लोगोंको पसन्द है। लेकिन...” एटेवाली कुछ कहते रुक गई। छटंकीकी माने कहा—“कहो भी एटेवाली, हम लोग कोई गैर तो नहीं हैं।” एटेवालीने जैसे पद्मकान्तका पक्ष लेते हुए कहा—“जज साहबको दुनिया थूकेगी नहीं कि उनका दमाद दर्ज़ी है। यह कोई नहीं देखता कि पद्मकान्त कितने अच्छे हैं, कितना पैसा कमाते हैं। हाँ, अगर पदम भी कहीं क्लर्क होते तो भी शायद यह शादी हो जाती। फिर राजोहीको कब पसन्द है कि लोग उसे दर्ज़िन कह कर पुकारें?—और भी चीजें हैं। पदम ज़्यादा भी तो नहीं पढ़ पाये। और राजो तो भगवानकी दयासे बी० ए० की तैयारी कर रही है।”

पद्मकान्तने यह सब सुना तो महसूस किया कि उसकी और राजोकी सामाजिक स्थितिके बीच जो एक बड़ी खाई उपस्थित हो गई है, उसे वह शायद न पाट सकेगा।

पद्मकान्तने अपने उपन्यासके नवें परिच्छेदमें निराश होकर लिखा कि उसका उपन्यास अब आगे नहीं बढ़ सकता, इसलिये वह आगे न लिख सकेगा। उसी दिन ‘पद्मकान्तकी कहानी’ नाम काटकर उपन्यासका नाम उसने ‘अधूरा उपन्यास’ रख दिया।

१०

पद्मकान्तको अपने उपन्यासको स्थगित कर देनेके बाद जो दुख हुआ उसका जिक्र तो उसने अपने उपन्यासमें कहीं नहीं किया, किन्तु पद्मकान्तको ऐसा लगा कि यह रंगीन लगनेवाली दुनिया अब भयानक धक्कोंसे भर उठी है, जहाँ चारों तरफ सिर्फ धक्के हैं, काले डरावने बादलों जैसे। इन बादलोंके मण्डलने उसे चारों ओरसे छा लिया है। जब दुनियाकी यह बदसूरती वह नहीं देखना चाहता तो बाहरकी दुनियाकी यात्रा छोड़ अपने अन्दरकी दुनियामें यात्रा आरम्भ कर देता है। वह पाता है, वहाँ तो निरा खालीपन ही बिखरा पड़ा है जिसमें हवा तकका कहीं पता नहीं—दम घुटने लगता है उसका।

इतबारकी छुट्टीने उसे कुछ और उदास बना दिया था। आज सचमुच क्या उसे अनुराधाकी ज़रूरत है? उसने उपन्यासके हर पहलूपर आकर उसे सलाह दी है। क्या आज उसके उपन्यासके बिखरते हुए पन्नोंमें आकर कुछ न

करेगी ? पद्मकान्त सोचता है, जो महल ढह चुका है उसे फिर बनाना असम्भव है, फिर भी अनुराधाके लिये इस दुनियामें कुछ भी कठिन नहीं है। उसका विश्वास इतना दृढ़ हो उठा कि अन्तिम बार अगर कभी अनुराधा उपन्यासके बारेमें पूछेगी तो उसे वह उपन्यासका दुखान्त भी जरूर सुनाएगा।

पद्मकान्तने अपने कठिन परिश्रमद्वारा अर्जित पूँजीसे बनाये हुए उन जेवरोंको देखा। सचमुच पद्मकान्त सरीखे बेरोजगार आदमीके लिये कभी यह जेवर भी 'आकाश कुसुम' थे। आज उनके पीछे जो अथक परिश्रम है, उसका मूल्य राजाके नज़दीक चाहे कुछ भी न हो, पर पद्मकान्तके लिये यही मूल्य धनके आकड़ोंसे नहीं बल्कि उसकी कोमल भावनाओंसे सम्बंधित था। मामीको कितना सुख मिलेगा अगर वह आज तककी पूँजीसे खरीदे हुए इन जेवरोंको उन्हें दिखाये। पर अब सुखका कोई प्रयोजन नहीं है। पद्मकान्तके लिए इन जेवरोंको छिपा रखना भी समस्या थी और उन्हें मामीको दिखा देना भी। छिपा रखनेमें फिर वह उपन्यासमें उलझने लगता है और मामीको दिखा देनेमें उसे जिन्दगीकी अड़चनें और ठोस होती हुई दिखाई देती हैं। फिर वह क्यों न यह सब उसी-को सौंप दे जिसके नामपर उसने उन्हें दिनरात एक करके प्राप्त किया है।

पद्मकान्तके मनमें विचार उठते अधिक समय नहीं होता कि वह उनपर अमल करना शुरू कर देता है। उसने राजाके यहाँ तक हो आनेका निश्चय किया। इसमें उसे कोई हर्ज न मालूम हुआ। अनुराधा खड़ी यह देख रही थी कि पद्मकान्त इस क़दर उदास और खोया-खोया-सा कहीं जा रहा है। वह इतना वेमुध था कि राहमें खड़ी अनुराधाको भी न देख पाया। अनुराधाने चाहा कि उसे बुलाये, पर वह हाथ उठाकर भी बुला न सकी। पद्मकान्तको जैसे कुछ याद हो आया हो, वह वापस लौटने लगा। अब भी वह पहलेहीकी तरह खोया खोया और उदास था। अनुराधाने धीरेसे पुकारा—“पदम !” पद्मकान्त रुक गया। अनुराधा गंभीर खड़ी थी। पद्मकान्तने पूछा—“क्यों अनुराधा, कैसी हो ?” अनुराधा अब हँसे नहीं तो क्या करे ? ऐसा प्रश्न तो पहले कभी पद्मकान्तने अनुराधासे किया नहीं। फिर ऐसा प्रश्न या तो वह व्यक्ति कर सकता है जो अन्तरंग नहीं सिर्फ़ व्यावहारिक रूपसे परिचित है या फिर वह अन्तरंग जिसके पास कहनेकी कोई

बात न हो। अनुराधाने पूछा—“तुम्हें कैसी लग रही हूँ पदम ?” पद्मकान्तने इस प्रश्नका उत्तर सोचा नहीं था, इसलिये बोला—“अच्छी ही लग रही हो।” अनुराधाने पूछा—“तुम्हें पूरा विश्वास तो है कि मैं भली चंगी हूँ ?” पद्मकान्तने धीरेसे ‘हाँ’ कह दी। अनुराधाने पद्मकान्तसे पूछा—“पर तुम्हें आज क्या हुआ है ? ऐसे उदास रहते तो तुम्हें पहले कभी नहीं देखा ?” पद्मकान्तने गौरसे देखा तो पाया कि रास्ता जनशून्य नहीं है, बोला—“चलो, कुछ देर अन्दर बैठकर बातें करूँगा।”

शिवालयका प्रांगण आज भी उतना ही साफ़ था जितना कि हमेशा रहा करता है, किन्तु पद्मकान्तने अपने प्रश्नकी भूमिकाके लिये इस सफ़ाईके प्रश्नको कर लेना ज्यादा अच्छा समझा। उसने अनुराधासे पूछा—“बहुत सफ़ाई रखती हो अनु ?” अनुराधाने पद्मको भी थोड़ा-सा अपनी तरफ़ बाँट लेते हुए कहा—“हाँ, अब तुम जो रोज़ रोज़ आकर कूड़ा नहीं फैला जाते !” पद्मकान्तसे अनुराधा शिकायत कर रही हो, सो बात नहीं है। वह तो सीधी-सी बात कह रही थी, अगर पद्मकान्त इसे ग़लत समझ ले तो इसमें अनुराधाका क्या दोष है ? पद्मकान्तने तनिक शर्मिंदा होते हुए कहा, “हाँ अनु, दूकानका काम ही ऐसा होता है कि जब दुनिया थोड़ी देर मन बहलानेमें लगी होती है तभी दूकानदारीका वक़्त होता है।” अनुराधा समझती है कि पद्मकान्तकी इस उदासीके पीछे क्या है। अनुराधाने पूछा—“और उपन्यास क्या बिलकुल नहीं लिख रहे ?” पद्मकान्तने फीकी हँसी हँसते हुए कहा—“अब वहाँ लिखनेको रह क्या गया है ?” अनुराधा वस्तुस्थितिको अब समझी। कहने लगी, “तो भी कुछ तो ज़रूर रह गया होगा। अगर सुना सको तो सुना दो। तुम्हारे पास आज समय तो काफी है न ?” पद्मकान्त तो जैसे सुनानेको आकुल ही था, बोला—“जो तुम कह रही हो तो सुनाये देता हूँ, किन्तु उसका अन्त सुखकी ओर तो जाता दिखाई देता नहीं।”

अनुराधाने उपन्यास सुनते सुनते पूछा—“तुम्हारे नायकसे कभी नायिकाके चरके किसी व्यक्तिने साफ़ साफ़ यह न कहा कि यह जो शादीकी बातचीत चल रही है, यह किसी और ही लड़कीके विषयमें है ?” पद्मकान्तको चुप हो जाते देख अनुराधाने दूसरा प्रश्न किया—“क्या यह बतानेमें तुम्हें नायककी

ओरसे कोई आपत्ति है ? ” पद्मकान्तने अपने उपन्यासकी कमज़ोरीको छिपा-
नेकी चेष्टा करते हुए कहा—“कुछ याद नहीं आता नायकको । ”
अनुराधा मुस्कराई । “यह आदत तुम्हारी बुरी है पदम, कि उपन्यासके
बहुतसे अंश बिना लिखे ही सुना डालते हो । यह परिच्छेद तुमने सोचा भले ही
हो, लिखा बिल्कुल नहीं है । ” पद्मकान्तने उदासीके स्वरमें कहा, “हाँ अनु,
लिखनेको तो अब कुछ शेष है भी नहीं । ” नायिकाकी शादी हुई जा रही
है, अब और है क्या ? ” अनुराधाने चाहा, वह पद्मकान्तको इस उदासीसे
उबार ले । बोली—“उदास मत होओ । तुम्हारे उपन्यासके नायकका जीवन
स्वयं तुम्हारे हाथोंमें है, जिसको लिख देनेमें ज्यादा स्याही खर्च न होगी । ”
पद्मकान्त चुप ही रहा । अनुराधा कहती रही—“और नायकको एकदम
नायिकासे पूछनेकी आदत नहीं । ” पद्मकान्त जैसे तिलमिला उठा—
“क्या ? ” अनुराधाने पद्मकान्तको शान्त करनेकी गरज़से कहा—“तुम्हारे
भोले नायकने एक भी दिन यह जाननेकी चेष्टा न की कि आखिर नायिकाके
जीवनमें उसका कोई स्थान बन पाया है कि नहीं ? जो निकटताको ही
गंभीरतामें देखता रहा, इसे नायककी भूल न कहा जाय तो और क्या ? ”
पद्मकान्तने व्यथित होकर कहा—“पूछनेकी बातें सभी नहीं हुआ करतीं ।
कुछ बातोंको व्यवहारसे समझ भी तो लेना होता है । मगर अनु, इसमें नायकका
क्या दोष ? यदि नायकके तात्कालिक पेशेको नायिकाके घरवाले इज्जतकी
दृष्टिसे देखते, तो क्या शादी हो जाना असम्भव था ? पता नहीं, कब
दुनिया हर पेशेको इज्जतकी नज़रसे देखेगी ! ” अनुराधाने पूछा, “तुम्हारा
मतलब किम पेशेसे है ? ” पद्मकान्तने जैसे टूटते हुए कहा—“नायक एक
अभागा दर्ज़ी है न ? ” अनुराधाने कहा—“तभी तो हमारा समाज टूटता
जा रहा है । इसे बाँधना होगा । लेकिन पदम, जहाँ तक मैं समझती हूँ
जब किसीके जीवनमें किसीके लिये स्थान हो जाता है, तब पेशा-जाति, रूप-रंग
ग़रीबी-अमीरीकी रुकावट कोई अर्थ नहीं रखती । अवश्य नायकने नायिकाको
समझनेमें भूल की है । अब भी समय है, तुम उसे सुधार दो । ” पद्मकान्तने
पूछा, “अनु, क्या तुम भी छोटे पेशेवाले लोगोंसे नफ़रत करती हो ? ”
अनुराधा बोली—“नफ़रतके लिये तुम्हारी नायिकाका हृदय तो मेरे पास
है नहीं, हाँ, कुछ देरकी भी अगर वह मेरा हृदय उधार लेकर नायकको

देखती, तो न जाने तुम्हारा उपन्यास कबका खत्म हो गया होता। और सच पदम, नायिकाका कतई नायकको न चाहना ही तो उसका अधूरापन है। चेष्टा करो, अगर इसे पूरा कर सको।”

पद्मकान्त फिर एक बार साहस बटोरकर राजोके यहाँ जा पहुँचा। राजोकी माने भी हिम्मत हार देना नहीं सीखा। पद्मकान्तको उन्होंने राजी करना चाहा, बोलीं—“अच्छी खासी लड़की है पदम बाबू। ऐसी गुणवती बहू ज़रा कम ही मिलेगी। फिर पदम बाबू, दहेजकी रकम बढ़ भी सकती है।” पद्मकान्त सोचता रहा, मनुष्यका जीवन क्या धनके अतिरिक्त दूसरी तराजूसे नहीं तोला जा सकता? राजोकी माँ समझीं, पद्मकान्त अब अवश्य स्वीकृति दे देगा। बोलीं—“राजोसे पूछ देखो कि वह कैसी लड़की है। अगर तुम राजी हो जाओ, तो राजोके ही मड़वेके नीचे पद्मा और तुम्हारी भी भाँवरें पड़ जायँ।” पद्मकान्तको सोचते देर न लगी कि एक ही मड़वा होने पर भी राजो उसकी न हो सकेगी।

राजोसे पद्मकान्तने पूछा—“तुम मुझे क्या सचमुच पद्माके योग्य समझती हो?” राजोने इस प्रश्नको समझ कर कहा—“हाँ, पद्मा और तुम्हारी सचमुच अच्छी जोड़ी रहेगी।” राजोके इस जवाबपर पद्मकान्तका उपन्यासकार जैसे काँप उठा। फिर साहसकर पद्मकान्तने पूछा—“क्या तुम जैसी ही गुणवन्ती लड़की मेरा जोड़ा नहीं हो सकती?” राजो इस प्रसंगको बन्द कर देना चाहती थी, बोली—“शादी-ब्याहके मुआमलेमें आजकलकी पढ़ी लिखी लड़कियाँ काफी सोच-विचार पहले ही कर लेती हैं। यूँ हर लड़कीकी पसन्द या सोचनेका ढंग कुछ निराला भी हो सकता है।” पद्मकान्तको सचमुच अब कुछ सोचनेको बाकी न था। प्रश्नका उत्तर तो उसे मिल ही चुका था, पद्मकान्तने गहरी उदासीमें डूबते हुए कहा—“अच्छा राजो, तुम्हारी शादीके अवसरपर, अगर मैं तुम्हें कुछ भेंट देना चाहूँ तो तुम स्वीकार तो करोगी न?” राजोने लापरवाहीसे कहा—“भेंट देनेवालेको कभी रोका तो जा नहीं सकता।”

राजोकी शादीके दिन ज्यों ज्यों करीब आते जा रहे थे त्यों त्यों पद्मकान्त जैसे शिथिल होता जा रहा था। अक्सर दूकान जल्दी बन्द कर देता और राजोके यहाँ होनेवाली तैयारियोंमें हाथ बैठाता। इस बीच उसे अनुराधासे

भी मिलनेका अवसर न मिला। पञ्चकान्तके मना कर देने पर भी कि वह पञ्चाके लिये तैयार नहीं हो सकता मामी और राजोकी माके बीचके सम्बन्ध ज्योंके त्यों ही बने रहे। इस बार भी मामीको लम्बा निमन्त्रण आया था और मामीने उसे हमेशाकी तरह स्वीकार कर लिया था।

शादीवाले रोज पञ्चकान्तने सुबह जो काम किया वह था अपने उपन्यासको बाँधकर पुरानी किताबोंके सन्दूकमें पटक देना। इतना कर लेनेके बाद भी उसकी उदासी दूर न हुई, अनुराधासे मिलनेकी इच्छा होते हुए भी वह मिल न सका। अनुराधाके आगे उसके सारे झूठ खुल जाते हैं। वह अपनेको अपराधीकी तरह अनुराधासे बचाना चाहता था।

श्रीराम इन दिनों पञ्चकान्तके यहाँ ही ठहरा हुआ था। टैण्ट फैक्टरीके मालिकोंने श्रीरामके द्वारा पञ्चकान्तको हड़ताल तोड़नेपर राजी करना चाहा। श्रीराम जानता था कि पञ्चकान्तकी मानसिक स्थिति आजकल सन्तोषजनक नहीं है। वर्ग-भेदको लेकर, उसके पेशेकी ओट लेकर, उसे अपमानित किया गया है। वह धनी होनेके स्वप्न देखा करता है। इस वक्त अगर उसे ठीक रास्ता न बताया गया, तो वह चाँदीकी चमक देख कर हज़ारों मजदूरोंके पेटोंपर लात मार देगा। श्रीरामने पञ्चकान्तसे पूछा—“पदम, दो रास्ते हैं। एक तो यह कि तुम सब दर्जियोंका साथ दो और कम्पनीको या पैटी कन्ट्रैक्टरोंको अधिक देनेपर मजबूर कर दो। दूसरा रास्ता है अपने स्वार्थका, जिसमें तुम कम्पनीसे मोटी रकम लेकर हड़ताल तोड़ सकते हो और कम्पनीका पूरा ठेका तुम्हारे नाम हो सकता है। तुम धनी हो सकते हो। तुम धनी-वर्गमें कुछ दिन बाद गिने भी जा सकोगे।” पञ्चकान्त क्या उत्तर दे, समझ न पाया, फिर भी बोला—“अगर धनी हो जाऊँगा, तो मैं सैकड़ों मजदूरोंकी सहायता कर सकूँगा।” श्रीराम इसपर हँसने लगा, बोला—“पदम, फिर तुन्हें मजदूरोंसे घृणा हो उठेगी। तुम्हारी दाढ़में उनका खून लग जायेगा। तुन्हें उनका शोषण करनेमें हिचक न होगी।” पञ्च बोला, “नहीं भैया, ऐसा क्यों होगा?” श्रीराम बोला—“मुझे एक छोटा-सा दृष्टान्त याद आ रहा है। तुम तो उपन्यास लिखा करते हो, तुम्हें वह मौलिक तो क्या लगेगा, कहो तो सुना दूँ।” पञ्चकान्तने झेंपते हुए कहा—“कहो न भैया!” श्रीराम बोला—“किसी घरमें बहुतसे चूहे रहते थे। वहाँ बिल्लियोंने बहुत उपद्रव

मचा रखा था। वह दिन-दहाड़े दो चार चूहे पकड़ ले जातीं। चूहोंकी बस्तीमें रोज़ ही रोना पीटना मचा रहता। कभी किसीका भाई मारा जाता, कभी किसीका बाप, तो कभी किसीकी मा या और कोई सम्बन्धी। आखिर कुछ चतुर चूहोंने इन बिल्लियोंसे लड़नेका निश्चय किया और एक विराट् सभा की। उसमें यह निश्चय हुआ कि कुछ नौजवान चूहोंको सारी चूहोंकी विरादरी प्रति दिन थोड़ा थोड़ा खून पिलाया करे। इस तरह जब वह चूहे बिल्लियोंके बराबर हो जायें तो बिल्लियोंसे लड़ें। यह राय सभीको पसन्द आई और कुछ चूहे इस कार्यके लिए चुन लिये गये। आखिर बहुत दिन बाद जब वह खून पीकर पलनेवाले चूहे काफी मोटे हो गये—इतने मोटे कि बिल्लियोंसे भी बड़े, तो विरादरीके कुछ चूहे उनके पास बिल्लियोंके खिलाफ़ युद्ध करनेको कहने गये। तब वह बोले “हमारा पेट बहुत बड़ा हो गया है, हमें दूना खून चाहिए।” इसपर विरादरीवाले चूहे बोले—“हम हमेशा तो खून नहीं दे सकते, क्योंकि अब हम लोग खून पिलाते पिलाते काफी कमज़ोर हो गये हैं। आप कहें तो हम अधिक भोजनका प्रबन्ध करें, पर आप युद्ध शुरू कीजिये ताकि हम सुख और शान्तिसे जीवन बितायें।” वह बिल्लियोंसे भी बड़े चूहे बोले, “पर अब हमारी दाढ़में तो खून लग चुका, हमें और कुछ अच्छा नहीं लगता। हमें रोज़ बहुतसे चूहे खानेको चाहिये।” इसपर गिड़गिड़ाकर विरादरीके चूहे बोले—“पर आप भी तो चूहे हैं। क्या आप चूहे होकर चूहोंको खायेंगे?” मोटे चूहे कहकहा लगाकर हँस पड़े, बोले—“चूहों और बिल्लियोंमें कोई फ़र्क नहीं, सिर्फ़ मोटाई और छोटाईका फ़र्क है। अतएव हम लोग अब चूहे नहीं बिल्लियाँ हैं और हमें चूहे कहना अपमानजनक है।” इतना कहकर उन मोटे चूहोंने विरादरीके छोटे चूहोंको खाना शुरू कर दिया।

पद्मकान्त जैसे अन्दर ही अन्दर कटकर रह गया। उसने श्रीरामसे कहा—“जो तुम कहोगे वही करूँगा, सच भइया।” श्रीरामने कहा, “अच्छा पदम, मैं कल वापस चला जाऊँगा।”

श्रीरामके जानेके बाद जैसे स्वयं पद्मकान्त ही श्रीराम हो उठा। कम्पनीके सेठोंका आदमी कई बार आया, पर पद्मकान्त न गया। जब स्वयं एक

पार्टनरकी कार आकर उसके दरवाजेपर रुकी तब पद्मकान्तने जाना, श्रीराम सच कहता था। उस पार्टनरने बहुतेरे सब्ज बाग दिखाये किन्तु पद्मकान्त अटल रहा। पार्टनरने अन्तिम अवसर कैसा। वह बोला, “ हम लश्करसे दर्जी बुला लेंगे। ” पद्मकान्तने कोई प्रतिवाद नहीं किया।

धीरे धीरे पद्मकान्तके हठकी खबर सारे शहरमें फैल गई। कुछ अपनेको समझदार कहनेवाले लोगोंने उसे मूर्ख कहा। दर्जियोंने उसे अपना सच्चा हितचिन्तक समझा और कुछ लोगोंकी समझमें यह झगड़ा कतई आया ही नहीं। सभीको यह मान लेना पड़ा कि पद्मकान्त दर्जी भले ही हो, पर शहर-भरके मजदूर तक़वेमें उसकी इतनी चलती है जितनी कि शहर-कोतवाल तककी नहीं चलती। राजोके यहाँ भी उड़ते उड़ते यह खबर पहुँच गई। पर अनुग्राधाने सब कुछ सुननेके बाद यही सोचा कि पद्मकान्त अब जिम्मेदार आदमी होता जा रहा है। कच्चे कुएकी कगारोंकी तरह अब वह फुमफुसा नहीं रहा। अनुग्राधा मन ही मन प्रसन्न भी हुई। पद्मकान्तको इतने लम्बे अर्से तक न आता देख अनुग्राधाने अनुमान लगाया कि अब वह आयेगा तो एक बहुत बड़ी उलझन लेकर आयेगा जिसे सुलझाना उसके वशकी बात न होगी। उसे आशंका भी हुई कि कहीं पद्मकान्तकी एकान्त उलझन उसे भी न उलझा दे। वह अवसरकी प्रतीक्षा करती रही।

बारह बजे रातको फेरोंका सुहूर्त था। पद्मकान्त फेरोंसे कुछ पहले ही राजोके कमरेकी तरफ गया तो उसने पाया कि वह फेरोंके लिये पूरी तरह तैयार है और सुन्दर बावूकी पत्नी, उसके पास बैठी हैं। पद्मकान्तका चेहरा देखकर मन ही मन उन्होंने निश्चय किया कि अगर कुछ देर वह पद्मकान्तको राजोसे बात करनेका मौका दे सके तो अपने देवरके साथ कुछ उपकार ही कर सकती हैं। फिर उन्हें पद्मकान्तके चेहरेपर भी भयानक निराशा—टूटता हुआ साहस देखकर स्वयं सिहरन-सी हो उठी।

पद्मकान्तने एटेवालीको देखा तो जैसे लौट जानेकी जल्दीमें हो इस लहजे-में बोला “—भाभी, मेरी ओरसे यह भेंट राजलक्ष्मीको...” उसका वाक्य पूरा न हो पाया था कि एटेवाली बाहर जाती हुई बोली,—“ तुम्हारे कामके लिये मैं नियुक्त नहीं हूँ लल्लाजी, देवरानीजी आयें तो उनसे कराया करना। तुम खुद ही दे दो और कमरा छोड़कर जाना नहीं। राजो या जो आज

तुम्हारे लिये राजलक्ष्मी दन गई है अकेली है, समझे । ” वह चली गई ।
हाँ, सचमुच वह कुछ देरके लिये पद्मको एकान्त दे गई ।

लाजसे सिमटी राजो पद्मकान्तके सामने आ खड़ी हुई । वह घूँघटको किंचित् उठाकर बोली—“मैं तुम्हारे लिये राजलक्ष्मी कबसे हुई ? ” पद्मकान्तने राजोको इस तरह सामने पाया तो जैसे घबरा गया, बोला, “बहुत-सी भूलें मुझसे हुई हैं; उन सबके साथ इस भूलको भी मुसराल जानेसे पहले माफ़ करती जाना । ” पद्मकान्तने जेवरोंका वह डिब्बा जिसे उसने दिन-रात मेहनत करके जेवरोंसे भरा था, धीरेसे राजोके हाथमें दे दिया । पद्मकान्तको ऐसा महसूस हो रहा था कि उस डब्बेमें बहुत-से ज़हरीले साँप फुफ़कार रहे हैं । अगर राजो उसे हाथमें न ले लेती तो शायद जेवरोंका डिब्बा ज़रूर हाथसे गिर जाता । पद्मकान्तने एक बार दृष्टि उठाकर राजोको देखा, तो उसे लगा कि अधिक देर वह राजोकी ओर नहीं देख सकता । पद्म मुड़कर कमरेसे बाहर जाना ही चाहता था कि राजो लजाती हुई बोली, “पदमबाबू, आशीर्वाद देना क्या भूल गये ? ” पद्मकान्तने खिड़कीमेंसे आँगनमें सजे विवाह-मण्डपकी ओर देखते हुए कहा,—“मुँहसे कहनेसे तो आशीर्वादका महत्त्व घट जाता है राजो । ” राजो कुछ और करीब आ गई । बोली, “आप उदास हैं । क्या जी अच्छा नहीं ? ” पद्मकान्तके उपन्यासका भूत धीरेसे उसके ज़हनमें फिर आ बैठा । पद्मकान्त बोला—“अक्सर बहुतसे रोग ऐसे असाध्य होते हैं जिनका जान-बूझकर भी इलाज नहीं कराया जा सकता बल्कि इलाज करनेकी स्थिति अपने नहीं पराये वशकी बात होती है । ”

राजोने सहानुभूतिके भावसे कहा—“किन्तु यह भावुकता तो तुम्हारी बीमारीको और भी बढ़ा देगी । ” पद्मकान्त चुप रहना चाहता था । वह धरतीपर बिछे कीमती काश्मीरी कालीनके गुल-बूयोंको देखता रहा, फिर जैसे वह जाग उठा । पद्मकान्तके कुछ उत्तर देनेके पहले ही राजो बोली—“उत्तर दिया नहीं ? ” पद्मकान्तने तरल स्वरमें कहा—“अगर दे सकता तो आशीर्वादके साथ भावुकता भी भेंट कर देता । किन्तु मैं जानता हूँ भावुकता अच्छी चीज़ नहीं है । अब तुम्ही बताओ, बुरी चीज़ भी भेंट दी जाती है ? भावुकता तो मेरी सगी बनकर जीवन-भर साथ रहेगी । अगर तबीयत खराब ही होगी तो क्या लेगी ? मैंने तुम्हारे काम आने योग्य चीज़ दी है । ” पद्म-

कान्तने बिना राजोकी ओर देखे उसकी तरफ हाथ जोड़ दिये। बोला, “अब इस तुच्छ भेंटको ठुकराना मत, यह निवेदन है।” राजोने भी शायद जीवनमें पहली बार पद्मकान्तको हाथ जोड़े। और सो भी विवाहकी वेलमें जब कि राजोके हाथ पीले होनेवाले थे, उसके अपने हाथ किसी औरके हो जानेको थे। पद्मकान्त लौटा तो एटेवाली कमरेमें आ चुकी थीं।

राजोका विवाह हो गया। पद्मकान्त पूरी तीन रात सो न सका था। वह थका हुआ था, उदास था। सबेरे वह अनमना-सा शिवालयमें गया तो अनुराधा गायको बाहर तक हाँक देने गई थी। वह बैठा सोचता रहा। ज़ेवर राजोके हवाले कर देनेसे जैसे उसके दिल परसे एक भारी-सा पत्थर हट गया था। इसी वक्त राजोकी विदा हो रही थी। जब डोली शिवालयके सामनेसे निकली, तो उसे महसूस हुआ जैसे उसके अन्दरका एक पुराना फोड़ा दुख रहा है। पद्मकान्त जाती हुई डोली, डोलीके कहार, घराती बराती और उनके पीछे बखेरके पैसे लड़ते झगड़ते लूटते हुए गरीब बच्चोंको देखता रहा। अनुराधाका आना उसे मालूम न हुआ। अनुराधाने पद्मकान्तके कन्वे पर स्नेहसे हाथ धरकर कहा—“क्यों परेशान हो रहे हो?” पद्मकान्त एकदम चुप था। अनुराधाने पूछा “इस तरह सबेरे तो तुम कभी इधर आते नहीं। आज तुम्हें हुआ क्या है?”

अनुराधाके प्रश्नका उत्तर देना ज़रूरी है, इसीलिए पद्मकान्त आखिर किसी तरह अपने भावोंको बलपूर्वक दबाकर बोला, “मेरी तबीयत ठीक नहीं है अनु, अगर आज तुम यह प्रश्न न पूछो, तो कोई हर्ज है?” अनुराधाने उसकी उदासीका अन्दाज़ लगाकर कहा, “सरमें दर्द हो रहा है न? मैं तुम्हारा सर दबा दूँ। आराम हो जायगा।” पद्मकान्त बोला—“नहीं, सर मत दबाओ। मैं अच्छा हूँ। हाँ अनु, मेरे उपन्यासका दुखान्त सुनोगी?” अनुराधा बोली, “ऐसे नहीं।” उसने पद्मकान्तका सर अपनी गोदमे धर, दबाते हुए कहा, “सुनाओ।” पद्मकान्त इस व्यवहारपर चाहकर भी आपत्ति न कर सका। पद्मकान्तको चुप देख अनुराधाने इधर उधरकी बातोंमें उसे भुलाना चाहा—“इच्छा नहीं है तो न सुनाओ। हाँ, हड़तालका क्या हुआ?” पद्मकान्तने प्रश्नभरी दृष्टिसे अनुराधाका चेहरा देखा और कहा, “तुम्हारे मत-लबकी उसमें कोई बात नहीं। मालिकोंने दर्जियोंकी बात मान ली। हाँ, तुम उपन्यास सुनना चाहती थीं। अनु, काश मेरे उपन्यासकी नायिका केवल एक

ही बार नायकसे कह देती कि उसने कभी पागलपनसे ही सही केवल एक क्षणके लिये नायकको अवश्य चाहा है, तो मेरा उपन्यास अधूरा न रहता। वह पूरा हो जाता। अब आजसे हम उस उपन्यासकी बात न करेंगे।” बड़े कष्टसे पद्मकान्तने लम्बी साँस ली। अनुराधा हँस पड़ी। पद्मकान्तने पाया कि इस तरह वेमौके वह हँसी है तो ज़रूर कुछ निदान बतलाएगी। बोली,—“पागल हो! तुम्हारे नायकने नायिकाको पहचाना ही कहाँ? और फिर नायकको तुम्हारी बनाई हुई नायिकाने न चाहा तो क्या हुआ, उसे कोई तो चाहता ही होगा?” पद्मकान्तने जैसे टूटते हुए कहा—“पता नहीं, शायद कोई चाहता हो।” अनुराधाने पद्मकान्तके बालोंमें उँगलियाँ देकर कहा, “अच्छा पदम, अब क्या लिखोगे?” पद्मकान्त कहने लगा “अब उपन्यास कभी नहीं लिखूँगा। अब तो बस ज़िन्दगी है।” अनुराधा मुस्कुराई, बोली “ज़िन्दगी ही लिख डालो। कुछ तो लिखते ही रहना चाहिये।” पद्मकान्तने जैसे भयभीत होकर कहा, “नहीं अनु, कहीं ज़िन्दगी भी अधूरी रह गई तो क्या करूँगा?” अनुराधा बोली, “मुझे क्या नहीं पूछ सकोगे?” पद्मकान्तने प्रश्न किया—“क्या तुम सदा मुझे ज़िन्दगीमें आनेवाली उलझनोंसे भी मुलझा दिया करोगी?” अनुराधा हँसने लगी, “तभी तो मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही हूँ...आजके दिन तक।” पद्मकान्तने अनुराधाकी ओर देखा और कहा—“पर अनु, क्या देकर तुम्हारे अहसानोंके बोझसे मुक्त हो सकूँगा? आज तक तुमसे लिया ही लिया है, दिया तो कुछ है नहीं।” अनुराधाने दबे हुए स्वरमें कहा—“मुझे जो चाहिए था मिल गया। तुम्हें चिन्ता करनेकी ज़रूरत नहीं है।” अनुराधाने पद्मकान्तका सर अपनी गोदमें जैसे छिपा लेना चाहा। पद्मकान्तको महसूस हुआ कि उसका पुराना दुखदायी फोड़ा फूट गया है और उसे नींद आ रही है। उसे अपना उपन्यास जैसे अब याद ही नहीं। अनुराधाने गहरे दुलारसे पूछा—“मुझे भी दर्जीका काम सिखा दोगे? मदद कर दिया करूँगी।” पद्मकान्तने सम्मितसूचक सर हिलाया। उसे नींद आ रही थी। वह अनुराधाकी गोदमें सो गया।

